मेरी भावना

श्री त्रिसला के नन्द को हरदम हृदय में ध्यान हो ।
म न से वचन से काय से उन्हीं का नित गुण गान हो ॥
हा जिर सेवा में खड़े उनके चरण में स्थान हो ।
वी स्य वासना दूर हो दया धर्म का हमें ज्ञान हो ॥
र हे अटल हम सत्य पे निज धर्म पर विश्वास हो ।
स व जाति को उन्नत करें कर्त्तव्य अपना खास हो ॥
वा र दे तन मन और धन जो कुछ हमारे पास हो ।
मी ल कर करें विरोध हम कुरीतियों का नाश हो ॥
की र्ती हो संसार में, हर काम में विजय हो ।
ज ग को जगावे फिर से हम यही हमारा ध्येय हो ॥
य ही भावना पूर्ण करो प्रभू आप मंगल मय हो ।
हो एक सब बोलो 'जीत' श्री महावीर स्वामी की जय हो ॥
मम बुद्धि के अनुसार, लिखी ए पुस्तक चतुर सुजान ।
भूल चूक माफी करो, हूं बालक नादान ॥

समाप्त

तिसरी बार १५०० } २००३ { मूल्य -)॥ डेढ़ आना

॥ श्री विनरागायनमः ॥

मगलं भगवान वीरो, मगलं गोतम प्रभू,
मंगलं स्थुलि भदाद्या, जैन धमोस्तु मंगलम् ।

पंच परमेष्टी

(तर्ज—सावन के नज़ारे हैं)

प्राणी पंच परमेष्टी को नमो, नमो, ॥ टेर ॥

दुःख मेटन हारे "पदपांचो" दुख मेटन हारे ।
नित उठ बन्दो उनको ॥ प्राणी ॥

पहले अरिहंत देवा, करो चरण कमल सेवा 'नित उठ के'
करो चरण कमल सेवा, धरो ध्यान सदा इनको ॥प्राणी॥

सिद्ध प्रभो स्वामी दूजे, देवी देव जिन्हें पुजे 'नित उठके ,
देवी देव जिन्हे पुजे, ध्यावे ऋषी मुनि जिनको ॥ प्राणी ॥

कर धर्म का विस्तारा, आचारज पद धारा, 'नितवंदो'
आचारज पद धारा, दिया धर्म ज्ञान जग को ॥ प्राणी ॥

उपाध्याय चौथे नामी, जिन धर्म दिपा स्वामी, 'नित वंदो'
जिन धर्म दिपा स्वामी, कियो उद्धार आतम को ॥प्राणी॥
दया धर्म ज्ञान देते, जग तारे खुद तिरते 'नित वंदो'
जग तारे खुद तिरते, वंदो सव्व साधु को ॥प्राणी॥
नित ध्यान 'जीत' ध्याता, चरणों में बलि जात्ता 'नित उठके'
चरणों में बलि जाता, दुःख मेटो प्रभू भव को ॥प्राणी॥
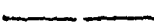
"महावीर"

तर्ज—जिन्दगी है प्यार की प्यार से बितायेजा।

महावीर, महावीर, महावीर ध्याएजा,
प्रात उठ के शीस चरणों वीर के झुकाएजा ॥ टेर ॥
भारत सितारे के, सिद्धारथ प्यारे के,
त्रिशला उजियारे के, नित गुण गाएजा ॥ महा० ॥
राज के सुख को छोड़, दुनिया से मुख मोड़,
तप से कर्मों को तोड़, सद गति पाए जा ॥ महा० ॥
जंगल दरम्यान में, आप थे ध्यान में,
ग्वाला अज्ञान, कानों कीले भी ठुकाएजा ॥ महा० ॥
सती का करके सत्कार बाकलों का किया आहार,
चन्दन बाला नार, उसकी लाज को बचाए जा ॥ महा ॥
अहिंसा पुजारी जान, जग का किया कल्यान,
अर्जुन माली को दे ज्ञान, भव बंध छुड़ाएजा ॥ महा० ॥

जागो ऐ जैन वीर, बनना सीखो महावीर,

भारत की हरो पीर, धर्म को दिपाएजा ॥ महा० ॥

संसार असार हैं, झूंठा जग का प्यार है,

यही खेवन हार, लगन इसी से लगाएजा ॥ महा० ॥

'जीतमल' तेरा दास करता नित यही अरदास,

करो प्रभु हृदय वास, बुद्धि को बढ़ाएजा ॥ महा० ॥

"उपदेशी"

(तर्ज—रसिया)

सांचो वीर प्रभू को नाम, और काम न आवलो ॥ टेर ॥

मात पिता और कुटुम्ब कबिलो, संग नहीं जावलो,

मुट्टी बांध आयो नर, खाली हाथा जावलो ॥ सांचो ॥

आया जहां से आया नग्न, और नग्न ही जावलो,

धन दौलत रह जाय, मिट्टी में तू मिल जावलो ॥ सांचो ॥

प्राण पखेरू उड़या पछे कोई पाल न आवलो,

सब ही धरया रह पाप पुन्य संग में जावलो ॥ सांचो ॥

कर्म किया जैसा मानव वंन फल पावेलो,

अच्छा करसी पार उतर सी वरना पछतावलो ॥ सांचो ॥

कर शुद्ध मन से वीर प्रभू को ध्यान जो ध्यावलो,

जनम मरन मिट जाय "जीतमल" मुक्ति पावलो ॥ सांचो ॥

(तर्ज—मत बांधो गठरियां अपयस की)

ज्ञानी चेतो जवानी है दिन दस की ॥ टेर ॥

किस माया में तू भरमाया,
है ए माया नहीं तेरे बसकी ॥ ज्ञानी ॥

चार दिनों का मेला खेला,
करले कमाई जग में यश की ॥ ज्ञानी ॥

भूलेगा तो तू भूगतेगा,
खबर लेय प्रभू नस नस की ॥ ज्ञानी ॥

फूट को जड़ से दूर हटा कर,
प्याली पीवो रे सब प्रेम रसकी ॥ज्ञानी॥

जो सुख चाहे प्राणी प्रभू को भजले,
'जीत' लगाले लगन उसकी ॥ ज्ञानी ॥

(तर्ज—कव्वाली)

चार दिन की चांदनी, आखिर अँधेरी रात है,
अन्त भी हो जायगा दो चार दिन की बात है ॥टेर॥

जुल्म करना छोड़ जालिम, अन्त तू पछताएगा,
आयगी जब मौत तेरी, जाय नहीं कोई साथ है ॥चार॥

लोभ लालच में फंसा तू भूला प्रभू के नाम को,
भोग विलासों में किया जर खूब ही बरबाद है ॥चार॥

दया धर्म को भूल फंसा दुनियां के पापाचार में,
सग कुछ नहीं जायगा आखिर में खाली हाथ है ।चार।
छोड़ो आलस जैनियों, अब तो उठो बांधो कमर,
जुल्म दिन दिन बढ़ रहा कैसे तुम्हें बरदास्त है ।।चार।।
बुजदिली त्यागो, धर्म के युद्ध में डट कर लड़ो,
'जीतमल' अब तो दिखादो जग को दोदो हाथ हैं ।।चार।।

(तर्ज - धर्म पर डट जाना कोई बड़ी बात नहीं है)

धर्म पर डट जाना है वीरों का काम ।। टेर ।।

धर्म पर डट गए महावीर, ठोकी ग्वाला ने कानों में किर,
ध्यान में डटे रहना ।। है वीरों ।।
धर्म पर डट गए पारसनाथ, बचाया जिन्होंने जलता नाग,
मन्त्र से तिरा देना ।। है वीरों ।।
धर्म अब गौतमजी को भाया, जिन्होंने घर घर अलख जगाया,
जैन का पाठ पढ़ा देना ।। है वीरों ।।
धर्म पर डट गए सेठ सुदर्शन, सुली का हुकम दिया जब राजन,
सुली पर चढ जाना ।। है वीरों ।।
धर्म पर चन्दन बाला नार, घर घर बिक सहे कष्ट अपार,
शील को नहीं तजना ।। है वीरों ।।
धर्म पर जम्बू राज कंवार त्याग दी जिन्होंने आठों नार,
चोरों को चेले बना लेना ।। है वीरों ।।

धर्म पर डट गए हरिश्चन्द्र दानी, जिन्होंने कीना भेष मुसानी,
सत्य पर डटे रहना ॥ है वीरों ॥
धर्म के खातीर अब मुनीराज, जो चलते नंगे पेरों आज,
सुखे टुकड़े भी चबा लेना ॥ है वीरों ॥
जाग अब जाग ओ जैन समाज, सजाले "जीत" धर्म के साज,
वक्त पे शीस कटा देना ॥ है वीरों ॥

(तर्ज – दुनिया में सब जोड़े जोड़े)

दुनियां में सुख थोड़े थोड़े ॥ टेर ॥

किस से प्रीत तू जोड़े, हां हां रे प्राणी थोड़े थोड़े ॥ दुनिया ॥
बचपन तू ने खेल गमाया, आई जवानी मोह में छाया,
प्रीत प्रभू संग तोड़े ॥ हांहां रे ॥
भोग विलासों में चित्त को लगाया, धर्म काम जब कोई भी आया,
अटकाए तूने रोड़े ॥ हांहां रे ॥
आया बुढ़ापा रोग सताया, दुःख के समय अब प्रभू याद आया,
यम के दूत जब दौड़े ॥ हांहां रे ॥
'जीत' समझ जग झूंठा सपना, जो सुख चावो नित प्रभू को भजना,
भव भव के मिटें फोड़े ॥ हांहां रे ॥

(तर्ज—जो सुख पायो वीर भजन में)

जो सुख चावो ध्यान लगायो छोड़ो नर अभिमानी को,
श्रवण करो चित्त सुं नित प्यारे, वीर प्रभू की बानी को ॥ टेर ॥

झूंठ कपट छल छिद्र न त्यागो, छोड़ो विषेली वानी को,
ओछे की संगत तज प्यारे, करो संग कोई ज्ञानी को ॥ जो ॥
काया माया ढलती छाया क्या करे है गुमान जवानी को,
क्षण भर मे मिट जाय मिट ज्यों देख बुद बुदो पानी को ॥ जो ॥
कमती तोल कम नाप फाड़ थे किये काम मनमानी को,
अन्त समय अब तूँ चेत नर, छोड़ के इस बेइमानी को ॥ [illegible] ॥
पाकर के अनमोल चोलए, सुफल करो जिन्दगानी को,
धर्म का पाठ पढ़ाय लगावो, गले से बिछड़े प्राणों को ॥ जो ॥
गफलत छोड़ो निंद्रा तोड़ो, छोड़ो नर नादानी को,
'जीतमल' हुशियार रहो अब, आयो समय कुरबानी को ॥ [illegible]

(तर्ज—भूलने वाले भूल गये अब, याद, क्यों [illegible])

ए नोजवानो जाग उठो अब, भारत पे [illegible]
तन मन धन दो वार कर्म हित, वीरों की [illegible] । टेर ।

काम क्रोध मद लोभ ए सारे, हो रहे [illegible]
जिससे दशा हुई आज हमारी, [illegible]
कुरीतियों के जाल को तोड़ो, [illegible]
उनकी बला से चाहे कुछ हो, [illegible]

कर दिखाओ कुछ तो काम तुम जग में कर जावो अमर नाम तुम,
मानव तन को सुफल बनाओ, जग भी तुम्हारा सुयश गाए ।। ए ।
सत्य धर्म को तुम अपनाओ, अहिंसा की जग में ज्योत जगावो,
फूट हटा कर प्रेम बढ़ा कर, बिछुड़े हुए को फिर से मिलाए । ए ।।
सोते रहोगे कब तक प्यारे, जाग उठो भारत के सितारे,
"जीत" रखो नित लाज धर्म की चाहे वक्त पर जान भी जाए ए ।।

(तर्ज—खिदमते धर्म पर जो कि मर जांयेगे)

अपने धर्म के खातिर जो डट जांयगे,
वीर बन कर अमर नाम कर जांयगे ।। टेर ।।
चाहे कैसी भी विपताए आके पड़े,
धीरज धर के खुशी से जो सह जांयगे ।
मर मिटेंगे न छोड़ेंगे निज आन को,
वीर सदेश जग को सुना जांयगे ।
अहिंसा का घर घर में करके प्रचारा,
सुमार्ग धर्म का बता जांयगे ।
पाके मनुष्य जन्म अनमोल ए तन,
कुछ तो दुनिया में सुयश कमा जांयगे ।
"जीत" डट के रहोगे धर्म प यदि
विप के प्याले भी अमृत से हो जांयगे ।

(तर्ज—कव्वाली)

छोड़ नर अभिमान, आखिर संग क्या ले जायगा।
हंस के उड़ते ही ए नन, खाक में मिल जायगा॥
कर कोल भूला तू फंसा दुनिया के माया जाल में।
भूला प्रभू के नाम को पर अन्त में पछताएगा॥
धन दौलत और महल अटारं, जिसपे तुझको नाज है।
सब धरे रह जायंगे, नहीं संग कोई जायगा॥
हंस निकलते ही तेरा नामो निशा मिट जाएगा।
या तो दगे फूंक तूझे, या दफनाया तू जायेगा॥
परिवार सारा फूंक तूझे, वहीं छोड़ कर आ जायगा।
याद रख संग में तेरे एक पाप पुण्य हो जाएगा॥
शुभ कर्म करले आके कुछ तो 'ए जीत' इस संसार में।
सुयश कमाले जिससे जग में, नाम अमर हो जाएगा॥

(तर्ज—दुनिया रंग रंगीली बाबा दुनिया रंग रंगीली)

कर्मन की गति न्यारी प्राणी कर्मन की गति न्यार ॥ टेर ॥
इन कर्मों का खेल निराला क्या क्या रंग दिखाते हैं।
कोई राजा बन हुक्म चलावे, कोई शीश नवाते हैं॥
एक है अन्न धन्न का भंडारी, एक बना है भिखारी ॥प्राणी॥
किसी को सोहे महल अटारी जमीं किसी को प्यारी है।
कोई ओढ़े साल, किसी ने, नंगे रैन गुजारी है॥
कोई दान दे सुयश लेता, कोई बना व्यभिचारी ॥प्राणी॥

किसी के घर पर बज रहे बाजे, किसी के रोना जारी है।
कोई पीव की प्यारी नारी, कोई महा दुखियारी है॥
कोई अहिंसा का है पुजारी, कोई मांस अहारी ॥प्राणी॥
इन कर्मों ने हरिश्चन्द्र को, जग में दानी कहलाया।
इन कर्मों ने हरिश्चन्द्र को, चांडाल घर बिकवाया।
'जीत' लिखे जो लेख कर्म में, टरे कभी नहीं टारी ॥प्राणी॥

(तर्ज - घर घर में दिवाली है मेरे घर में अन्धेरा)

जागो ए जैन वीर हुआ अब तो सवेरा ॥ टेर ॥
कब तक इस प्रेम निंद में, सोते ही रहोगे।
आपस में बीज फूट के बोते ही रहोगे॥
अब तो उठो बांधो कमर, आ गैरों ने घेरा॥ जागो॥
चारों तरफ को देखो छाया अत्याचार है।
पापी को हो रही जीत जहां धर्मी की हार है॥
छल छिद्र हिंसा ने जमाया हिन्द में डेरा॥ जागो॥
जिस मां ने तुझे आज इतना बड़ा बनाया।
खाकर के जिसने घास तुझे दूध पिलाया॥
बतला तो ए निर्दयी बिगाड़ा उसने क्या तेरा॥ जागो॥
बिनमौत मारी जाती है, गऊमात जो प्यारे।
गरदन पर छुरियां चलाते पापी हत्यारे॥
अहिंसा का घर-घर में तुम फिर से करदो उजेरा॥ जागो॥
हमने तो महावीर की सुनी थी ए बानी।

आखीर है सत्य की 'जीत' रख विश्वास तू प्राणी ॥
सत्यधर्म का झंडा जगत में फिर से तू लहराए ॥जागो॥

(तर्ज—कृष्णा गोविन्द गोपाल गाते रहो)

जैनी धर्म से प्रीत लगाते रहो,
झंडा जैन का जग में लहराते रहो ॥ टेर ॥
उठो बांधो कमर अब तो आगे बढ़ो।
आके जग में कुछ करके दिखाते रहो ॥
नींद गफलत की त्यागो, धर्म पे डटो।
सोए हिन्द को फिर से जगाते रहो ॥
छोड़ो राग द्वेष करो प्रेम सभी।
बिछुड़े भाई को फिर से मिलाते रहो ॥
चाहे कष्ट पे कष्ट सतावे तुम्हें।
वीर बन के सहो आगे बढ़ते रहो ॥
झूंठी दुनिया की है मोह माया सभी।
"जीत" मोह धर्म से लगाते रहो ॥

(तर्ज—अगर जिन देव के चरणों में तेरा ध्यान हो जाता)

प्रभु की भक्ति में रहे लीन वही आबाद होता है ॥ टेर ॥
भूलता उसको जो प्राणी, वही बरबाद होता है।
जो रखता है जबां पे नाम हरदम एक ईश्वर का।
वही अष्ट कर्मों के जंजाल से, आजाद होता है ॥

जगत झूंठा सा सपना है, एकदिन सब को मरना है।
नहीं कोई साथ चलता है, क्यों मोह माया में फंसता है॥
जो गर शुद्ध मन से ध्यावेगा, प्रभु सब कष्ट मिटावेगा।
अन्त सुरपुर में जावेगा, जहां जय जय कार होता है॥
ध्यान प्रहलाद ने धारा, प्रभु ने आ के उद्धारा।
फिर हिरना कस्ब को मारा, किए जैसे भुगतता है॥
नहीं रहे वीर बाली बंका, न रही रावण की वह लंका।
'जीत' वही है अमर जग में, जो प्रभु का नाम रटता है॥

(तर्ज़—बालम धीरे बोल कोई सुन लेगा)

है जिन्दगी अनमोल, महावीर भजले॥ टेर॥
सिद्धार्थ राजा के प्यारे, त्रिमला के है नंदा।
प्रातः उठोने नित स्मरण कर मिट जावे भव फंदा॥
तू घट के पट खोल॥ है जिन्दगी॥
दुनिया है मतलब की सारी, नहीं साथ कोई चलना।
बनी के सब ही हैं सग साथी, बिगड़ी के कोई ना॥
प्रभु नाम तू बोल॥ है जिन्दगी॥
झूंठी है सब जग की माया, है जग झूंठा सपना।
क्षण भंगुर है देह एक दिन मिटी माही मिलना॥
ले ज्ञान तराजू तोल॥ है जिन्दगी॥
फंसा जो गर इस मोहमें प्यारे तो फिर कुछ नहीं होना।
बचपन खेल, जवानी मोह में बुढ़ापे में रोना॥

पाकर नर चोल । है जिन्दगी ॥

'जीतमल' हे दीन बन्धु मैं लिया तिहारा शरण ।
भवसागर बीच नाव पुरानी, प्रभु पार तुम करना ॥
मत कर जो थे पोल ॥ है जिन्दगी ॥

(तर्ज—सावन के नजारे हैं)

जैन धर्मी भाइयों, उठो, उठो ॥ टेर ॥

बीत गई अब रैन "जैनियो" बीत गई अब रैन
प्यारे भाइयों ॥ जैन ॥

तुम काम करो ऐसा, धर्म की उन्नति हो, "जैनियों"
धर्म की उन्नति हो, बन प्रेम पुजारी हो ॥ जैन ॥
तुम जाग उठो वीरो, जैन धर्म के झंडे को "जैनियों"
जैन धर्म के झडे को, दुनिया में लहरादो ॥ जैन ॥
निकालो फूट को तुम तन से, धर्म को चावो मन से "जैनियों"
धर्म को चावो मन से, करो रक्षा तन, मन, धन, से ॥जैन॥
भारत के प्रिय लालो, दो धर्म पे कुरबानी "जैनियों"
दो धर्म पे कुरबानी, "जीत" मत होवो ए विरानों ॥ जैन ॥

(तर्ज—अगर जिन देव के चरणो में तेरा ध्यान हो जाता)

छोड़ कर जग की मोह माया, कर्मो का नाश करते हैं,
वही ज्ञानी तिरे भव से, स्वर्ग मे वास करते है ॥ टेर ॥
समझ संसार को झूठा, जिन्होने धर्म रस लूटा ।
वही जंजाल से छुटा, जो निज कल्याण करते हैं ॥ छोड़ ॥

काम मद क्रोध को छोड़ा, जगत माया से मुँह मोड़ा।
किया तप कर्मों को तोड़ा, विषयों से दूर रहते हैं ॥ छोड़ ॥
है जिनका काम आठो याम, लेते हैं प्रभू का नाम।
वही पाते हैं मुक्ति धाम, जो लवलीन रहते हैं ॥ छोड़ ॥
न कोड़ी पास रखते हैं, न कहीं निज वास करते हैं।
न खाते रात को खाना, बिछोना घास रखते हैं ॥ छोड़ ॥
जो करते हैं धर्म उपदेश नहीं रखते हैं रागा द्वेष।
'जीत' वही कहलाते साधू जो तारे और तिरते हैं ॥ छोड़ ॥

(तर्ज—तावड़ा धीमो पड़ जारे)

चतुर नर छोडो कुटलाई, दो राग द्वैप न त्याग,
सभी हां भायां का भाई ॥ टेर ॥

लेकर कांई आया संग में अब कांई ले जास्यो,
कांई वृथा ही वैर वसाय पाप में डूब्या ही जास्यो।
करोला कद तक मन चाई ॥

कुकर काग कुमाणस नर तो, अपणी से नहीं चूके,
करे राड़ की बात जगत सारा ज्यां पर थुंके।
पेट है जिनकी कुछ नांई ॥

किस की दोलत किसके खजाने, किसके साधु संत,
किस के महल अटारो बताओ कैसा कटर पंथ।
गुणी जन सोचो चितलाई ॥

जाणो नहीं मतलब में कुछ भी, अपनी अपनी ताणो,
पर निन्दा करवा के पहली खुद ने तो पहचाणो।
भरया है अवगुण कितराई ॥
फूट हटा कर सत्य को धारो करो परस्पर प्यार,
'जीत' करो नित प्रित धर्म से होवे बेड़ा पार।
धर्म ही है सच्चा सहाई ॥

[महावीर जयन्ती]

(त र्ज—देखो देखो जी बदरवा छाए जिया घबराए)

देखो देखो जी जिया हरषाए, जयन्ती मनाए ॥ टेर ॥
'सिद्धारथ' के नंद आप हो, त्रिसला लाल कहाए।
चैत सुदी तेरस को जन्मे घर घर आनन्द छाए ॥ देखो ॥
जन्मत ही जग मे आकर के, चमत्कार दिखलाये।
लगा अगुंठा मेरु धुजाया, महावीर कहलाए ॥ देखो ॥
राज पाट धन धाम छोड़, फिर धर्म स्नेह लगाए।
सुख को छोडा कर्म को तोड़ा, भवभव बंध छुड़ाए ॥ देखो ॥
चंड कौशिक को तारा, चंदन बाला की लाज बचाए।
समता धारी हिम्मत न हारी, कानो कीले ठुकाए ॥ देखो ।
पढ़ा अहिंसा पाठ, जगत में झन्डा जैन लहराए।
गौतम गण घर से चेलों ने घर घर अलख जगाए ॥ देखो ॥
उसी वीर का लगा हुआ, ऐ पेड आज कुमलाए।
युवकगण अब उठो कमरकस कुछतो कर दिखलाए ॥ देखो ॥

तन मन धन दे वार धर्म हित, चाहे जान भी जाए।
मुसीबतों को सह कर के भी आगे ही कदम बढाए ॥ देखो ॥
निच ऊंच का भाव छोड़ आपस में प्रेम बढाऐ।
धर्म का पाठ पढ़ा भाई को भाई गले लगाये ॥ देखो ॥
नर तन पा अनमोल चोल ऐ, इस को सफल बनाये।
चंचल जल दिनचार, गया फिर वक्त हाथ नही आये ॥देखो ॥
दर्द दिलों में जिनके होगा वो ही कुछ कर पाऐ।
जिसके लगी नहीं वो क्या जाने पीर पराई भाए ॥ देखो ॥
देख दशा भारत की प्रभु, अब आओ याद सताये।
मन मंदिर में बैठ 'जोतमल' नित तेरा गुण गाए ॥ देखो ॥

(तर्ज - आरती)

ओम जय अचलानन्द स्वामी २ शान्ति जिनेश्वर स्वामी
करता नित वन्दन ॥ टेर
शॉती शॉती के दाता तिर्थङ्कर नामी, घट घट के हो व्यापक
हे अन्तरयामी ॥ ओम
जैन धर्म के स्वामी हो तुम प्रतिपाला, अहिसा को अपनाया
कर्मों को टाला ॥ ओम।
भक्त जनन के स्वामी हो तुम रखवारे, सुख सम्पति के दाता
दु:ख मेटन हारे ॥ ओम
मंगलमय है स्वामी जो कोई गुण गाये, रोग शोक मिट जावे
सदगति को पावे ॥ ओम।
विश्व सेन के नँदा ध्यान धरूं तेरा।
'जोतमल' प्रभू काटो भव भव का फेरा ॥ ओम।

// अवश्य पढ़िए

जीत ज्योति भाग १, २, ३

जिसमें आज कल की फिल्मों व मारवाड़ी तर्जों पर बनाए हुए प्रभू भक्ति, उपदेशी भजन व जोशीले गायन रखे गये हैं। साथ ही सन्त मुनिराजों के उपयोगित दान, शील, तप, भावना आदि कई विषयों पर लावणियों की भी रचना की गई है।

मूल्य लागत मात्र है

जीत ज्योति भाग पहला	...	=)
,, ,, ,, दूसरा	....	≡)
,, ,, ,, तीसरा	....	=)॥

एक वार अवश्य पढ़िए

"जीत संगीतमाला" के पुष्प तीन

जीत चोबीसी	...	=)
जीत का गीत	...	–)॥
जीत गुरु गुण महिमा	...	–)॥
६ पुस्तकों का पूरा सेट सजिल्द	...	१)

नोट—इससे ज्यादा संख्या में पुस्तक मंगाने पर १॥–) सैकड़ा पुस्तक के हिसाब से कमीशन काट दिया जायगा।

—: पुस्तक मिलने के पते :—

१. सहसकरण जीतमल चोपड़ा
   लाखन कोटड़ी, अजमेर

२. श्री नेमीचन्दजी चोपड़ा
   C/o सेठ घेवरचन्दजी चोपड़ा
   नया बाजार, अजमेर

३. श्रीयुत मिश्रीलालजी रंगलालजी पारलेचा
   कपड़े के व्योपारी, व्यावर

४. वैद्य पं० गोवर्द्धनलालजी शर्मा
   श्री जैन सेवासमिति औसधालय व्यावर

५. श्री हस्तीमलजी लूमड़
   C/o शा० उत्तमचन्दजी बस्तीमलजी
   उदेपुरिया बाजार, पाली (मारवाड़)

६. श्री सोहनलालजी लोढा, मु० कूकड़ा
   पो० कूकड़ा, वाया: व्यावर

७. श्री कालूरामजी कोठारी
   C/o श्री सुरजमलजी कनकमलजी कोठारी
   मदनगंज (किशनगढ़)

अमर प्रेस, अजमेर

जीत ज्योति

भाग दूसरा

दान, शील, तप, भावना,
सत्य, वचन, दिल धार।
दया धर्म, वैराग्य रस,
'जीत ज्योति' का सार॥

रचयिता---

ॐ० जीतमल चोपड़ा

अवेतनिक मंत्री:—
श्री श्वे-स्था-जैन युवक संघ अजमेर

मूल्य ≡)॥
साढ़े तीन आना

नई रचना ॥ अवश्य पढ़िए ॥ नया भाग

जीत ज्योति भाग चौथा

इसमें देखिए

देश भक्ति, उपदेशी भजन, जोशीले गायन, असाधुओं की पोल,
मूमन सेठ की कथा, मूल्य ≋।

एक बार अवश्य पढ़िए

जीत संगीत माला का पुष्प दूसरा:—

जीत का गीत

होलीकोत्सव के लिए उत्तम तथा सुधारिक गायन, मूल्य —॥

मिलने का पता:—

सहस करण जीतमलचोपड़ा लाखन कोटड़ी

अजमेर

अमर प्रेस अजमेर

जीत-ज्योति

"भाग दूसरा"

रचयिता

जीतमल चोपड़ा

प्रकाशक

श्री श्वे० स्था० जैन युवक संघ अजमेर,

भूमिक, लेखकः—

श्री जगदीश प्रसाद जी "दीपक"

राजस्थानी पत्रकार

द्वितिय आवृत्ति
कुल संख्यां
३०००

२००३

मूल्य =॥)
साढेतीन आना

❀ भूमिका ❀

"जीत-ज्योति" का पहला भाग भी हमने छपते देखा था और दूसरा भी। भाई जीतमल जी के व्यक्तित्व में ही कवित्व की पुट है। अजमेर की संगीत मण्डलियों में उनका मौलिक कविता विकास अपना निजी स्थान रखता है। आपकी यह "ज्योति" जैन साहित्य के उस अथाह सागर की एक तरंग है, जो भारतीय भाषा साहित्यों मे अपना आधूं-आध स्थान रखता है।

जीतमल जी जैन कवियों की परम्परा में अपने शैशव से ही अच्छा अभ्युत्थान ले कर चले हैं। भगवान महावीर आपको काव्योचित अभीष्ट सिद्धि प्रदान करेंगे।

"जीत-ज्योति" कविवर जीतमल जी की कविता यात्रा की दूसरी मञ्जिल का प्रतीक है। समस्त जैन-साहित्य के प्रेमी गण इसमें मोरध्वज, हरिश्चन्द्र, सती चन्दनबाला, राजा करण, अर्जुन माली, और भरतरी, आदि की कथाओं को काव्य के नये कलेवर में पायेंगे।

जीतमल जी के कवि मानस की तीसरी चौथी मञ्जिलें द्रुत गति से निकट से निकटतर होती चली आयें। जैन धर्म की आस्था-निष्ठा शास्त्रीय कवित्व के सोने में सुहागा बन कर बढ़ती रहे, यही आशा है।

"मीरां"
कार्यालय
अजमेर,

जगदीश प्रसाद "दीपक"
राजस्थानी-पत्रकार

॥ ॐ ॥

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतम प्रभू।
मंगलं स्थुलि भद्राद्या, श्री जैन धर्मोस्तु मंगलम ॥

पंच परमेष्ठि

(तर्ज:—जिन्दगी है प्यार की प्यार से बिताएजा)

पंच परमेष्टी का ध्यान नित ध्याएजा,
प्राणी नरतन पाया, इसे व्यर्थ न गमाएजा,
शुभ कर्म में लगाएजा ॥ टेर ॥

अरिहंत, सिद्धा, आचार्य, उपाध्याय,
सर्व साधुजी के चरणा सीस तू नमाएजा,
इनके गुण गाएजा ॥ पंच ॥ १ ॥

मंत्रों का है ए मंत्र, ध्याते जिसको गुणी संत,
ध्यान लगावे नित तू भी लगाएजा,
भव बंध छुड़ाएजा ॥ पंच ॥ २ ॥

रोग, सोक, होवे दूर, कर्मों का होवे चूर,
सुख भरपूर, आवा गमन [illegible]
शिव सुख पाएजा ॥ [illegible] ३ ॥

यही सच्चा शरणा है, जाप मंत्र का करना है,
भव सिन्धु से तिरना है, तो नित [illegible],
लगन [illegible] ॥ पंच ॥ ४ ॥

ध्यान धरो आठो याम, यही सद [illegible],
"जीतमल" मुक्ति [illegible] पाएजा,
[illegible] ॥

" दान "

अपने हित धन देत है, सकल दिशा के लोग।
परहित में जो देत हैं; बहु प्रसन्शा योग।

" दानवीर कर्ण "

(तर्ज:—कव्वाली)

वीर देता, दान देखो, वीरता की शान में,
आवो राजा, कर्ण फिर एक बार हिन्दुस्तान में ॥ टेर ॥

(शेर) कुरुक्षेत्र के मैदान में, होरही लड़ाई जोर से,
कोरव खड़े थे एक तरफ, पांडव थे दुजी ओर से,
कर्ण साथी कोरवों का, हो रहा था उस समय,
वीरता रण में दिखा, नित शत्रु पे करता विजय,
(च०) आज भी सज धज खड़ा, रण भूमि के मैदान में, । १ ।

(शेर) कोरव दल करता विजय, रण में सदा जिस वीर से,
वह भी हुआ लाचार आखिर पांडवों के तीर से,
हो गया था छिन्न भिन्न, फिर कर्ण का सारा बदन,
हर अंग से वहता रुधिर, और हो रही भारी जलन,
(च०) मृत्यु शय्या पर पड़ा था, लीन प्रभू के ध्यान में, । २ ।

(शेर) सोचते श्री कृष्ण और, अर्जुन यों बैठे ध्यान में,
लेवे परिक्षा कर्ण की, कैसा वह दानी दान में,
वृद्ध योगी बन के दोनों, फिर वहां से चल दिए,
दिजिए कुछ दान राजा, कर्ण से फिर यूँ कहे,
(च०) कर्ण के था प्रण सदा, देता था स्वर्ण ही दान में, । ३ ।

(शेर) इस समय कहां स्वर्ण, करता कर्ण यूँ विचार जी,
साधु भी खाली, जायतो, जीना मेरा धिक्कार जी,
इस तरह से सोचते, फिर युक्ति एक निकाल ली,
निज दंत सोना जो चढ़ा, उसे तोड़ने की धार ली,
(च०) एक पत्थर लादो योगी, नहीं शक्ति मेरी जान में, ॥ ४ ॥

(शेर) पत्थर उठा लाऊं तुझे, नहीं काम राजन यह मेरा,
फिर दान का फल भी तो आधा, जायगा निश्फल तेरा,
कर्त्तव्य कराके दान दे, नहीं दान वह कह लायगा,
निज शक्ति से जो दान से, वही दान माना जायगा,
(च०) इसलिए दे दान तू ही जो दे सके आसान में, ॥ ५ ॥

(शेर) साधु न खाली जाय हरगिज कर्ण निश्चय कर लिया,
इतने ही में कुछ दुरी पे, पत्थर दिखाई एक दिया,
दोनों भुजाएं टुट चुकी, अब किस तरह पहुँचू निकट,
यही समस्या हो रही थी, कर्ण के दिल में विकट,
(च०) आखिर खिसकते वो चला, उस पत्थर के ध्यान में, ॥ ६ ॥

(शेर) हो रहा चलनी बदन, फिर कंकरों की मार थी,
पर साहस न छोड़ा वीर ने, हो धन्य प्यारे भारती,
पत्थर पे आ मुख खोल के, दी एक टक्कर जोर से,
खून की धारा बही, गिरे दांत चारों ओर से,
(च०) दांत से सोना निकाला, दे दिया फिर दान में, ॥ ७ ॥

(शेर) देख उसका साहस, अर्जुन कृष्ण भी चकरा गए,
हो कर प्रसन्न श्री कृष्ण ने, फिर कर्ण को दर्शन दिए,

पा दर्शन छोड़े प्रान, महिमा आज जग में छा रही,
प्रातः काल राजा कर्ण को, वक्त दुनिया गा रही,
(च०) "जीतमल" है दीन भारत, आज तेरे ध्यान में, ॥ ८ ॥

" शील "

शील रत्न मोटो रत्न, सब रत्ना की खान,
तीन लोक की संपदा, रही शील मे आन,

" चन्दन बाला "

(*तर्ज़:—तावड़ा धीमो पड़जा रे*)

धन्य हो चन्दन बाला नार, २
सह्या कष्ट पर रख्यो शील ने सुर किया जय जय कार ॥ टेर ॥
जग उद्धारक महावीर प्रभु, वंदू वारम्बार,
सती हुई एक चन्दनां, ख्यारी महिमा अपरम्पार, ॥ धन ॥ १
चंपा पुरी को राजवी सजी, दधि वाहन सुखकार,
राणी थ्यारे धारणी सजी शील वन्ती सुनार, ॥ धन ॥ २
होनहार बिरवान के सजी होत है चिकने पात,
बचपन से थी चन्दन बाला, सर्व गुणां विख्यात, ॥ धन ॥ ३
एक समय महाराज शतानिक, कोशम्बी सरदार,
लड़ाई करवा आयो फौज ले, चम्पा पुर के द्वार, ॥ धन ॥ ४
लड़तां चांनणा मे दधिवाहन, आखिर मे गयो हार,
भाग गयो रण छोड़, शहर में मच गयो हाहाकार, ॥ धन ॥ ५
महलां मांही मां बेटी दोऊ, कर रही सोच विचार,

पायक एक विश्वास देय, ले गयो नगर के बार, । धन । ६
कुदृष्ट हुई पायक की फिर, रानी पे उस वार,
जीभ खेंचने प्राण छोड़ दिया, शील रखो तिणवार, । धन । ७
चन्दना खेंची कटार मरण ने. पायक हुवो लाचार,
बहन बना घर ले गयो अपने, कोशम्बी मंझार, । धन । ८
पायक नार हुई अति क्रोधित, पायक कियो विचार;
चन्दन बाला ने आयो बेचवा, देखो बीच बजार, । धन । ९
लीनी वेश्या मोल, सती पूछे क्या कारो बार,
वेश्या कहे शृंगार करो, नित नया करो भरतार, । धन । १०
सुन करके हुई दु:खी सती फिर जप्यो जाप नवकार,
करी रक्षा एक देव आयने, रूप बंदर को धार, । धन । ११
वेश्या डरी मन माय, करी वापस पायक के लार,
आखिर धना वह सेठ एक, खरीदी दया विचार। धन । १२
कन्या समान समझे हे सेठ जी, सती रहे सुखकार,
पर मुला सेठानी सेठ की, देख जले हरबार, । धन । १३
सेवा सेठ की करे सती नित, रखे धर्म से प्यार,
उधर मुलां होग दु:खी, देखकर इनका ए व्यवहार, । धन । १४
एक समय कुछ कार्य के वश, गया सेठ जी बार,
देख समय यह मुलां ने, दिया सती को कष्ट अपार, । धन । १५
सिर मुड़वा कर उस सती का दिया कोठे मे डार,
हाथ पगों में बेड़ी पटकदी, हो रहा दर्द अपार, । धन । १६

पुण्य योग उस सती के जो, उस कोशम्बी मंझार,
महावीर भगवान पधारया करता हुआ विहार, । धन । १७
किया प्रभू ने अभिग्रह यह हो शिर मुंडी नार,
हाथ पांव में बेड़ी होवे नेनों, में अश्रु धार, । धन । १८
एक पैर हो थलो के अन्दर, एक पैर हो बार,
इतने योग जो मिल जावे तो, लेऊ मैं आहार, । धन । १९
इधर सती कोठे के मांही, करती हाहाकार,
उधर सेठ कर काम आयो घर, देखी नहीं निज नार, । धन । २०
आवाज दी फिर चन्दना को, सती जी करे पुकार,
जाय देखी कोठा में सेठ जब, हुयो अचम्भो अपार, । धन । २१
तेलो हुयो कोठा में सती को लग रही भूक अपार,
कहे सेठ से देवो खाने को, कुछ तो जल्दी लार, । धन । २२
सोचे सेठ जी भोजन कहां, जब घर में नहीं निज नार,
उड़द बाकला ही ले सती ने लीनो ममता धार, । धन । २३
तेले का था पारणा, सजी सती जी, करे विचार,
आवे कोई मुनिवर तो पहले, उनका करू सत्कार, । धन । २४
बेड़ी तोड़न गया सेठ जी, लेवाने लुहार,
इधर वीर भगवान पधारया, विचरत सती के द्वार, । धन । २५
सती चन्दना बैठी पारणे, पग अन्नदर एक बार,
हुवा अभिग्रह सब ही पूरा, नहीं नेणां अश्रधार, । धन । २६
भगवन पाछा फिरया, सती के बहे नेणां जलधार,
अभिग्रह पूरा हुआ देकर, लीनो प्रभूजी आहार, । धन । २७

उड़दां का बहराया बाकला, सती भाव शुद्ध धार,
देव दुंदुभी बजी गगन में बरस्यो स्वर्ण अपार, । धन । २८
मूलां पीहर मांहीं सुनी जब, आई झट उस बार,
सती दियो संतोष मुलां ने, मत कर सोच विचार, । धन २९
कोशम्बी नरेश सुनि जब आयो सेठ के द्वार.
हाल सुन कर सती को सारो लेग्यो महल मझार, । धन । ३०
दधिवाहन ने ढुंढ बुलायो, हृदय हर्ष अपार,
पिता पुत्र दोऊ मिल्या हर्ष से, मिल्यो राज्य सुखकार, । धन । ३१
पिता कहे अब ब्याह करन की, सती कियो इन्कार,
केवल ज्ञान हुयो वीर प्रभू ने, जब लिया संजम भार, । धन । ३२
धर्म ध्यान में चित रमायो, कीनो धर्म प्रचार,
चेल्यां हुई बहुत, सो चन्दना, थी सब की सरदार, । धन । ३३
अन्त समय में सती चन्दना लियो सथारो धार,
अष्ट कर्म ने तोड़ सती, फिर पहुँची मोक्ष मंझार, । धन । ३४
धन्य सती थे रख्यो शील ने, पाकर कष्ट अपार,
"जीतमल" थारे चरणां मांहीं, जावे नित बलिहार, । धन । ३५

❁ तप ❁

तप बड़ो संसार में, सुर नर नमे अनेक ।
जस विस्तरे मृत्यु लोक में, पावे सुख विवेक ॥

❁ अर्जुन-माली ❁

(तर्ज—तेरे पूजन को भगवान)

तपस्या करके चतुर सुजान करो निज आतम का कल्याण ॥ टेर ।
नगरी राजग्रही के मांही, करता राज श्रेणिक सुखदाई ।

रहे वहाँ अर्जुन माली सुजान। करो। १।

भयँकर जक्ष एक दुखदाई, कींना प्रवेश हृदय मांही।
हुआ जिससे अर्जुन बलवान। करो। २।

नजर में जो कोई उसके आवे, झट ही उसका मार गिरावे।
लेता नित मनुष्यो के प्रान। करो। ३।

डर से उसके सब नरनार, निकलते नहीं नगर से बार।
अर्जुन ने मचा दिया घम सान। करो। ४।

विचरत महावीर भगवान, पधारे राजग्रही दरम्यान,
बाग में ठहरे प्रभु जी आन। करो। ५।

सुन कर नगर के सब नर नारी, करते दर्श की आशा भारी.
पर डर था अर्जुन का अति महान। करो। ६।

था वो धर्मी शीलव्रत धारी, चमकता तेज चहरे पर भारी,
चला धर महावीर का ध्यान। करो। ७।

देखकर रोके सब नरनारी सेठ था मस्त भजन में भारी,
मिला सन्मुख अर्जुन मति मान। करो। ८।

देखकर सेठ संथारो धार, मन में जप्यो जाप नवकार,
डरा फिर अर्जुन लख ए शान। करो। ९।

उसने लाख ही शस्त्र उठाए, पर वो चलते नहीं चलाए,
भाग गया जक्ष ले अपनी जान। करो। १०।

अर्जुन गिरा पैरों के माही, सेठ संग गया दरसन के ताही,
प्रभु ने दिया धर्म का ज्ञान। करो। ११।

वैराग्य उत्पन्न हुआ उस वार, लिया अर्जुन ने संजम भार,
तप में लगा दिया निज ध्यान ॥ करो ॥ १३ ॥
गोचरी नगरी मांही जावे, देखकर सब ही बुरा बतावे,
देते सब मिल कष्ट महान ॥ करो ॥ १४ ॥
कई एक मारे गाली देवे, मुनिवर खुशी खुशी सह लेवे,
क्षमा का भाव लिया दिल ठान ॥ करो ॥ १५ ॥
संयम लेते शुरू तप कीनो, बेले बेले पारणो लीनो,
समझ कर काया धूल समान ॥ करो ॥ १६ ॥
मास छः तांही संजम पाल्यो, अन्त समय संथारो धार्यो,
पायो अर्जुन पद निर्वाण ॥ करो ॥ १७ ॥
समझ नर तप की महिमा खास, किया अर्जुन कर्मों का नाश,
तप में होती शक्ति महान ॥ करो ॥ १८ ॥
संवत दो हजार एक मांई, तप की महिमा "जीतमल" गाई,
गुणी जन लीजो दिल में ठान ॥ करो ॥ १९ ॥

"भावना"

शुद्ध मन भाए भावना, रखे चढ़ते परणाम,
भरतादिक शिव गत गए, जिनको करूँ प्रणाम,

॥ प्रसन्न चन्द्र-मुनिराय ॥

(*तर्ज़ः—लावणी*)

ए पाकर के नर रत्न, न व्यर्थ गमाना,
नित उठ के प्राणी शुद्ध भावना भाना ॥ टेर ॥

पोतलपुर नगरी, प्रसन्न चन्द्र नृप भारी,
जहां एक समय आए वीर प्रभू अवतारी,
नृप सुन के वाणी प्रभू की हृदय धारी,
निज सुत को राज्य दे हुए मुनिव्रत धारी,
ले आज्ञा प्रभू से ध्यान जंगल में ठाना ॥ नित ॥ १

इतने में नागरिक दो आये वहां चलकर,
देख इनको एक कहे धन्य धन्य है मुनिवर,
पर दूजा कहे नहीं मुर्ख है इनसे बढ़कर,
बच्चे को सौंपा राज शत्रु आया चढ़कर,
उधर सुना मुनि ने ध्यान में जब ए ताना ॥ नित ॥ २

छोड़ ध्यान प्रभू का रण से ध्यान लगाया,
है कौन जो चढकर मेरे राज पर आया,
अभी मार मिटाऊं गर्व जो उसकी छाया,
करूं नाश शत्रु का सेना सहित सफाया,
हो क्रोध के वश मुनि ध्यान मे रण ए ठाना ॥ नित ॥ ३

करने को प्रभू के दर्शन श्रेणिक महाराया,
गज सवारी करके उसी रस्ते से आया,
देख ध्यान में मुनि को वंदन कर हरषाया,,
धन्य छोड़ राज सुख प्रभु का ध्यान लगाया,
फिर किया प्रभू दर्शन का भाग सरसाना ॥ नित । ४

अब कहे श्रेणिक प्रभू करके कृपा बताएं,
मुनि प्रसन्न चन्द्र जो खड़े हैं ध्यान लगाए,

करे काल इस समय तो कौनसी गति को पाए,
कहे प्रभू इस समय नरक सातवीं जाए,
करे विचार श्रेणिक सुन प्रभू का ए फरमाना ॥ नित ॥ ५
इधर ध्यान में मुनि ने कइयों को मार गिराया,
लड़ते लड़ते निज शत्रु सामने आया,
देखते ही शत्रु को मुनि को गुस्सा आया,
निज चक्र उठाने सरपे हाथ लगाया,
करे विचार मुनि जब सर मुंडित निज जाना ॥ नित ॥ ६
धिक धिक मुझे जो ऐसा ध्यान लगाया,
संसार छोड़ भी त्यागी नहीं मोह माया,
मैंने क्रोध के वश हो प्रभू का ध्यान हटाया,
धिक्कार जो ऐसे भाव मैं दिल में लाया,
इस तरह मुनि ने निज स्वरूप पहचाना ॥ नित ॥ ७
उधर श्रेणिक बार बार कहे है प्रभू बतावें,
अब प्रसन्नचन्द्र मुनि कौनसी गति में जावे,
अब प्रभो छठी फिर पांचवी चौथी बनावें,
कहे थोड़ी देर बाद स्वार्थ सिद्ध में जावें,
करे आश्चर्य सुन श्रेणिक प्रभू के ध्याना ॥ नित ॥ ८
इतने ही में बजी देव दुदुंभो भारी,
हुवा केवल ज्ञान मुनि को उत्पन्न उस वारी,
फिर शुद्ध भाव से निज आतम को तारी,
हुए कर्म काट मुनि शिवपुर के अधिकारी,
कहे "जीतमल" दो हजार एक दरम्यांना ॥ नित ॥ ९ ॥

❀ वैराग्य ❀

रत्न जड़त को पिंजरो, सुवो जाणे सोहि फंद ।
काम भोग संसार का, ज्ञानी जाणे झूटा फंद ॥

"जम्बू कुमार"

सवाल (पुत्र व मात के प्रश्नोत्तर) जवाब

'जम्बू'–इजाजत दे माता लेस्यां संजम भार ॥ टेर ॥
'माता'–इस्यो काई दुख व्याप्यो जम्बू राजकँवार ॥ टेर ॥

ज० भगवान सुधर्मा स्वामी, आया बाग मांय जी ।
मा० धन्य अहो भाग्य जी, कीनो पावन आय जी ।
ज० सुन के शुभागमन, गयो दरश तांय जी ।
मा० धन्य ऐसे लाल को, जो धर्म को दिपाय जी ।
ज० सुना वहां धर्म प्रचार ॥ लेस्यां ॥ १ ॥
मा० चित क्यो उदास, जम्बू कहो समझाय जी ।
ज० सुन के उपदेश माता वेराग भाय जी ।
मा० ऐसे कांई बोले, क्यों चित को दुखाय जी ।
ज० झूठा है संसार माता, सगो कोई नांय जी ।
मा० औ कांई करयो, विचार ॥ जम्बू ॥ २ ॥
ज० ममता को दे छोड़, आज्ञा देवो अब माय जी ।
मा० इस्यो कांई दियो ज्ञान, गयो भरमांय जी ।
ज० वीतराग वाण सुनी, संजम मन भाय जी ।
मा० छोटा सूं मोटो कियो क्यों अब छिटकाय जी ।
ज० है मतलब का संसार ॥ लेस्यां ॥ ३ ॥

मा० राज पाट धन धाम, कमी कोई नाय जी।
ज० है सब बेकार, माता संग चले नाय जी।
मा० संग आठ नार थारे महलाँ के माँय जी।
ज० दियो ज्ञान एक रात दीनी समझाय जी।
मा० संजम को छोड़, विचार ॥ जम्बू ॥ ४ ॥
ज० निश्चय लीनी धार, मात संजम की मन माय जी।
मा० एका ऐकी लाल बेटा छोड़ कठे जाय जी।
ज० छोड़ मोह जाल, किण रा बेटा किण री माय जी।
मा० राज सुख भोग पाछे, लीजो संजम जाय जी।
ज० नहीं इण बातों में, सार ॥ लेस्यां ॥ ५ ॥
मा० संजम खांड़े की धार, कहूँ समझाय जी।
ज० आज्ञा देवो प्रेम से, तो मुश्किल कछु नाय जी।
मा० पंच महाव्रत पालणो चलणो जीव बचाय जी।
ज० पांचो सुख समान, माता लेस्यूँ निभाय जी।
मा० मैं भी हूं, तैयार ॥ जम्बू ॥ ६ ॥
ज० पांचसो अरु सताईस, संग, लागे आय जी।
मा० पिता पुत्र मांय संग, आठूं नार धाय जी।
ज० संसार असार जाण जोनी दिक्षा जाय जी।
मा० "जीतमल" धन्य जम्बू धन्य थारी माय जी।
ज० समझ भूंटा संसार ॥ लेस्यां ॥ ७ ॥

"सत्य"

सत्य मत छोड़ो सूरमा, सत्य छोड़्यां पत जाय।
सत्य की बांदी लक्ष्मी, फेर मिलेगी आय॥

* सत्यवादी-राजा हरिश्चन्द्र *

(तर्ज—जगत के मांही महाराज, २ जोरू के मजूर बड़े २ रणशूर)

हरिचन्द्र तारा 'माहराज' संग रोहितास, नृप से हो गए दास। टेर।

सूर्यवंशी राजा हुए, भारत के मंझार,
जिसमें से एक हरिचन्द्र था, सत्यवादी दातार।
अवध के राजा, म० २ थे सब सुख खास॥ नृप॥ १॥

करने परीक्षा इन्द्र ने झूंठी हे या सांच,
भेजा देव एक विश्वा मित्र को, करने सत्य की जांच।
सभा में आए म० २ बैठे हरि पास॥ नृप॥ २॥

करके बहाना यज्ञ का, चली सन्त ने चाल,
हजार मोहरां दे, तब नृप ने संकल्प किया उस हाल।
अमानत रखा म० खजाने खास॥ नृप॥ ३॥

जाल बिछा कुछ ओर भी, लिया दान में राज,
भेष उतरवा राजा जी का, दिया फकीरी साज।
वन वन डोले, म० रानी सुत पास॥ नृप॥ ४॥

विकट वनी के मांय फिर, आगए विश्वामित्र,
हजार मोहरां दे अमानत वरना डिगे चरित्र।
सत्य अब जावे, म० कर पुरी आस॥ नृप॥ ५॥

सत्य न डिगने दूंगा कोई चलो शहर के मांय,

कर्ज अदा कर फर्ज चुकाऊं, चाहे जान भी जाय।
बिछुड़ जाय रानी म० त्यागूं सुत आस॥ नृप॥ ६॥
आखिर काशी मांय बिके दोऊ, चला नहीं कुछ चारा,
चांडाल घर बिका हरिचन्द्र, ब्राह्मण घर तारा।
चुका दिया कर्ज म० किया कासी वास॥ नृप॥ ७॥
एक समय तारा सुत रोहित गया बाग के मायँ,
फूल तोड़ने पकड़ी डाल को डसा नाग ने आय।
मुरझा आई म० निकल गई स्वास॥ नृप॥ ८॥
बाग जाय रानी जब देखा, हुआ हाल बेहाल,
पीव प्यारे का पता नहीं बेटे को घेरा काल।
जाऊं स्मशान म० लेकर के लाश॥ नृप॥ ९॥
चांड़ाल के घर पे हरिश्चन्द्र, करे मसानी काम,
इधर लाश ले लेवे तारा, ले रोहित का नाम।
नृप पहचाना म० चित हुआ उदास॥ नृप॥ १०॥
दे प्यारे अब अग्न पुत्र को छोड़ रंजोगम सारा,
बिन कर के नहीं दूंगा अग्नि, सत्य हारू तारा।
मालिक की चोरी, म० नरकों का वास॥ नृप॥ ११॥
पहले ही साड़ी के टुक कर, ढकी कुंवर की लाश,
अब कर कहां से लाऊं प्यारे नहीं है कुछ भी पास।
आधी साड़ी से, म० ढका बदन ए खास॥ नृप॥ १२॥
आखिर कर लेने को रानी चली मालिक के पास,
रस्ते में वहां मरा पड़ा था काशी राज कुंवार।
पड़ी थी वहां पर म० एक कटार पास॥ नृप॥ १३।

हाल देख ए कंवर का रानी देखन लगी कटार,
इतने ही में पुलिस ने आके कर लिया गिरफ्तार,
बताया खूनी म० गए राजा पास ॥ नृप ॥ १४ ॥
राजा ने दिया हुक्म इसे चांडाल के हवाले करदो,
चांडाल ने कहा हरिश से इसका शीस उड़ादो,
हरिश ने देखा म० थी रानी खास ॥ नृप ॥ १५ ॥
किया धर्म को याद सत्य पर खेंच लिवो तलवार,
परख कसोटी पर कंचन को प्रकटे इन्द्र उस वार,
हाथ को रोका, म० का जिन्दा लाश ॥ नृप ॥ १६ ॥
धन्य हरिचन्द्र राजवी रानी रोहितास,
राज छोड़कर घर घर बिक गये किया सत्य विश्वास,
राज लो वापिस म० थी परीक्षा खास ॥ नृप ॥ १७ ॥
राज किया रोहितास नृपति ने प्रभू का ध्यान लगाया,
दो हजार की साल 'जीतमल' सत्य पे ध्यान लगाया,
सत्य मत छोड़ो मा० रखो सत्य विश्वास ॥ नृप ॥ १८ ॥

❀ वचन ❀

सिंह जनन, कदली फलन, "नृप वचन" एक सार ।
तिरिया तेल, मीर हट चढ़े न दूजी बार ।

" मोरध्वज "

(*तर्ज:— लावणी लंगड़ा*)

प्राण जाय पर वचन न जावे, मत धारी राखे यह टेक,
उनके चरण की सेवा करते हैं आ देव अनेक । टेर ॥

एक समय श्री इन्द्र सभा में बैठे देवी देवों के लार,
करे प्रशंसा मृत्यु लोक में, राजा मोरध्वज है सुखकार,
दयावान निज आन का पक्का है, वचनों का पालन हार,
यह सुनके दो देव न माने हुए परीक्षा को तैयार,
(शेर) मुश्किल निभाना बचन का करते हैं दोनों विचार जी,
कहे इन्द्र से कर जोड़ के सुनिए जरा सरकार जी,
हुक्म होय गर आपका लेवे परीक्षा जार जी,
कहे इन्द्र जैसी इच्छा हो, अजमालो चाहे हर बार जी,
(चो०) करने परीक्षा देव पठाए, दोनों चल मृत्यु लोक में आए,
माया से एक सिंह बनाए, जोगी बन दोऊ सभा में आए,
(लावणी) ए देख योगी को राजा बहुत हरषाया,
किया आदर प्रेम से ऊंचे आसन बिठाया,
अब कहने लगा एक देव, सुनो महाराया,
हम तीन दिनों से अन्न पाणी नहीं खाया,
(झेला) सुणो योगी किस वस्तु का है दरकार, वही मंगवावे,
सुणो राजा पहले देवो बचन, जो मांगे सो मिल जावे,
सुणो योगी मैंने दिया वचन, कहो कौनसी वस्तु चावे,
सुणो राजा, पहले करलो खूब बिचार, बदल नहीं जावे,
दोहा—चन्द्र टले, सूरज टले, । टले धरा आकाश,
टले ना अपने वचन से । हे स्वामी ए दास,
(चोबोला) योगी जी. हे स्वामी ए दास,
वचन से टले ना टलाए,
राजाजी तो पूरण करो मम काम,

आशा तेरी करके यहां आए,
योगीजी कहो वस्तु को नाम,
मंगाई शीघ्र वो आए,
राजाजी भेंट चढावो निज,
पुत्र सिंह की यही हम चाएं,
अग० मिल राजा राणी दोऊ प्यारा, निज सुत पे चलाओ आरा,
करो दो टुक फिर उस वारा, नहीं बहे नैन जलधारा,
(च०) एक धड़ सिंह भेंट चढ़ाओ महल के ऊपर राखो एक. । १ ।
सुन के वचन योगी के राजा, मन में करने लगा विचार,
राज पाट धन धाम मांगले, तो भी मुझको नहीं इन्कार,
पर ए कैसा शब्द सुनाया, पुत्र हत्या हो रही बेकार,
सोच समझ रानी से सला, करने गया राजा महल मझार,
(शेर) देख सूरत राव की, रानी कहे सुनो कंथ जी,
चन्द्र सम मुखड़ा, क्यों हो रहा आज मलिन मंद जी,
किस्सा सनाया राव ने, हो गया वचन के बंद जी,
रानी कहे धीरज धरो, सब दूर टलेंगे फंद जी,
(चोपाई) रघुकुल रीत सदा चल आई,
प्राण जाय पर वचन न जाई,
यही परीक्षा नाथ तुमारी आई,
देवो जी भेंट चढाय पुत्र हरपाई,
(लावणी) ए सुन के वचन रानी के राजा हरपाया,
निज दासी भेज कर, कंवर को शीघ्र बुलाया,

फिर कहा कंवर ने हाल सभी समझाया,
. सुन कर के वचन कहे कंवर सुनो महाराया,
(झेला) सुणो राजा मैं छत्री कुल मैं आय जन्म जो पाया,
सुणो बेटा बिन तुझको देखे, तड़फे मेरी काया,
सुणो राजा करो मोह जान को दूर, झूठी सब माया,
सुणो बेटा धन्य भाग्य हमारे तुझ जैसा सुत पाया,
दोहा: बीच सभा राजा रानी दोऊ, करे पुत्र पर वार,
आरा चलाते रानी के, आई एक अश्रु धार,
चो० . रानी जी, पहले बताओ, आंसू नेन में एक क्यूं आया,
योगी जी मोह नहीं मन माँय, आंसू तो मोरे हर्ष का आया,
रानी जी, होत कंवर क हाण, हर्ष क्या तन पे छाया,
योगी जी, धन्य मेरा सुत आज, योगी सिंह भेंट चढ़ाया,
(वणजारा) अच्छा चलाओ आरा, सिंह तड़फे भूख का मारा।
सभा देख रही ए सारा, वही सभी के अश्रु धारा ॥
(चलत) दो टुक किए कँवर के उस दम,
धन्य जननी सुत जाया नेक ॥ उनके ॥
एक धड़ सिंह भेंट चढाई,
एक महल पर रखी जार,
राजा कहे हुआ वचन पूर्ण,
अब भोजन करिए आप पधार,
बात मान राजा की योगी,
भोजन तांहीं बैठे जार,

दोनो योगी के लिए पत्तल दो,
रानी ने कीनी तैयार;
(शेर) योगी कहे पत्तल यहां रानी, तान ओर लगाइए,
राजाजी कहे किसके लिए, अब शीघ्र ही फरमाइए,
राजा रानी ओर कंवर को, तीन पत्तल लाइए,
रानी कहे योगी ! जले पर, मिरच ना लगाइए,
(चोपाई) अब है कँवर कहां योगी बताओ,
किस के लिये पत्तल मगवावो,
योगी कहे गर हमें जिमाना चाहो,
तो करो कहूँ सो काम नहीं निट जावो,
(लावड़ी) आखिर रानी ने पत्तल तीन लगवाई,
राजा, रानी, दो पत्तल पे बैठे जाई,
अब कहे योगी तुम सुनो राजा चितलाई,
निज सुत को एक आवाज देवो लगाई.
(झेला) सुणो योगी कर ऐसी बात, क्यों उसकी याद दिलावो,
सुणों राजा, मैं कहूँ सो करलो, मत दिल में घबराओ,
सुणों योगी अब कहां कंवर जिसको कि आवाज दिरावो,
सुणो राजा है कंवर, यहीं मोजूद आवाज लगाओ,
दोहा—राजा ने आवाज दी, कंवर को फिर उस बार,
आया महल से दोड़ता, फिर वहाँ राज कंवार,
सो० रानीजी: फिर वहां राज कंवार, चरण सबके सिर नाया,
रानीजी, योगी दे आशिर्वाद, भोजन कर वहां से पठाया,

ज्ञानी जी, धन्य धन्य देवे देव, वचन को खूब निभाया,
ज्ञानी जी, इन्द्र सभा में आय देव दोनों शरमाया,
(बणजारा) अब राजा रानी चित चाया,
निज सुत को राज संभलाया,
फिर संयम ले कर्म खपाया
आखिर में अमर पद पाया,
(चलत वचन चुक नहीं होना "जीतमल"
कर्म लिख्योड़ा टले ना लेख, ॥उनके॥

❋ शील ❋

जो सुख चावे जीव को, तजदे बातें चार।
चोरी चुगली जामनी, और "पराई नार"॥

सीता-रावण

सवाल (*तर्ज—जम्बू कुमार*) जवाब
रावण बनाऊं तोय पटरानी, सीता कहणा मान ॥ टेर ॥
सीता छोड़दे अभिमानी, दशकन्दर नादान ॥ टेर ॥
रा० आवो प्यारी सीता चालो, महलां के मांय जी,
सी० संभल के बोल रावण, शर्म नहीं आय जी,
रा० पटरानी खास मेरी, देऊंगा बनाय जी,
सी० मेरे तो वर एक राम, दुजो कोई नाय जी,
रा० करूं तन मन कुरबान ॥ सीता ॥ १ ॥
सी० दुष्ट दे पहुंचाय, मेरे राम व्याकुल होयंगे,
रा० छोड़ उनका ख्याल, तेरे राम रावण होयंगे,

सी० वन वन के मांय, मुझे ढूंढ रहे होयंगे,
रा० किया जैसा पाया, अपने कर्मों को भोगेंगे,
सी० संभल कर बोल जबान ।। दश कन्दर ।। ३ ।।
रा० लंकपति रावण आज खड़ा तेरे सामने,
सी० अर्ज करती सीता, मोय मिला श्री राम ने,
रा० छोड़ दे अब आस प्यारी, भूल राम नाम ने,
सी० वो ही सुधि लेसी कैसे भूलूं भगवान ने,
रा० छोड़ राम नाम की तान ।। सीता ।। ६ ।।
सी० रावण नादानी छोड़, राम दुख पायंगे,
रा० महलों के मांय सीता, मोज उड़ाएंगे,
सी० दुष्ट जो गर राम मेरा, हाल सुन पायंगे,
रा० वो हैं समन्दर पार, यहां कैसे आयंगे,
सी० तू क्या जाने अज्ञान ।। दशकन्दर ।। ४ ।।
रा० अब भी समय है सीता, बात मेरी मानले,
सी० आ गया है काल तेरा, रावण निश्चय जानले,
रा० जबरन करूंगा प्रीत, चाहे जितनी तानले,
सी० ले सकता नहीं धर्म, रावण चाहे तू प्रान ले,
रा० संभल कर रह नादान ।। सीता ।। ५ ।।
सी० शुभ घड़ी आई आए राम लखन साथ में,
रा० छुट गई सीता मेरे, आई नहीं हाथ में,
सी० लंका का किया नाश, रावण भी साथ में,
रा० "जीतमल" सीता फिर आई राम हाथ में,
० शील राखो भगवान ।। दशकन्दर ।। ६ ।।

❀ दया ❀

दया सुखानी बेलड़ी, दया सुखानी सांन ।
अनन्त जीव मुक्ति गया, दया तणा फल जान ॥

नेम–चरित्र

(जाओ जाओ, ए मेरे साधु रहो गुरू के संग)

गाओ गाओं सब ही मिल कर गुण नेम प्रभू के आज ॥ टेर ॥
समुद्र विजय का लाड़ला, नेम कँवर विख्यात,
चवदा सपना देखिया, ज्यारी सेवा देवी मात ॥ गावो ॥ १
श्याम वरण था अंग, प्रभु थे, बुद्धिमान बलवीर,
गुण के सागर, जग उद्धारक, दयावान गंभीर, ॥ गावो ॥ २
एक समय श्री नेम प्रभूजी, खेलत खेलत आए,
शस्त्र शाला थी श्री कृष्ण की, जहां आ रंग जमाए, ॥ गावो ॥ ३
शंख पड़ा था एक कृष्ण का जिसको प्रभू उठाए,
अपनी नाक से उसे बजाया, सब ही सुन चकराए, ॥ गावो ॥ ४
महलों मांही श्रीकृष्ण जी, सुन आवाज चकराए,
ऐसा कौन बलि है जिसने मेरे शस्त्र उठाए, ॥ गावो ॥ ५
आए दौड़ शस्त्र शाला में, नेम जी गले लगाए,
देख प्रभू के तेजो बल को, कृष्ण चन्द्र चकराए ॥ गावो ॥ ६

पड़े सोच में श्री कृष्ण जी, करने लगे विचार,
मेरे से भी निकले सवाए, बल में नेम कँवार, । गावो । ७
करे विचार मन में यूँ कृष्ण जी, इनका ब्याह रचाऊँ,
संसार सुखों में फंसा के इनका बल कमजोर कराऊँ, । गावो । ८
ब्याह करन की कही कृष्ण जी, नेम कियो इनकार,
तब जा महलों में रानी से, करने लगे विचार, । गावो । ९
किसी तरह मना कर इनने, ब्याह स्वीकार करावो,
हो जायें तैयार नेम जी, वो ही उपाय लगावो, । गावो । १०
आठो नार एक समय कृष्ण की, गई बागों मांई,
संग में लीना नेम कंवर को, फाग खेलवा तांई, । गावो । ११
अब मारे ताने नेम को यूं हम एक के संग नहीं खेलें,
ब्याह रचा कर ल्यावो नार को खेलें सब ही भेले, । गावो । १२
यों कहते कहते रानीयों ने, मारी भर पिचकारी,
माना माना कहा नेम ने, आठों खुश हुई नारी, । गावो । १३
उग्रसेन की लाड़लीस थी राजुल गुणवान,
उसने ब्याह रचायो नेम जी, चा लया लेकर जान, । गावो । १४
अब आगे का हाल कहुँ मैं, सुनजो चतुर सुजान,
"जीतमल" करो वंदन प्रभु तो गुण रत्ना की खान, । गावो । १५

सवाल — "नेम-राजुल" जवाब —

(तर्ज—अर्जी म्हारी सांभलो, हो प्रभू जी महावीर भगवान)
रा: अकेला क्यों गया हो प्रभुजी तोरण से रथ फेर ॥ टेर ॥
अकेला यूं गया, ए राजुल, पशुआ, की सुन टेर ॥ टेर ॥

रा: समुद्र विजय का लाडला, हो प्र० नेम कंवर गुणवान।
व्याह रचायो प्रेम से, हो प्र० लेकर आया जान। अ०
ने: उग्रसेन की लाडली, ए राजुल, थे गुण वंतो नार।
व्याह करण ने आविया, ए राजुल, मैं तो थां के द्वार। अ०
रा: महलां वाट में जोवती, हो प्र० सज सोला सिणगार।
लगी लगन मन में यही, हो प्रभजी, कद निरखूं भरतार। अ०
ने: आया थांके द्वार पर, ए राजुल, लेय सकल परिवार।
तोरण पर रथ आवियो, ए राजुल, पशुजन करी पुकार। अ०
रा: वाड़ो भरयो पशुओं तणो, हो प्र० देवण तांई भात।
आप पाछा क्यो फिर गया हो प्र० आकर स्वामी नाथ। अ०
ने: एक म्हां के ही कारने, ए राजुल, लाखां को घमसान।
अपणो पीर जाणो जिसी, ए रा० पर की करो पिछान। अ०
रा: एतो काम संसार का, हो प्र० यों ही चलता जाण।
घर आया महमान को हो प्र० करणो पडे सनमान। अ०
ने: दुःख जोक दुःखणा, ए राजुल, पाक जीक पीर।
ए भरण बोल्या जीव के ए राजुल, बहे नेण सुं नीर। अ०
मेरे तो वर आप ही, हो प्रभुजी, और न दूजो कोय।
अर्ज यही है आपको, हो प्र० संग में राखो मोय। अ०
ने: ए संसार असार है, ए राजुल, ज्यों आया यूं जाय।
मूरख नर समझे नहीं ए राजुल, ज्ञानी पुण्य कमाय। अ०
रा: सुणयो ज्ञान जो आपको, हो प्र० यहा मेरे मन भाय।
करू भजन प्रभू पिछ हो प्र० जन्म मरण मिट जाय। अ०

नेः जिण माहो मुख उपजे, ए राजुल, वो हो करो विचार।
सदा रया नहीं रहवसी ए रा० धन जोबन परिवार। अ०
राः ब्रह्मचय व्रत पाल सूं, हो प्रभूजी, लेउं प्रतिज्ञा धार।
दया धर्म आराध सुं, हो प्र० बरते मगला चार। अ०
नेः नेम-राजुल गिरनार पे, हो सुरता लीनो संजम भार।
"जीतमल" भज सिद्ध ने, हो सुरता, पहुँचा मोक्ष मजार। अ०

॥ परनार ॥

रंग पतंङ्ग है नारी को, जैसे संध्या को भान।
मूरख मन लवल्या लगी, धरे निरन्तर ध्यान॥

——*'राजा भरतरी'——

(तर्जः—कव्वाली)

बीना विचारे जो करे, परनारी से प्यार है।
मदिरा-मोहनी में फंसे, उस प्रेम को धिक्कार है॥ टेर॥
(शेर) उज्जैन नगरी मांयने, राजा हुए एक भरतरी,
रानी थी जिनके पिंगला, जो हुश्न में दिखे परि,
करता प्रजा की पालना, राज्य ज्यूं धर्म राज था,
चैन की वंशी बजे, सब प्रकार का सुख साज था,
(चलत) पिंगला पर प्रेम भी राजा का बेशुमार है॥ मदिरा॥ १
एक समय गई घुमने, रानी ले सखियां संग में,
रस्ते में एक नौजवान बैठा, थी जवानी उमंग में.
देख मोहित हुई रानी, सखी भेजकर बुलवा लिया,

करके उससे बात, अपने अस्त बल में रख दिया,
(च० नाम था अश्वपाल, करता रानी के संग प्यार है ॥ म०
एक ब्राह्मण अमर फल ले, आया फिर दरबार में,
देख राजा खुश हुआ, दिया धन्न माल उपहार में,
अब लेके फल राजा यूं सोचे गर जो इसको खाऊंगा,
रानी मरेगी सामने, पर मैं अमर रह जाऊंगा,
(च०) होगा मुझको दुःख, इसकी रानी को दरकार है । म०
सोच कर राजा ने वो फल, रानी को जाके दिया,
करके बहाना स्नान का, रानी ने वो फल रख लिया,
अब सोचे रानी फायदा, क्या मुझे फल पान से,
दे दूं जा अश्वपाल को, जो चाहता है जी जान से,
(च०) सोच कर रानी ने दिना, अश्वपाल को जार है । म
इधर करता प्रेम अश्वपाल, एक वेश्या नार से,
दे दिया फल जाके उसको, वश में हो व्यभिचार से,
अश्वपाल से लेके फल, वेश्या ने उसको रखलिया,
फिर गई राज दरबार में, राजा को गाके खुश किया,
(चा०) भेंट कर दिना वो फल, राजा कर सत्कार है । म
अमर फल को देख राजा, हुए अचम्भे मांय जी,
हो न हो है फल वही, जो दिया रानी को जाय:जी
अब पुछते वेश्या से राजा दे सांच सब बतलाय जी,
ए अमर फल कहां से आया, कौन दिना लाय जी,
(च०) अश्वपाल ने दिना ए लाके फल सरकार है ।

सुनकर वचन राजा तुरत, अश्वपाल को बुलवा लिया,
पूछा सारा हाल उसने साफ साफ बतला दिया,
करता पिंगला से प्यार, यह फल उसीने ला दिया,
वेश्या को दिना जाय, यह सब काम मैंने ही किया,
(ज०) सुनके राजा हुकम दिना, करलो गिरफ्तार है । म० ।
काला मुंह करके इसे फिर गधे पर बिठलावना,
जुतियों का हार इसके, गले में पहिरावना,
जमीं में गड़वा के फिर जूतों की मार लगावना,
पर नारी से प्रेम का पूरा मजा बतलावना,
(च०) सुनके राजा के वचन, किन कहे अनुसार है, । म० ।
अब सोचे राजा मेरी जो थी प्राणों से प्यारी प्रिया,
प्रेम के वश होके उसने मुझको भी धोका दिया,
ईश्वर का किना ध्यान फिर वो अमर पद को पा गया,
झूँठा समझ संसार योगी होकर वन में चल दिया,
(च०) 'जीतमल' मत तक पराई, जवानी तो दिन चार है । म० ।

"सात व्यसन"

जुआ खेलना, मांस, मद, वेश्या संग शिकार ।
चोरी, पर रमणी रमण, सातों व्यसन निवार ॥
(तर्ज सुनो सब सत पुरुषों का ज्ञान)

चतुर नर व्यसन ए सात निवार
जुआ, मांस, मद, शिकार, चोरी, वेश्या और परनार ॥ टेर ।
जूए का देखा है ए हाल पलक में न्याल और कंगाल,
फले फुले न जुए का माल, भूलकर भी न ए आदत डाल

दोहाः जुआ खेलन हानि है ,सुखसम्पत्ति को नाश
राज काज नल से छुटे, पांडव गए वनवास,
जुए में खोए सुख अपार ॥ जुआ ॥ १ ॥

मांस में होय जीव संहार, जीवित पर चले दुधारूधार,
करे जो कोई मास अहार, चोरासी में भटके वो जार,
दोहा: जीव दया न पालजी, मांस नरक को द्वार,
जीव रक्षा हित नेमजी ने, त्यागी राजुल नार,
सुनि जब पशुआं तणी पुकार, ॥ जुआ ॥ २ ॥

मद में क्या छाया अज्ञान, अरे तूं कर मदिरा का पान,
इसी में खो बैठेगा जान, छोड़ नर जो चाहे कल्याण
दोहा: मद मदिरा जो सेवन करे, इज्जत होय ख्वार,
पड़ा रहे मल मुत्र में मुंह पे कुत्ते चलावे धार
नशा सब सुध बुध देय बिसार ॥ जुआ ॥ ३ ॥

शिकारी क्या मारे, तक तक तीर जांणता नहीं पराई पीर,
पलक में देवे कलेजा चीर, बहे निर्बल के नेणो नीर,
दोहा: बुरा है शोक शिकारका जीवो का घमसान
हाय जीव को जो कोई लेवे, करे नरक सामान,
भूल मत खेलो खेल शिकार ॥ जुआ ॥ ४ ॥

चोरी का व्यसन बुरा नर जान, लगे सहीदेर बिगड़ते शान,
जगत में होय बहुत बदनाम, अन्त में भी खोटे परिणाम,
दोहा: आदत पड़ी छुटे नहीं, चाहे घर या बार,
पकड़ा आवे तो राजा डंड, आगे यम की मार,

चोरो की मत ना आदत डार ॥ जुआ ॥

बुरा है वेश्या के जाना, माल निज मुफ्त में लुटवाना,
नागिन इसे काली समझ जाना डस्यों फिर पुछें नहीं ॥
दोहा: जब तक जर हो, तब तक यारी, वरना और ह
कभी इसके, कभी उसके बगल में, यह रंडी का
गुणो रहिजो बचकर हरबार ॥ जुआ ॥

करे जो परनारो से प्यार, है उस नर को लाखो धिक्कार
पकड़ा जावे तो जूतों की मार, बतावे बुरा सभी संसार
दोहा: परनारी पेनी छुरी, तीन ठोर से खाय,
धन छीजे, जोबन हरे, मुयां नरक ले जाय,
"जीतमल" रह हरदम हुशियार ॥ जुआ ॥

मम बुद्धि के अनुसार लिखी ए, पुस्तक चतुर सुजान।
भूल चूक माफ करो, हूँ बालक नादान ॥

शीघ्र प्रकाशित हो रहे हैं

जीत संगीत माला का पुष्प चौथा:—

जीत की प्रार्थना

उर्फ

गणेश गुण महिमा

(पूज्य श्री १००८ श्री गणेशी लाल जी म. के गुणानुवाद की अपूर्व रचना)

साथ ही

जीत ज्योति भाग पाँचवा

सर्व श्रेष्ठ एवं उत्तम रचनाओं का अपूर्व आनन्द

नई तैयारी, नया डिजाइन, नया भाग

तथा

जीत संगीत माला का पुष्प पाँचवा:—

जीत की ललकार

"मुनिराजों चेतो जरा, युवकों करो सुधार,
पंचो पढ़कर प्रेम से, करो जाति उद्धार ॥"

आदि रचनाएं शीघ्र सेवा में उपस्थित हो रही हैं

इन्तजार किजिए

जैन युवकों से

श्री श्वे० स्थानक वासी जैन युवक संघ अजमेर

* संक्षिप्त परिचय *

बीसवीं सदी उन्नति का युग है, प्रत्येक राष्ट्र, समाज धर्म व व्यक्ति का ध्यान अपनी उन्नति की ओर जा रहा है, उन्नति के पथ प्रदर्शक के रूप में युवकों को आह्वान किया जा रहा है, युवक कोरा पथ प्रदर्शक ही नहीं प्रत्येक राष्ट्र व समाज का कर्ण धार रक्षक भी है सबकी आशा पूर्ण दृष्टि युवकों की ओर लगी हुई है। युवक की भी जिम्मेदारी हो जाती है कि वह राष्ट्र व समाज के उन्नति के कार्य में अपना हाथ बटावें। युवकों को कुछ करना ही चाहिये।

इसी मानव कर्त्तव्य से प्रेरित होकर स्थानक वासी जैन समाज की सर्वाङ्गीणय उन्नति के हेतु श्री मज्जैना चार्य पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी महाराज साहब के सदुपदेश से श्री श्वे० स्था० जैन युवक संघ की अजमेर में स्थापना हुई अब तक संघ अपने कर्त्तव्य कार्य पर आरूढ़ है और यथा शक्ति समाज सेवा का कार्य बजा रहा है

हमारा भारत के प्रत्येक जैन नवयुवक बंधु की सेवा में नम्र निवेदन है कि वे भी अपने २ नगर में इसी प्रकार जैन युवक संघ के नाम पर अपना संगठन बनावें। तथा अजमेर के उक्त जैन युवक संघ से सम्बन्ध स्थापित कर एक अखिल भारत वर्षीय जैन युवक संगठन के कार्य में सहयोगी बनें।

भवदीय

मंत्री, श्री श्वे. स्थानक वासी जैन युवक संघ अजमेर

जीत-ज्योति

प्रथम हिस्सा

दर्द हो दिल में अगर, तू दरअसल इन्सान हो।
मर्द हो "निर्धुम" मादर, हिन्द की सन्तान हो॥
गर तुझे अच्छे बुरे की, वाकई पहचान हो।
तू बहादुर है तो अपनी, कौम पर कुर्बान हो॥
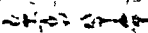
रचयिता:—

कुँ० जीतमल चोपड़ा
अजमेर

मूल्य =)॥
ढाई आना

* अमर प्रेस अजमेर *

शीघ्र प्रकाशित हो रहा है

—०जीत ज्योति भाग चोथा०—
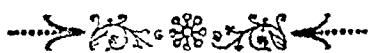
जिसमें आप सभाओं, जलूसों व धार्मीक उत्सवो के लिये आजकल की फिल्मों व मारवाड़ी तर्जों पर बनाए हुए ईश भक्ति उपदेशी भजन व जोशीले गायन, तथा साथ ही सन्त मुनिराजों के उपयोगित दान, शील आदि विषयों पर बनाई हुई लावणीयों का अपूर्व आनन्द प्राप्त करेंगे।

॥ श्री वितरागायनमः ॥

जीत ज्योति

भाग तीसरा

वीर प्रभो ! वर दो यही
जागे जैन समाज ।
जीत ज्योति जग में जगे,
ले उन्नति के साज ॥

रचयिता:—

कुं० जीतमल चोपड़ा

अवैतनिक मन्त्री—

श्री श्वे० स्थानकवासी जैन युवक संघ, अजमेर

प्रकाशक:—

श्री० श्वे० स्थानकवासी जैन युवक संघ, अजमेर

वि } वत्सरी २००३ { मूल्य ≈)॥ ढाई आना

जीत ज्योति भाग तीसरा

पहले से ग्राहक बनने वाले सज्जनों की शुभ नामावली

५०० श्री नोरतमलजी रूपराजजी गोटेवाले अजमेर
३०० श्री हेमचन्दजी सा० हिंगड़ "
३०० श्रीमती सोभाग्यदेवीजी बोहरा "
३०० श्री जसराजजी जेठमलजी बोकड़िया ब्याव
२५० श्री मिलापचन्दजी धूलचन्दजी विनायका त
१५० गुप्त नाम से

॥ श्री वीतरागायनमः ॥

जीत ज्योति

भाग ३ तीसरा

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गोतम प्रभू,
मंगलं स्थुलि भद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।

१. वीर स्तुति

सिद्धारथ के लाडले, त्रिसला के नन्दना,
महावीर तेरे चरण मे हो मेरी वंदना ॥ टेर ॥

जगत शिरोमणी, जीवन आधार, जैन जग स्वामी हो तारणहार,
अगम अगोचर तू अविकार, नित्य निरजन ओ निराकार,
शिवपुर वासी त्रिलोक चंदना ॥ महावीर० ॥

करजो कृपा मुझ पे दीनदयाल, रखजो नजरियां हो सेवक निहाल,
दीजो वल बुद्धि दद अच्चर को टाल, लीजो शरण में कटे भव जाल,
है "जीत" की यही विनती आनन्द कन्दना ॥ महावीर० ॥

—•—

(तर्ज—जिन्दगी है प्यार की प्यार से बिताएजा)

वीर प्रभू, वीर प्रभू, वीर गुण गाएजा,
वीर ही का प्यारा झंडा केसरियो लहराएजा,
विश्व में फहराएजा ॥टेर॥

जाग जैनी वन्धु आज, उन्नति के सजाले साज,
इस झंडे के काज प्यारे तन, मन. धन लगाएजा,
सर्वस्व लुटाएजा ॥ वीर० ॥ १ ।

रख झंडे की शान को, प्यारी कोमी आन को,
यश. कीर्ति और मान को, वढ़ा सके बढाएजा,
शुभ फल पाएजा वीर० ॥ २

कुरीतियों से रहना दूर, फूट का मस्तक कर चूर,
संगठन भरपूर करके एकता बढाएजा,
बिछुड़ों को मिलाएजा ॥ वीर० ॥ ३

झंडा तेरे हाथ में, जय विजय है साथ में,
आगे ही हर वात में तू कदम बढाएजा,
"जीत" नित पाएजा ॥ वीर० ॥ ४

--*--

(तर्ज. आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है

धर्म युद्ध में डट जाओ, अब यही कोमी नारा है,
जाग उठो २ ए जैनी वन्धु, वीरो ने ललकारा है ॥ टेर ॥
आज हमारी भारत भू को, गैरों ने आ घेरा है,
सत्य धर्म मिट गया हिन्द का छाया घोर अन्धेरा है,
य नहीं सोने का वीरों, अब तो हुआ उजारा है ॥ जाग० ॥१॥

फूट अविद्या से निर्धन ए, भारत हुआ विचारा है,
हिंसा ने किया राज यहां, अहिंसा ने किया किनारा है,
वीर बनो और डटो समर में, यही फर्ज तुम्हारा है ॥ जाग० ॥२॥
करो संगठन हिल मिल कर जिससे हो जाति सुधारा है,
दुनियां में लहरादो फिर से, जैन का झंडा प्यारा है,
दिखादो जग को फिर से वीरों, अहिंसा धर्म हमारा है ॥ जाग० ॥३॥
तुम न किसी से आगे झुकना, चाहे जुल्म कोई हारे,
खुशी २ सह लेवो प्यारे, सत्य के आगे सब हारे,
'जीतमल' जग में फिर एक दिन चमके जैन सितारा है ॥ जाग० ॥४॥

—*—

(तर्ज : सावन के नजारे हैं)

धन्य भाग्य हमारे हैं, अहा, अहा ॥ टेर ॥
आज के दिन जग में, 'जैनियो', आज के दिन जग में,
महावीर पधारे हैं ॥ धन्य० ॥
राजा 'सिद्धारथ' के, माता 'त्रिसला' के 'वीर प्रभो'
माता त्रिसला के नैनों के सितारे हैं ॥ धन्य० ॥ १ ॥
राज के सुख को छोड़ा, दुनियां से मुख मोड़ा "वीर प्रभो"
दुनियां से मुख मोड़ा, किया धर्म प्रचारे हैं ॥ धन्य० ॥ २ ॥
तुम्हे ढोंगी समझ कर के, ग्वाला ने कीले ठोके, "वीर प्रभो"
ग्वाला ने कीले ठोके, फिर भी नहीं हारे हैं ॥ धन्य० ॥३॥
पढा धर्म पाठ प्यारा, चंड कोशिक को तारा, "वीर प्रभो"
चंड कोशिक को तारा, भव जीव उद्धारे हैं ॥ धन्य० ॥४॥

तुम हो अन्तरयामी, करो नैया पार स्वामी "वीर प्रभो"
करो नैया पार स्वामी, खड़ा "जीत" द्वारे है ॥ धन्य० ॥५॥

—※—

(तर्ज : जब तुम्हीं चले परदेश, लगा कर ठेस. हो प्रीतम प्यारा)

जब तुम ही चले गिरनार, छोड मझधार,
हो प्रीतम प्यारा, दुनियां में कौन हमारा ॥ टेर ॥
संग मेरे व्याह रचाया था, ए लग्न सभी मन भाया था,
ले जान साथ आए नाथ, खुशी जग सारा ॥ दुनिया० ॥
तोरण पर रथ ले आए थे, बाड़े के पशु चिल्लाए थे,
सुन पुकार फिर गए नाथ, ए क्या दिल धारा ॥ दुनि० ॥
मैं भी तुम संग संग आऊंगी, एक तेरा ही ध्यान लगाऊंगी,
है और कौन जब तुम्हीं ने किया किनारा ॥ दुनियां० ॥
ए कंकड़ डोरा और सभी सिणगारा, है दासी दास सुख राज का सारा
बिन पिया तुम्हारे लगता मुझको खारा ॥ दुनियां०॥
नेम-राजुल गिरवर आए थे, ले संयम कर्म खपाए थे,
करो नैया पार है तेरा ही "जीत' सहारा ॥ दुनियां० ॥

—※—

(तर्ज . बेदर्द जमाना है रे बेदर्द जमाना)

झूठा ए जमाना, अरे झूठा ए जमाना,
धोखे की ए दुनियां है अरे दिल न लुभाना ॥ टेर ॥
फंस कर के माया बीच तूने जन्म बिगारा,
दिन रात किया फिक्र सहे कष्ट अपारा,
सब छोड़ यहीं होगा, खाली हाथ ही जाना ॥ धोके ॥

झूला झुलाया पुत्र को आशा के पालने,
सेवा करेगा अपनी समझा माँ बाप ने,
देकर दगा पहले ही, हो जाय रवाना ॥ धोके ॥
जब तक हो पैसा पास, हजारों ही मित्र है,
आफत में रहे दूर ज्यों मिट्टी के चित्र है.
जिनके न दिल, न दर्द न मोहब्बत का तराना ॥ धोके ॥
समझा था भाई बहन पति पत्नि है नाती,
देखी जो आंखें खोल हैं मतलब के ही साथी,
है अन्त यही देह मिट्टी मांय मिलाना ॥ धोके ॥
करले भलाई जगत में तू प्राणी मात्र की,
भगवान की कर भक्ति देख बातें शास्त्र की,
जीवन का यही ध्येय सुयश "जीत" कमाना ॥ धोके ॥

—❀—
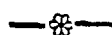
(तर्ज : अँखियां मिला के, जिया भरमाके, चले नहीं जाना)
ब्याह रचा के, पिया घर लाके, चले नहीं जाना ॥ टेर ॥
आज ही तो ब्याह कर लाए, पिया घर आठों नारी,
आज ही कहते हो हमने, संयम की दिल में धारी । ब्याह ॥
जो ऐसा ही था गर स्वामी, तो हमको क्यों लाए,
अब तो हम सब हुई तुम्हारी तुम्हें छोड़ कहां जाए ॥ ब्याह ॥
अर्ज यही है स्वामी तुमको न जाने देगी,
आठों ही सैयां तेरे पइयां पड़, यूं कहैगी ॥ ब्याह ॥
दे उपदेश आठों को तारा, मात पिता परिवारा,

राज पाट धन धाम छोड़ कर देखो संयम धारा ॥ ब्याह ॥

चोर पांच सो जो आए थे, करने वहां पर चोरी,

हुए संग जम्बु के प्रीति, "जीत" प्रभू संग जोरी ॥ ब्याह ॥

—*—

(तर्ज:—अब तेरे सिवा कौन मेरा कृष्ण कन्हैया)

अब तेरे सिवा कौन मेरी, लाज बचैया ।

भगवान महावीर करो पार आ नैया ॥ टेर ॥

राजा दधिवाहन की हूँ मैं राजकुमारी ।

किस्मत से घर घर में बिकी होके दुःखयारी ॥

ली मोल धनवाह सेठ, दे पायक को रुपैया ॥ भग० ॥

मूलां सेठाणी सेठ की, करती थी अत्याचार ॥

एक दिन वो मोका देखके, कोठे में दीनी डार ।

पावों में बेड़ी डालदी, हाथों में हथकड़ियां ॥ भग० ॥ २ ॥

सिर को मुंडाया वस्त्र भी सब लिये उतराई,

लहंगे की लांग चढ़ा के निज लाज बचाई,

कोठे में करदी बंद वो धारी न दिल दया ॥ भग ॥ ३ ॥

तीन दिन के बाद आज, सेठजी आए,

देखी जो कोठा खोल, दिल में बहुत घबराए,

आई मैं थली बीच, लागी भूख सतैया ॥ भग ॥ ४ ॥

उड़दों ही के थे बाकले, दे सेठ पठाए,

लेने गए लुहार इधर आप यहां आए,

हुए मनोरथ पूर्ण मेरे हर्ष बधैया ॥ भग ॥ ५ ॥

आके क्यों फिर गए आप, बीन अहार प्रभु प्यारे,

नैनो न मावे नीर दिल ए धीर न धारे,

उड़दों का ही जो अहार, हो त्रिसला के कन्हैया ॥ भग ॥६॥

हुआ अभिग्रह पूर्ण प्रभु ने आहार झट लीना,

कंचन भी बरसा खूब सू' जयकार बहु कीना,

नैया भॅवर में "जीत" रखो लाज खिवैया ॥ भग ॥ ७ ॥

—×—

(तर्ज : आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है)

आज जैन झंडे के नीचे फिर हमने ललकारा है,

जाग उठो २ ए जैनी बन्धु प्रगट हुआ उजियारा है ॥टेर॥

सब से पहले ऋषभदेव भगवान ने इसको रोपा था,

भरत चक्रवर्त्ती के हाथ फिर प्रभु ने इसको सौंपा था,

उसके बाद तेईस तिर्थङ्कर किया बहुत विस्तारा है ॥ जाग ॥

चौवीसवें भी वीर प्रभू ने फिर से इसे उठाया था,

सदुपदेश सुना भारत का उजड़ा चमन खिलाया था,

उनके बाद हुए गोतमजी ने इसका किया प्रसारा है ॥ जाग ॥

आज इसी झंडे को कर में, अब मुनियों ने धारा है,

जैन की ज्योत जगाते जग में, करते धर्म प्रचारा है,

पर फूट, अविद्या पापि ने, भारत पे जाल निज डारा है ॥ जाग ॥

भारत के प्रिय लालो जागो, समय नहीं ए सोने का,

वीर बनो और आगे आवो, अवसर यह नहीं खोने का,

आज दीन भारत मां को, तुम्हारा ही एक सहारा है ॥ जाग ॥

करो संगठन हिल मिल कर और कुरीतियों से रहना दूर,
भारत मां की विपद हरो, ए वीरो तुम बन कर के शूर,
सत्य, अहिंसा क्षमा और संयम, यही शस्त्र हमारा है ॥ जाग ॥
अटल प्रतिज्ञा यही हमारी कभी नहीं नमने देंगे,
झंडा ऊंचा रहे हमारा, विश्व में लहरा देंगे,
केसरिया झंडा ए हमारा प्राणों से भी प्यारा है ॥ जाग ॥
आवो प्यारे भारतवासी, इस झंडे के नीचे आज,
भारत को आज़ाद करेंगे, सजा उन्नति के सब साज,
तन, मन, धन दे वार "जीतमल" इस झंडे पर सारा है ॥ जाग ॥

—*—

तर्जः— घटा घन घोर घोर. मोर मचावे शोर

समय बलवान जान, तजो नर अभिमान, प्रभु गुण गाजा ॥
एक समय हरिश्चन्द्र राव ने भरा नीच घर पानी,
काशी बीच कंवर को बेचा बेची तारा रानी,
मुसानी भेष धार, दुःख सहे अपार, सत्य के काजा ॥ गा
एक समय श्री रामचन्द्र भी, हो गए वन के वासी,
रावण ने धर कपट रूप सीता को, जाल में फांसी,
बिछुड़ गई प्यारी सिया, करती वो पिया २ आन छुजाड़ा । गा
एक समय श्रीकृष्ण जगत में थे बल धारी नामी,
मरते समय मिला नहीं पानी, तीन खंड के स्वामी,
तेरी तो क्या है हस्ती, किस पे ए छाई मस्ती जरा बतलाजा ॥ गा
दुनियां को कर फत्तह सिकन्दर कहता मेरा मेरा,

काल चक्र ने आन दबाया, जमीं में कर दिया डेरा,
पसारे दोनों हाथ खाली, ऊपर से मिट्टी डाली, भूला मत्र सा जा । गाजा
सुख देख मत फूल अरे मन, दुःख देख नहीं रोना,
"जीतमल" फंस माया जाल में, जन्म वृथा मत खोना,
करो प्रभू भक्ति प्यारी, तन मन से होके, वारी लगन लगा जा ।गाजा।

—*—

(तर्जः—दुख है ज्ञान की खान, मनुआ)

मत फूले सुख जान, मनुआ । टेर ।
सुख वैभव पा पुन्य कमाते, वही हैं चतुर सुजान । मनुआ ।
पुर्व जन्म के प्रबल पुन्य से, मिल गए सुख महान,
धन दोलत और मित्र कुटम्बी, ऊँचे महल मकान, । मनु । ।
देख सभी सुख को जो फूला, भूल गया निज भान,
मोह माया के फंसा जाल में, ओ भोले नादान, । मनुआ ।
कौन है अपना, कौन पराया, किया न इसका ध्यान,
देश, धर्म, और जाति न्याति का, कर न सका कल्याण, । मनुआ ।
दुखिया के दुःख को नहीं जाने, वो कैसा इन्सान,
उसका सुख एक फूल के मान्निद, आखिर धूल समान, । मनुआ ।
सुख दुःख और यहां तक तू भी, दो दिन का महमान,
"जीत" धन्य व नर जो सुख में, दुःख की करे पिछान, । मनुआ ।

—※—

(तर्जः—सुख दुःख एक समान, मनुआ)

जीत सके तो जीत, जीत रे ॥ टेर ॥
अष्ट कर्म दल दूर हटा कर, करले धर्म से प्रित ॥ जीत रे ॥

ए संसार सराय समझ ज्यों, चन्द्र सुर्य्य की गीत,
एक आवे एक ावे निशदिन, रही उमरीयां बीत ॥ जीत रे ॥
काम, क्रोध की तेज अग्न जो, हो रही है प्रज्वलीत,
लोभ, कपट के प्रबल शत्रु से, मत होवे भयभीत ॥ जीत रे ॥
मोह माया के जाल में फंस कर करता किससे प्रीत,
चण भंगुर है काया जिनकी, उनकी क्या परतीत ॥ जीत रे ॥
विती तांय विसार दे बन्दे राख रही को पुनीत,
लगा लगन प्रभू के चरणो में, गा, गा ज्ञान के गीत ॥ जीत रे ॥
विषय विकार दे त्याग, समझ कुछ पाप पुन्य की रीत,
दुर्लभ नर भव सफल बनाले, यही है सच्ची "जीत" ॥ जीत रे ॥

—*—

(तर्जः—सुनादे २ कृष्णा,)

धर नर, धर नर, धर नर ध्यान,
ईश्वर से प्रिती कर, छोड़ अभिमान । टेर ।

दुनियां है मतलब की सारी, मात पिता नहीं संगी है नारी,
मतकर २ मान, छोटी सी जिन्दगी का क्या करे गुमान । धर
आया जहाँ से आया था नंगा, जाएगा फिर भी यहां से तू नगा
मुट्ठी भर २ दान दे चलो तो वहां भी तेरा होवेगा कल्याण । धर
फूट हटाकर प्रेम बढाओ, हिलमिल कर प्रभू के गुण गावो,
धर्म पर २ दो जान, वक्त पे चाहे होवे सर कुरबान । धर
कपट छल, छिद्र को छोड़ो, अष्ट कर्म जंजीर को तोड़ो,
। कमावो २ आन, जिससे दुनियां बीच में बेठजी तेरीशान । धर

दया धर्म की ज्योत जगावो, घर घर अहिंसा का पाठ पढ़ावो,
सत्य पर २ दो प्रान, "जीतमल" कहे सत्य से राजी भगवान । घर

—x—

(तर्ज—मत भूलो कदा २ वीर प्रभूजी ने वंदो सदा)

मत भूलो कदा रे, मत भूलो कदा
ग्यारा ही गणधर वंदो सदा ॥ टेर ॥

इन्द्र भुतीजी पहला जान, प्रात उठ नित धरजो ध्यान ॥ मत ॥
अग्नि भुतीजी है गुणवान, वायु भुतीजी तीसरा जान ॥ मत ॥
विगत भुतीजी ने वदू हरबार, सुधर्मा स्वामी है ज्ञान भंडार ॥मत॥
मंडी पुत्र जी छठ्ठा मन भाय, मोरी पुत्रजी मोटा कहाय ॥ मत ॥
आठवां अकंपित जी जान नवमा अचल जी है दया निधान ॥मत॥
मेतारजजी मेट्यो दुःख, नमो प्रभासजी वरते सुख ॥ मत ॥
'जीतमल' नित करो गुणगान, ग्यारहा ही गणधर है रत्ना की खान।मत।

—*—

(वीर गुण गाईजा रे गाईजा)

शरण मे आईजा रे आईजा महावीर को ध्यान लगाईजा ॥टेर॥
प्रभू सिद्धारथ के प्यारे, त्रिसला के नन्द दुलारे,
भारत के वीर सितारे, नित गुण गाईजा रे गाईजा ॥ म ॥
पढा पाठ धर्म का प्यारा, भवजीवों का उद्धारा,
अहिंसा का किया प्रचारा, ज्योत जगाईजारे जगाइजा ॥ म ॥
आज भारत पर दुःख छाया, सत्य धर्म को भूल गमाया,
आ फूट ने अड्डा जमाया, फिर से आईजा रे आईजा ॥ म ॥

गऊ माता तोय बुलाती, बे कसूर मारी जाती,
तुम बिन है कौन फिर साथी, आन छुड़ाईजा रे छुड़ाई जा । म ॥
कहे दास "जीतमल" तेरा प्रभु रखना ध्यान तुम मेरा,
काटो भव भव का प्रभु फेरा, पार लगाई जारे लगाई जा ॥ म ॥

—*—

(तर्ज: वंदू इग्यारह गणधार)

वंदू सोला सतियां सार ॥ टेर ॥

ब्राह्मी, सुन्दरी हैं, विख्यात, ऋषभदेव प्रभू की अंग जात,
जैन धर्म को कियो प्रचार ॥ वंदू ॥ कोशल्या, सीता सुखकार,
पति सेवा में हो न्योछार, वन मांही सह्या कष्ट पार ॥ वंदू ॥
राजमतिजी जा गिरनार, संजम लियो संग नेम कंवार,
छोड़ दिया सब सुख संसार ॥ वंदू ॥ छठ्ठा श्री कुन्ताजी मान,
पांडव नारी द्रोपदी जान, सती सातवीं है सुखकार ॥ वंदू ॥
आठवीं चन्दन बाला नार, घर २ बिक सह्या कष्ट अपार,
सुर आ कीना जयजयकार ॥वंदू ॥ मृगावतीजी नवमां जान,
सती चेलणांजी गुणवान, प्रभावतीजी है सुखकार ॥ वंदू ॥
काचा सूतनी चालणी धार, कुवा से लियो नीर निकार,
खोल्यो सुभद्रा चंपक हार ॥वंदू ॥ बिछुड़ गई पति से वन मांय,
फिर भी धीर रख्यो दिल मांय, मिल्या नल दमयन्ती नार ॥वंदू॥
सुलसा शिवाजी, पदमावती, नित उठ वंदू सोला सती,
"जीतमल" करजो भव पार ॥ वंदू ॥

—❀—

(तर्जः—मैं न खलिए पास खड़ो, खेलो मेरे राजा)

जो होते गर ए वीर, तो क्यों आज कलयुग आता ॥ टेर ॥
घर घर त्रिके पर सत्य न छोड़ा जो होते "हरिचन्द्र"
क्यों असत्य आज छाता ।जो। देश के लिए खाई घास की रोटी
जो होता राणा 'प्रताप' क्यों ए आज दुख दिन आता । जो ।
अहिंसा का ज्ञान दे जग को उद्धारा, जो होते महावीर,
क्यों ए आज युद्ध छाता । जो । राम लखन सम भाई भाई
जो करते सब मिल प्यार, तो क्यों राग द्वेष छाता । जो ।
देश के लिए धन दौलत त्यागी, जो होता भामाशाह,
सेवा देश की कर जाता । जो । पक्षी हित निज जांघ कटाई
जो होता मेघरथ, तो फिर हिंसा बंद कराता ॥ जो ॥
आज भारत मां तुम्हें पुकारे, फिर आवो जल्दि वीर,
(तुम्हें "जीतमल" बुलाता ॥ जो ॥

—*—

(तर्जः—मेरे बिछड़े हुये साथी तेरी)

त्रिसला के नंद प्यारे, तेरी याद सताए ॥ टेर ॥
पल, पल में एक तूं ही मेरे, मन को आय लुभाए । तेरी ।
भा त को तुमने अपनाया जैन धर्म का पाठ पढ़ाया,
अहिंसा का दे ज्ञान जगत में, तिर्थंकर कहलाए । तेरी ।
आज घोर अन्धकार छाया, सत्य धर्म को भूल गमाया,
भारत की अब देख दशा को, आंसू भर-भर आए । तेरी ।
भारत मां आहे भरती हैं, गौ माता भी हां, रोती हैं,
निर्दई पापी हत्यारे, गरदन छुरी चलाए । तेरी ।

तुमने जग में धर्म दिपाया, आप तिरे दुनियां को तिराया,
गोतम गणधर से चेलों को, क्यों ना संग में लाए । तेरी ।
महावीर अब जल्दि आवो, भारत को फिर से अपनाओ,
मन मन्दिर में बैठ "जीतमल" तुझको आज बुलाए । तेरी ।

—*—

(धर्म पर डट जाना, कोई बड़ी बात नहीं,)

तपस्या कर करके, हुए वीर भवपार ॥ टेर ॥

किया तप ऋषभ देब भगवान, कष्ट सहे एक वर्ष तक महान,
जग मे धर्म दिपा करके॥ हुए ॥
तपस्या किनी प्रभू महावीर, बरस बारा तक धारयो धीर,
कर्मो को खफा कर के ॥ हुए ॥ किया तप धर्म रूची अणगारो
कड़वा तुम्बा को कियो अहार, भव भव बंध छुड़ा कर के ॥ हुए ॥
किया तप चन्दन बाला नार, तेल में दिया प्रभू को अहार,
जय कार किया सूर आकर के ॥ हुए ॥ किया तप हर केशी मुनिराज,
धन्ना ने सारया आतम काज, कष्ट पे कष्ट उठा कर के ॥ हुए ॥
श्रेणीक राजा की भी दस नार, तप कर कियो आतम उद्धार,
जग में सुयश कमा कर के ॥ हुए ॥ पांडव पांच हुए बलधारी,
तपष्या कर के आत्मा तारी, आवा गमन मिटा कर के ॥ हुए ॥
दान, शीयल, तप भावना भावो, कुछ तो वीरों पुण्य कमावो,
ए "जीत" जगत में आकर के ॥ हुए ॥

—⚘—

(तर्ज:—श्री आदेश्वर स्वामी हो प्रणमु सिर नामी)

प्राणी जन नित उठ ध्याजो हो, गुण गाजो मोटा है जग में,
बीस विरहमान, रटया दुःख मिट जावे ह,

पावे है, सुख सम्पदा कोई निश्चय हो कल्याण ॥ टेर ।
पहला श्री मन्दिर स्वामी हो, युग मन्दिर स्वामी दूसरा,
श्री बाहु स्वामी जान, सुबाहू स्वामी चौथा हो,
सुजात स्वामी पांचवा है सब ही गुण की खान ॥ प्राणी ॥
छठ्ठा स्वयं प्रभु स्वामी हो, ऋषभानन्द स्वामी सातवां,
श्री अनंत विर्यजान श्री सूर प्रभूजी स्वामी हो,
नवमां सिर नामी हे जग में, कोई दसवां व्रजधर मान । प्राणी ।
विशाल धर स्वामी ग्यारवां, चन्द्रानंद स्वामी बारवां,
चन्द्र वाहु को धर ध्यान, चवदवां सुजंग स्वामी हो,
ईश्वर स्वामी पन्द्रहमां, हे नेम प्रभू गुणवान । प्राणी ।
सतहरवां वीर सेन स्वामी हो, बंदू सीर नामी कर जोडी,
श्री महाभद्र स्वामी जान, उन्नीसवां देवयश स्वामी हो,
अजित विर्य बिसवां, कोई नित उठ करूं प्रणाम । प्राणी ।
अष्ट कर्म ने काटया हो, दुःख मेटया प्रभू भव भवका,
प्रभू कियो आतम कल्याण, हृदय "जीतमल" राखो हो,
मत भूलो प्रभू जीने कदा, कोई करोजी सदा गुणगान । प्राणी ।

—*—

(तर्ज—अरि हाय अविधा पापीन कैसे भारत घर कीनो)

अब जाग उठो भारत नर नारी, अरज हमारी ॥ टेर ॥
चमका भारत भाग्य सितारा, गांधी वीर जवाहर प्यारा,
देश का नेता सारा देश पर, तन, मन धन से होरया वारी, । अरज
सुभाष चन्द्र सा नेता थांरा, मातृभूमि हित सब कुछ वारा,
जय हिन्द का नारा लगा के, किया संगठन देखो भारी । अरज ।

आवो भारत वासी प्यारे, बनो उन्ही के सैनिक सारे,
भारत छोड़ो नारा लगाके, मिटादो उदू की हस्ती सारी, । अरज।
सत्य धर्म झंडा लहरावो, कुरूढयां ने दूर हटावो,
अहिंसा को धार, अहिंसा से ही देश को गोरव भारी । अरज।
फिजूल खर्ची से मुख मोड़ो, वस्त्र विदेशी सारा छोड़ो,
करो देश हित त्याग, जिणां सुं मिले "जीत" आजादी प्यारी । अरज।

—※—

(तर्जः रूम झूम बरसे बादलवा.)

घोर अधर्मी बादलवा, दु;ख की घटायें छाई,
वीर प्रभू आजा, आजा, वीर प्रभू आजा ।।टेर ।।
झूँठ, कपट, छल छिद्र, जगत में छा गए छा गए,
ऐसे में तुम स्वामी बतावो, कहां गये, कहां गये,
निश दिन ध्यान लगाऊं रे, तू ही मन भाया मेरे, दरश दिखाजा। आजा।
जब आ कष्ट पड़ा भारत पर, आए थे, आए थे,
देकर के सुज्ञान, सुमार्ग बताए थे, बताए थे,
है "जीत'; भंवर में नैया रे, तुम बिन डूबी जावे, पार लगाजा। आजा।

—×—

(तर्जः जब तुम ही चले परदेश, लगा कर ठेस)

ए जैन जगत आधार, वीर अवतार,
केसरिया प्यारा, भंडा रहे ऊंचा हमारा । टेर।
उठ जाग जाग जैनी भाई, ए समय परीक्षा की आई,
ला रंग कसोटी पर, कंचन सा प्यारा ।। भंडा ।।

ए ही वीरो का बाना है, हंस हंस के प्रान गवांना है,
दे वार झंडे पे तन मन धन तू सारा ॥ झंडा ॥
मत मां का दूध लजाना तू, भारत की शान बढाना तू,
दे वीर प्रभू संदेश, जगा जग सारा ॥ झंडा ॥
आपस में प्रेम बढ़ा कर के, बिछड़ों को गले लगा कर के,
ले "जीत" अहिंसा धार, लगा दे नारा ॥ झंडा ॥

(तर्ज़:—देखो २ जी बदरवा छाए जिया घबराए)
आवो आवो जी कृष्ण मुरारी, अर्ज सुन मारी ॥ टेर ॥
खेलन जुआ खेल बुलाए पांडव पांच बलधारी,
कपट रचाया, जाल बिछाया, दुर्योधन अहंकारी । आवो ।
राजपाट धन धाम हार गए, आई मेरी वारी,
दांव लगाया, फतह न पाया, हारी द्रोपदी नारी । आवो ।
दुष्ट दुशासन नियत बिगारी करना चाहे उगारी,
पति हमारे, मौन को धारे, सभा देख रही सारी । आवो ।
जब आ कष्ट पड्यो सतियां पर, लाज रखी उसवारी,
मेरी बेर, कहां करी देर, आ लाज रखो गिरधारी । आवो ।
सुनि पुकार प्रभू करूणा लाए, आए कृष्ण मुरारी,
चीर बधाया दुष्ट लजाया, महिमा 'जीत' हुई भारी । आवो ।

(तर्जः—ज्ञानी देखो अखियां खोल)
छाडो ब्लेक मारकेट,स्वार्थ वश होकर क्यों काटो गरीबां का पेट ।टेर
जद सूं यो धन्धो मन भायो, भारत पर दिन २ दुख छायो,
भर भर नाज का कोठा, हो गया टट पूंजां भी सेट, । स्वार्थ ।

दियो कष्ट पब्लिक ने भारी, हाथां पेर कुल्हाड़ी मारी,
हो गई मंडी बंद, लगादी कन्ट्रोल की रेट, । स्वार्थ ।
देख फायदो उण से भारी, राशन कार्ड किया फिर जारी,
डेढ़ पाव को दियो पाव, सेठाई दीनी सारी मेट, । स्वार्थ ।
हुआ वस्त्र का हाल बुराई, बढ़िया माल सब दियो उड़ाई,
कर कर एक का आठ हो गया बुगचा वाला सेठ, । स्वार्थ ।
यद्यपि राशन हो गयो जारी, फिर भी काम यो चल रहो भारी,
जवाब 'जीत' कांई देसी, होसी भगवत सूं जद भेंट, । स्वार्थ ।

(तर्जः—धुस्यो बाज्यो रे, महाराजा उम्मेद सिंह को)

धुस्यो बाज्यो रे भारत मे जय हिन्द को । टेर ।
सुभाषचन्द्र सा नेता हमारा, जो भारत वासो वीर प्यारा । धुस्यो
शाह नवाज सहगल ढिल्लन भी, देश के हित कियो त्याग सभी । धु ।
आजाद हिन्द एक फौज बनाई, चलो दिल्ली यहो ठहराई । धु ।
बहनो की भी फौज बनाई, कप्तान हुई लक्ष्मी बाई । धु ।
हुए बन्दी चला मुकदमा भाई, लाल किला दिल्ली मांई । धु ।
करी पेरवी हुए विजेता, ए पटेल, जवाहर से नेता । धु ।
देख संगठन डर गया अरि, तो 'जीत' हुए निर्दोष बरी । धुस्यो

--※--

(छोड़ो ब्लेक मार्केट)

ज्ञानी देखो अखियां खोल, नीति छोड़, अनीति धारी छायो कन्ट्रोल । टेर
भरके नाज का कोठा भारी, पब्लिक ने दियो कष्ट अपारी

तीन सेर का कर दिया दाना, छाई केसी पोल । निती ।
कपड़ा की भर गांठा भारी, दूगणां चोगना को मन धारी,
बढ़िया वस्त्र सब कर दियो गायब, मचाई ऐसो रोल। निती ।
गवर्नमेंट के यो मन भायो, भारत में कन्ट्रोल चलायो,
दस वार दियो कपडो सबने, नाज डेढ पा तोल । निती ।
देख फायदो उण में भारी, पब्लिक जिओ या मरो बिचारी,
दस गज को कियो पांच, दियो फिर नाज पाव भर तोल । निती ।
फिर भी न स्वार्थ छोड़े भाई, ब्लेक मार्केट रया चलाई,
क्या क्या हाल बताऊं देखल्यो हृदय का पट खोल । निती ।
न्याय निती पर जो कोई चलसी, कभी न उण पर आफत पड़सी
"जीत" कपट ने छोड़ लेवो ज्ञान तराजू तोल । निती ।

—*—

शील रतन मोटो रत्न, सब रत्नों की खान ।
तीन लोक की संपदा रही शील मे आन ।।
(तर्जः—अर्ज मारी सांभलो हो प्रभुजी, महावीर भगवान)
सती सत को रखे हो, सुरतां पत राख भगवान ।। टेर ।।
पंच परमेष्ठी को नमूं हो सुरतां, धरूं प्रात उठ ध्यान ।
सत राख्यो एक पतिव्रता, हो सुरतां, जिसका करूँ बयान ।।१।।
चंपापुरी नगरी भली हो राजा, चम्पक सेठ सुजान ।
इसी नगर में सेठ एक, हो सुरतां धनपत रहे गुणवान ।।२।।
हुकड़ा र मुनिराज का, हो सुरतां, सुणया सेठ उपदेश ।
जिण सूं रहे धर्म ध्यान मे हो सुरतां, आगे ही हमेश ।।३।।

अब सती कहे अतिम यही हो प्रभूजी दीनानाथ दयाल।
जोऊ दृढ़ मैं शील में, हो प्रभूजी, लगे वृक्ष के आम ॥२६॥
लग्या वृक्ष के आम भी, हो सुरतां, राखी प्रभूजी लाज।
सती कहे भिक्षा लेवो, हो भिक्षुक, मन इंछत महाराज ॥२७॥
राजा कहे लेवां जदे, हो सेठाणी, गिरे पेड़ से आम।
कच्चा फल लेवां नहीं, हो सेठाणी कर पुरण मम काम ॥२८॥
सती कहे कर जोड़ के हो प्रभूजी, विनय सुनो इसवार।
नगर भूप होवे अगर तो प्रभूजी, संयम पालन हार ॥२९॥
तो आम गिरे इस पेड़ से हो प्रभूजी, लाज रखो इस वार।
गेरयो आम नही पेड़ से, हो सुरतां, राजा करे विचार ॥३०॥
धन्य सती, धन्य सेठजी हो प्रभूजी हाथ संयम को सार।
मुझ अज्ञानी जीवने, हो प्रभूजी लाख लाख धिक्कार ॥३१॥
कर जोड़ अर्जी करूं हो प्रभूजी लेऊं प्रतिज्ञा धार।
मात बहन सम मानसुं, प्रभूजी आज से मैं परनार ॥३२॥
आम गिरावो पेड़ से, हो प्रभूजी लाज रखो इस बार।
सेठाणी से इम कहे, हो बाईजी, फिर से कहो इक बार ॥३३॥
सती वचन उचारिया हो सुरतां, फल्या मनोरथ काम।
शील संयम शुद्ध भाव से, हो सुरतां गिर या पेड़ से आय ॥३४॥
भिक्षा दीनी आम की हो सुरतां शील तणो पर भाव।
सेन बणाई राजवी हो सुरतां गयो महल के मांय ॥३५॥
पत [illegible] म न पालजो हो सुरतां रहिजो दृढ़ हरवार।
[illegible] हृदय रखो हो सुरतां, करते जय जयकार ॥३६॥

अवश्य पढ़िए

जीत ज्योति भाग १, २, ३

जिसमें आजकल की फिल्मों व मारवाड़ी तर्जों पर बनाए हुए प्रभू भक्ति, उपदेशी भजन व जोशीले गायन रखे गए हैं। साथ ही सन्त मुनिराजों के उपयोगित दान, शील, तप, भावना आदि कई विषयों पर लावणियों की भी रचना की गई है।

मूल्य लागत मात्र है

जीत ज्योति भाग पहला ... =)
" " " दूसरा .... ≡)
" " " तीसरा ... =)॥

एक बार अवश्य पढ़िए

"जीत संगीत माला" के पुष्प तीन

जीत चोवीसी ... . =)
जीत का गीत .... –)॥
जीत गुरू गुण महिमा .... –)
६ छः पुस्तकों का पूरा सेट सजिल्द १)

नोट—सो या इससे ज्यादा संख्या में पुस्तक मंगाने पर १।–) सैकड़ा पुस्तक के हिसाब से कमीशन काट दिया जायगा।

पुस्तक मिलने के पते

१ सहस्रकरण जीतमल चोपड़ा
लाखनकोठड़ी अजमेर

२ श्री नेमीचन्दजी चोपड़ा
C/o सेठ घेवरचन्दजी चोपड़ा
नया बाजार, अजमेर

३ श्रीयुत मिश्रीलालजी रंगलालजी पारलेचा
कपड़े के व्योपारी, ब्यावर

४ वैद्य प० गोवर्द्धनलालजी शर्मा
श्री जैन सेवासमिति औषधालय,
ब्यावर

५ हस्तीमलजी लूमड़
C/o शाह उत्तमचन्दजी वस्तीमलजी
उदेपुरिया बाजार, पाली (मारवाड़)

६ श्री सोहनलालजी लोढा, कूकड़ा
पो० कूकड़ा, वाया ब्यावर

७ श्री काल्रामजी कोठारी
C/o श्री सुरज मल जी कनक मल जी कोठारी
मदनगंज (किशनगढ़)

अहिंसा परमो धर्मः

जीत ज्योति भाग चोथा

कुँ० जीतमल चोपड़ा अजमेर)
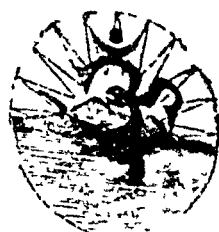
क्या हुआ गर मिट गये
अपने धर्म के वास्ते
बुलबुलें कुर्बान होते
हैं चमन के वास्ते

मूल्य ≡)॥
साढ़े तीन आना

प्रकाशक —

ई आवृति || अवश्य पढिए || सफल रचना

जीत ज्योति भाग दूसरा
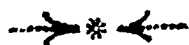
"इजाजत दे माता, लेस्यां संजम भार"

"इस्यो कांई दुखः व्याप्यो, जम्बू राजकंवार"

इसमें आप राजा मोरध्वज, भरतरी, कर्ण, हरिश्चन्द्र, अर्जुनमाली सती चन्दनबाला, जम्बू कुमार, नेम प्रभु आदि महापुरुषों के चरित्र तथा दान, शील, तप, भाव आदि विषयों पर की गई रचनाओं को काव्य के नए कलेवर में पाएंगे।

यह पुस्तक सन्त मुनिराजों, साध्वीयों, तथा गृहस्थीयों के लिए परम उपयोगी है एक बार जरूर पढ़ें मूल्य =)॥

जीत ज्योति भाग तीसरा

आज कल की फिल्मो व साधारण तर्जों पर तैयार किए हुए उत्तम गायनों का संग्रह। मूल्य =)॥

जीत ज्योति भाग १, २, ३, ४, व जीत चोबीसी

पांच पुस्तकों का पूरा सेट सजिल्द मूल्य १) एक रुपया।

मिलने का पता जीतमल चोपड़ा लाखन कोटड़ी अजमेर

जीत ज्योति

भाग चोथा

जिसको अपनी ही पड़ी,
नहीं और का ध्यान।
उस अप्रिय, निर्मोह का,
कैसे हो कल्यान।

रचयिता----

कुँ० जीतमल चोपड़ा

अवेतनिक मंत्रीः—

श्री श्वे-स्था-जैन युवक संघ अजमेर

प्रथमावृत्ति
४०००

२००३

मूल्य ≡)॥
साढ़े तीन आना

समर्पण

गणीवर्य मुनि श्री १००८ श्री किस्तूरचन्द जी म०

के कर-कमलों में

सादर समर्पित

तप, जप संयम मे लीन रहे, कल्याण जगत का करते हैं,
राजा, महाराजा, सेठ, साहु-कारों के दिल को हरते हैं,
वाणी में रस भरा, सभी का जीवन में हित चाया है
जिसने मेरे कवित्व प्रेम का, उजड़ा चमन खलाया है
प्रथम, दुसरा और तीसरा, भाग ए चोथा आया है
इन्हीं की कृपा का फल ए, इन्हीं का सब माया है
इन्हीं श्री किस्तूर मुनि के, कर-कमलो में धरता हूँ,
"जीन" करो स्वीकार इसे, सहर्ष समर्पित करता हुँ।

"जीत"
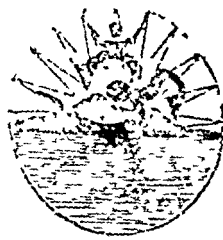
जीत ज्योति

भाग चोथा

मंगलं भगवान वीरो, मंगल गोतम प्रभू
मंगलं स्थुलि भद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम्

वीर स्तुति

तर्ज—हे परमेश्वर नैया मोरी पार लगाय दे

हे प्रभू प्यारे वीर हो तेरी, जय जय जय जय ॥ टेर ॥

"सिद्धारथ" नृप कुल उजियारे, त्रिसला की नैनों के तारे,
प्राण पियारे, हो रखवारे, तुम ही एक सहारे ॥ हो [illegible] ॥

अज अविनाशी जग दुःख भंजन, निर्विकार निकलंक निरंजन,
मुनि मन रंजन, ध्याय सकल जन, [illegible] ॥ हो [illegible] ॥

त्रिभुवन स्वामी, हे जिन नामी, घट घट के हो अन्तरयामी,
हो निष्कामी, शीवपुर धामी, ध्यान [illegible] ॥ [illegible] ॥

"जीत" का है तू ही रखवाला, दद [illegible]
दिन दयाला, हो प्रतिपाला, [illegible]

२, तर्जः—त्रिसला माता तेरे सुत ने

अर्जुन माली, चंडकोशीक, और गोशाला को अपनाया,
था मैं भी तो दास, मुझे क्यों अब तक भव भव भरमाया ॥टेर॥

अर्जुन माली सात जीवों की, निशदिन हिंसा करता था,
हुआ जक्ष का जोर हृदय में, नहीं किसी से डरता था,
राजग्रही के बाहर बाग में, प्रभु आप फिर आए थे,
सेठ सुदर्शन देके ज्ञान, अर्जुन को संग में लाए थे,
देकर संयम उसको भी, सुमार्ग धर्म का बतलाया ॥ था ॥

चंड कोशिक एक सर्प भयंकर, प्राण जीवो के लेता था,
एक फूँकार में गगन पक्षी भी, आ पृथ्वी पर पड़ता था,
करते हुए विहार आप फिर, उस जंगल में आये थे,
देख नाग ने डसा अंगुठा, आप नहीं घबराये थे,
हुआ होश पुर्व भव सुनके, नाग शरण ले सुख पाया ॥ था ॥

गोशाला था शिष्य आपका, हृदय में दुरमति छाई
बतलाके पाखंडी आपको, धाक जमाना निज चाई,
उसने आ तेजो लेश्या का, आप पे फिर प्रहार किया,
हुआ असर उल्टा ही उसका, खुद का जलने लगा जिया,
अन्त समय ले शरण आपकी, कर लिया उसने मन चाया ॥था॥

इसी तरह केई पापी और, अज्ञानी बेचारे थे,
देकर के ज्ञान धर्म का, उनको भी उद्धारे थे,

एक सहारा तेरा है औ', किसी की भी परवाह नहीं,
भव भव बंध कटे यही वर दे और किसी की चाह नहीं,
दास को अपने पास बुलाले, "जीत" शरण तेरी आया ॥ ध्रु० ॥

३, तर्जः—दुःख है ज्ञान की खान मनुआ

भारत में महावीर, पधारो भारत में महावीर । टेर ।
ज्ञान की ज्योत जगाकर हरलो, अब भारत की पीर । पधारो ।
एक समय वो भी था ऐसा, भारत था वेधीर,
देख दशा झट कुंडल पुर में धारण कियो शरीर । पधारो ।
सुना सत्य उपदेश बदल दी, दुनियां की तस्वीर,
दया धर्म का पाठ पढाके, हरी जगत की पीर । पधारो ।
आज उसी भारत पर छाए दुःख के बादल फिर,
हिंसा कलह के प्रबल जाल में, भारत हुआ असीर । पधारो ।
आवो आवो वर्द्धमान अब, चढ भक्तों की भीर,
प्रेम अहिंसा हो घर घर मे, ले ऐसी तदवीर । पधारो ।
धन्य धन्य त्रिसलादे' धन्य हो 'सिद्धारथ' गुणधीर,
"जीत" पड़ी मम नाव भँवर में, पहुचा भव जल तीर । पधारो ।

---

४. तर्जः—अब हम सब का रे तू ही है तारण हारा रे

जग नागिन का रे तूं ही है तारण हारा रे,
मम मेरी, बेर, क्यो देर करो जल्दि निस्तारा रे

हे "विश्वसेन" कुल चंदा, "वामा" देवी के नंदा,

काटो भव भव का फंद, लिया एक तेरा सहारा रे। अब।

प्रभू दया धर्म दिल धारा, कामठ का मान उतारा,

नवकार मंत्र दे सार, नाग नागिन को तारा रे। अब।

हो घट घट अन्तर यामी, हे त्रिभुवन के स्वामी,

हो अजर अमर शिवधामी, बतादे शिवपुर प्यारा रे। अब।

दे ज्ञान लाखों को तारा, मैं भी तो हूँ दास तुम्हारा,

भवदधि भंवर मे नाव पडी, है दूर किनारा रे। अब।

कर महर "जीत" पर आजा, नैया को पार लगाजा,

नहीं अन्य देव की आश, मिला जब पारस प्यारा रे। अब।

५, तर्ज प्रभाती:—प्रभू की लीला का पार न पाया।

छोड़ जग का ए सारा झमेला,

उड़ जायेगा हंस अकेला ॥ टेर ॥

पिता, मात, बहन और भाई, पति पत्नि हो सास जंवाई,

जग में चार दिनों का मेला ॥ उड़ ॥

आके जग में क्या सुकृत कीना, इसपे ध्यान कभी नहीं दीना,

फूला माया मे होकर गेला ॥ उड़ ॥

मानव करता क्यों आशा भारी, लगती काल के नहीं कोई कारी,

देते रह जायगे सब हेला ॥ उड ॥

जैसे कर्म करे वही पावे, प्रभू जिम तिम कर भुगतावे,

वहां पर कौन गुरू कौन चेला ॥ उड़ ॥
"जीत" करले सुकृत जग मांई, संग में जाएगी तेरा भलाई,
पुण्य पाप करे जो जो भेला ॥ उड़ ॥

६, तर्ज:— जय बोल है संग्राम बन्दे

नारी नर की खान प्राणी ॥ टेर ॥
नारी से ही हुए जगत में राम कृष्ण वर्द्धमान ॥ प्राणी ॥
महाराणा प्रताप, शिवाजी पृथ्वी राज चोहान,
धन्य ऐसे वीरों को जाया, रखी हिन्द की शान । प्राणी ।
दुर्गा दास राठोर सरीखे, स्वामी भक्त सुजान,
फंसा नहीं बेगम के फंद मे, समझी मात समान । प्राणी ।
हम्मीर देव वचनों का पक्का, दानी कर्ण समान,
ज्ञानी जन्मे महावीर से, किया जगत कल्याण । प्राणी ।
गज सुकुमार क्षमा के सागर, त्यागी जम्बू जान,
हरिश्चन्द्र से सत्यधारी को, गांधी से गुणवान । प्राणी ।
"जीत" धन्य ऐसी माता को, जाए रतन महान,
वरना लेते जन्म कई नर, पर नहीं एक समान । प्राणी ।

---

७. तर्ज:—नारी नर की खान, प्राणी

नारी नरक की खान, ज्ञानी । टेर ।
प्रेम फंद मे भूल गए कई ऋषी मुनि निज ध्यान ॥ ज्ञानी ॥

विश्वामित्र ऋषी तप करते, जंगल के दरम्यान।
देख अपसरा के रंग अंग का भूल गए निज भान। ज्ञानी।
रहनेमी से ब्रह्मचारी जब, धरा गुफा में ध्यान।
देखी राजुल मोहित हो गए, हुआ होश गुम ज्ञान। ज्ञानी।
मयणरया पर मोहित होकर, मणोरथ खोए प्राण,
युग बाहु से भ्रात को मारा, गया नरक दरम्यान। ज्ञानी।
सज सिणगार लुभाती मन को, बोले मीठी बान,
भाई भाई का प्रेम छुड़ादे, क्षण में ले ले जान। ज्ञानी।
फंस इनके मोह माया में नर, कर न सके कल्यान,
'जीत' धन्य उन महापुरुषों को, तजदी नागिन जान। ज्ञानी।

८, तर्जः— जागो र रे रणवीरों, भारत नैया डूबी जाय
जागो जागो जैनो बन्धु, सब मिल करो परस्पर प्यार ॥ टेर ॥
सत्य धर्म मिट गया हिन्द में, छाया पापाचार,
झूंठ, कपट, छल छिद्र, लोभ में फंसा सभी संसार ॥ जागो।
स्वार्थ वश होकर सब भूले, अपना सद् व्यवहार,
फूट, कलह ने छिन्न भिन्न कर दिए, बड़े बड़े घरबार ॥ जागो।
कई विछुड़ गए लाल जाति के, गैर करे संभार,
समय पड़े अपनाया नहीं, अब करते हो वहिश्कार ॥ जागो।
और कोमें सब जाग गई, अब तूं भी हो तैयार,
कुरूढियों को दूर हटाके, चलो समयानुसार ॥ जागो।

प्रेम बढ़ावो, सबको समझो, आपस में एक सार,

ऊँच नीच का छोड़ "जीत" अब हिल मिल करो सुधार ॥ जा० ॥

६, तर्जः— भारत का कर गए बेड़ा पार

जैन जाति का अब उद्धार, करदो सब हिल मिल के ॥ टेर ॥

एक समय माहावीर दिपाया, दया धर्म सबको बतलाया,

जैन का जग में किया प्रचार ॥ करदो ॥

आज उसी की संतान प्यारी, स्वार्थ वश हो रही है सारी,

भूली है धर्म मार्ग सुखकार ॥ करदो ॥

आवो युवक बन्धु आवो, हिल मिल कर सब प्रेम बढ़ावो,

तन मन से हो जाओ न्योछार ॥ करदो ॥

समाज सेवा की करो तैयारी, मिटाके छोड़ो कुरितियां सारी,

करके दिखादो अब सुधार ॥ करदो ॥

चाहे हो बलिदान भी देना, "जीत" हमेशा आगे ही रहना,

बिछड़ों से करलो अब तो प्यार ॥ करदो ॥

१०, तर्ज.—जीवन है संग्राम, बन्दे

स्वार्थ का संसार, है ए, स्वार्थ का संसार ॥ टेर ॥

मात पिता करे पुत्र पालना, सहकर कष्ट अपार,

वही पुत्र तन, धन लोभी हो, छोड़ देय मझधार ॥ है ए ॥

एक कली से फूल खिले दो, करते हैं तकरार ।

जरो, जमीं हित चले मुकदमे, एक को एक दे मार ॥ है

बहन कहे है भाई मेरा, जब तक भरे भंडार,
समय पड़े हो दूर वो छिन में, है पैसो का प्यार ॥ है ए।
जब तक स्वार्थ तब तक रहते, मित्र कुटम्बी यार.
बिन स्वार्थ दे जाय समय पर, दगा जो हो निज नार ॥ है ए ॥
देख देख पग धरना ज्ञानी, है संसार असार,
"जीत" चाहे जो सच्चा साथी, करले प्रभू से प्यार ॥ है ॥

---

११. साधु जैन का मुखड़ा रे ऊपर मुख पत्ति बांधरे

कलयुग आयो रे, भारत पर दिन दिन संकट छायोरे ॥ टेर ॥
घर घर गायां, भैंसां बंधती, दुनियां माता कहती रे।
थोड़ा जीभ के स्वाद हित, अब छुरियां चलती रे ॥ कल ॥
दूध, दही और घी की जहां पर, निशदिन नदियां बहती रे,
समय पड़यां सन्तान आज दिन, दुखी रहती रे ॥ कल ॥
क्रुम लेदर का बूंट के खातिर, कच्चा गर्भ गिराव रे.
जिवित हो बछड़ां की खाल, उतराई जाव रे ॥ कल ॥
कीड़ा को घमसान करिने, रेशम बण बण आव रे,
एसी चीजां पहन, लाल भारत का स्याव रे ॥ कल ॥
अन्न धन का भंडार भरया हा, चिजां सस्ती मिलती रे.
हुई लड़ाई, जदसूं मिट गई, सारी मस्ती रे ॥ कल ॥
मन चाही सो चिजां मिलती, खूब की खातिर होती रे,
आज हुयो कन्ट्रोल भूख खुद की नहीं मिटती रे ॥ कल ॥

खावो, पीवो, पहरवो, और सारी मोजां छूट रे,
हिंसा कलह ने देश की, आजादी लूटी रे ॥ कल ॥
राम लखन सम भाई भाई, था जिण भारत मांई रे,
स्वार्थ वश भाई को भाई, करे सफाई रे ॥ कल ॥
आठ साठ का व्याह रचावे, पुत्री पिता ने व्याव रे,
दमड़ी दमड़ी के तांय, धर्म की सोगंध खाव रे ॥ कल ॥
शूद्र छोड़ दी सेवा, ब्राह्मण मर्यादा ने भूल्या रे,
क्षत्री छोड़ी आन, वैश्य माया में फूल्या रे ॥ कल ॥
आयो जमानो खोटो ज्ञानी, देख देख पग धरजो रे,
रहजो धर्म पर दृढ़, 'जीत' जग सुयश लीजो रे ॥ कल ॥

—— ——

१२. तर्ज राजा भरतरी जी

परनारां सुं नेह, ज्ञानी मत करो जी ॥ टेर ॥

ज्ञानी जी रावण सरिखा हुआ राजवी, ज्यांरे स्वर्ण सी लंक,
फंस पर तिरिया के नेह में, करदी लंक ने खंक ॥ ज्ञानी ॥
ज्ञानी जी, कौरव, पांडव युद्ध हुयो, एक द्रोपदी के काज,
तन, धन प्राण गमाविया, राखी भगवत लाज ॥ ज्ञानी ॥
ज्ञानी जी, मणीरथ राजा मोह वश हुयो, दीनो भाई ने मार,
खुद भी मरण पायो उस घड़ी, पड्यो नरकां में जार ॥ ज्ञानी ॥
ज्ञानी जी, चितोड़ अलाऊदीन फोज ले, आयो पदमणी रे काज,
खाली हाथ वापिस गयो, जाण सकल समाज ॥

ज्ञानी जी "जीत" फस्या जो जो फंद में, खोया राज ने ताज
अन्त नरक मांय जावसी, एम कह्यो जिनराज ॥ ज्ञानी ॥

१३, तर्ज—बन चले राम रघुराई

अब जागो जैनी भाई, क्यो सो रहे निद्रा मांई ॥ टेर ॥
फूट, कलह के बादल घिर घिर, आए भारत मांई,
फंसी जाल में जैन जाति भी, छोड़ी अवसर ताई ॥ अब ॥
सब ही भूले भान, फंसे जा राग द्वेष के मांई,
नए निराले पंथ निकल कर, उलटी राह बताई ॥ अब ॥
दिन दिन अत्याचार हो रहे हिंसा जग में छाई
भूल गए क्यो निज गौरव ओ अहिंसा के अनुयाई ॥ अब ॥
वीर की हो सन्तान छोड़ दो, अब तो आलस ताई।
करके संगठन, करो जाग्रति. प्रेम हो आपस मांई । अब ॥
युवक गण अब जागो सबने, तुम पे आशा लगाई,
"जीत" मिला मौका सेवा कर, रह जाए बात सवाई ॥ अब ॥

१४, तर्ज---धर्म पर डट जाना, है वीरों का काम

समय नहीं सोने का, जागो जैन समाज ॥ टेर ॥
जो भारत था सब का सरदार, आज वही गैरों के आधार,
दिन दिन हो रहे अत्याचार, राज्य हुआ हिंसा का ॥ जागो ॥

अहिंसा धर्म वीर बतलाया, महात्मा गांधी ने अपनाया,
आजादी के लिए बतलाया, मार्ग अहिंसा का ॥ जागो ॥
छोड़ दो कायरता का भान, संभालो अपने हाथ कमान,
वीर की होकर के सन्तान, काम क्या डरने का ॥ जागो ॥
हिंसा का जड़ बुनियाद मिटादो, घर घर अहिंसा पाठ पढ़ादो,
'जीत' फिर धर्म ध्वजा लहरादो वक्त नहीं खोने का ॥ जागो ॥

४५, तर्ज:—छिप न सकोगे

छुप न सकोगे, अजी तुम छुप न सकोगे,
कर कर के खोटे काम, प्राणी छुप न सकोगे ॥ टेर ॥
कम तोल, नाप, फाड़ करी बेईमानियाँ,
आखिर में देख लेना कि, सड़ सड़ के मरोगे ॥ कर ॥
चार दिन जवानी में, कीनी बूरी नजर,
आँखो के बन मोह ताज, परवश होके फिरोगे ॥ कर ॥
दीनों पे किया जुल्म, जो निर्बल को सताया,
लकवे ने किया जोर, निसहाय बनोगे ॥ कर ॥
छल छिद्र से माया जुड़ी, करता मेरा मेरा,
जाए न कुछ भी साथ, खाली हाथ मरोगे ॥ कर ॥
पाकर के नर रत्न को, विषयों में गमाया,
तो 'जीत' लेना सोच, चोरासी में फिरोगे

१६, तर्ज:—कृष्णा २ मैं पुकारूं

जैनी वीरों विश्व में, जिन धर्म चमका दिजिए,
जाति सेवा के लिए, सर्वस्व अर्पण किजिए ॥ टे ॥
विश्व अब जागा सभी, पर आप फिर भी सो रहे,
जुल्म दिन दिन बढ़ रहे हैं, ध्यान कुछ तो दिजिए। जैन
वीर का संदेश, अहिंसा धर्म का पालन करो,
आज अहिंसा बढ रही, उसको मिटा अब दिजिए ॥ जैन
जाग्रति संसार में हो, जैन जागें फिर सभी,
अहिंसा का प्रचार हो, कर्त्तव्य ऐसा किजिए ॥ जैन
संगठन भरपूर हो, ऐसी बने फिर योजना,
देख समय के फेर को, कुरितियां तज दिजिए ॥ जैन
"जीत" रह आगे हमेशा, धर्म हित हर वक्त तूं
आपत्तियां आवे अगर, तो वीर बन सह लिजिए ॥ जैन

१७, तर्ज: -रे पंछी बावरिया

रे खर्चो ले लेना, कर सुकृत मन चाए,
झमेला दो दिन का, जाना है देश पराए ॥ टेर ॥
मोह माया में फंस कर भारी, खूब करी फिर थांरी मारी,
संग कछु नहीं जाए ॥ रे ॥
रात दिवस करी पाप कमाई, एक जीव सब ही के ताईं,
स्वार्थ वश भरमाए ॥ रे ॥

धन दौलत और मित्र कुटम्बी, अन्त समय नो भी नहीं संगी,
सब ही दूर रह जाए ॥ रे ॥

जैसे किए वैसे खुद पासी, कर सुकृत वरना पछतासी,
क्यों नर रत्न गमाए ॥ रे ॥

पुण्य रत्न तू बांधले पल्ले, शिवपुर की तैयारी कर ले,
होंगे "जीत" मन भाए । रे ॥

१८, तर्ज:—जिन्दगी है प्यार की प्यार में बिताएजा

जैन समाज की सेवा कर जायेंगे,
सोए हैं जो लाल, उन्हें फिर से जगायेंगे ।
एकता बढ़ायेंगे ॥ टेर ।

वीर की सन्तान हैं, हमें भी निज शान है,
यश कीर्ति और मान हम, कौम का बढायेंगे,
उन्नत बनायेंगे ॥ जैन ॥

देकर के संदेश वीर, जग को जगायें फिर,
अहिंसा प्रचार कर, हिंसा को मिटायेंगे,
धर्म को दिपायेंगे ॥ जैन ॥

बंधे एकता की डोर, जैन संघ चहुँ ओर,
बिछुड़े हुए लाल, उन्हें हम अपनायेंगे,
गले से लगायेंगे ॥ जैन

तन, मन, धनवार, धर्म पे होंगे न्योछार,
"जीत" जीवन ज्योति, आ जग में जगायेंगे ।
सफल बनायेंगे ॥ जैन ॥

१९, तर्ज: कोरा काजलियो

ज्ञानी चेतोरे, यो मनुष्य जन्म अनमोल ॥ टेर ॥
पूर्व पुण्य प्रताप से यो मिल गयो नर तन चोल । ज्ञानी ।
पड़ विषय के कूप में, मत अमृत में विष घोल । ज्ञानी ।
स्वार्थ का साथी घणां, नित बोले हंस हंस बोल । ज्ञानी ।
वक्त पड्यां नहीं बोलसी, या भरी ढोल में पोल । ज्ञानी ।
फंस मोह माया फंद में, क्यों भूल रयो निज कोल । ज्ञानी ।
जैन धर्म उत्तम मिल्यो, कर सुकृत तूं दिल खोल । ज्ञानी ।
पुण्य पाप जो जो करे, ले ज्ञान तराजू तोल । ज्ञानी ।
"जीत" लगन प्रभू से लगा, जय महावीर बोल । ज्ञानी ।

२०, तर्ज:—जाओ रे ए मेरे साधु

आवो आवो ए जैनों, सब मिल करें परस्पर प्यार । टेर ॥
झूंठ, कपट, छल छिद्र, हटा दें, तजें अविद्या भार,
ज्ञान की ज्योति जगाकर करदें, जग में सत्य प्रचार । आवो ।
फूट, कलह के वश भूले, जो अपना सद् व्यवहार,
प्रेम परस्पर करना सिखें हिल मिल करें सुधार । आवो ।

समाज सेवा के हित वारें तन मन. धन भंडार,
करके संगठन बने एक फिर, करें जाति उद्धार। आवो।
दीन दुःखी की सेवा में हम, रहे सदा तैयार,
हिंसा घोर मिटादे जग की, बूत अहिंसा धार। आवो।
बिछुड़ गए जो लाल जाति के, कर उनका सत्कार,
"जीत" वीर झंडे के नीचे, रहें सभी एक सार। आवो।

---

२१. तर्जः—गोता कहां भूल आए

अहिंसा गए भूल, डूबी भारत की नया ॥ टेर ॥
घर घर गाएं, भैंस बंधती, होती दूध मलैया,
खूब ही होती पैदावारी, था व्योपार सवैया ॥ अहिंसा ॥
सत्य अहिंसा थी घर घर घर से, नहीं थे पाप कमैया,
सभी देशों का राजा भारत, लेते सभी बलैया ॥ अहिंसा ॥
हुआ घोर अंधकार, चली जब से पश्चिमी हवैया,
फैशन में पड़ होगए परवश, भारत वासी भैया ॥ अहिंसा ॥
लोभ कपट ने जाल बिछाया, लालच बढ़ा सवैया,
देख देख चांदी के टुकड़े, बेचीं माता गैया ॥ अहिंसा ॥
दिन दिन हिंसा बढ़ी देश में, आवो राह बतैया,
"जीत" देख अब दशा पधारो. [illegible] कन्हैया ॥ अहिंसा ॥

---

२२. तर्ज़—जागो २ मेरे लाल, कान्हो घटाएं

आवो आवो महावीर, भारत में ले अवतार वही,
हरो भारत क पीर, नैया ए गोते खाय रही ॥ टेर ॥
"सिद्धरथ" कुल चन्द "त्रिसला" देवी के नन्द,
ध्यान धरियां आनन्द, कटत पाप पुलाय सही ॥ आवो ॥
नमते सुरपति इन्द्र, ध्याते ऋषी मुनि वृन्द,
ध्यान धरते राजेन्द्र, तेरी महिमा का है पार नहीं ॥ आवो ॥
पहले लियो अवतार, किय जगत उद्धार,
दया धर्म प्रचार, करके बतायो समार्ग सही ॥ आवो ॥
आज तेरी ही सन्तान, भूल गई निज भान,
काम क्रोध छायो मान दुःख की घटाएं छाय रही ॥ आवो ॥
"जीत" छाई हिंसा घोर, बढा ज़ुल्मों का जोर,
तुम बीना कौन ओर, वीर पधारो है अर्ज़ यही ॥ आवो ॥

२३, तर्ज़—अंखियां मिलाके जिया भरमाके

नर तन पाके, व्यर्थ ही गमाके, चले नहीं जाना ॥ टेर ॥
चोरासी में भटकत भटकत, अबके नर भव पाए,
पाए जी पाए पुर्व पुण्य के, प्रसाद पाए,
जिन धर्म पाके, उत्तम कुल में आके ॥ चलें ॥
अरिहंत देव, निग्रन्थ गुरू है धर्म दया मय प्यारा,
प्यारा जी प्यारा श्री महावीर जिसने जग को तारा,

उसकी शरण आके, सुमार्ग पाके ॥ चले ॥
ले ले खर्ची संग, मिटादे भव का आना जाना
जाना जी जाना "जीत", लौट के कभी नहीं आना.
विषयों में लुभाके, फिर पछताके ॥ चले ॥

४, तर्ज:—रुम झुम बरसे बादलवा

हिल मिल प्रेम बढावो रे, संगठन कर दिखलावो,
वीरों जग जावो, आवो वीरों जग जावो। टेर।
सभी कोम के युवक गण अब जाग गए, जाग गए,
अपनी उन्नति के कार्य में, लाग गए, लाग गए,
तुम क्यों आलस लावो रे, निद्रा को दूर हटावो,
सेवा कर जावो ॥ आवो ॥
राग द्वेष कर दूर, संप कर लीजिए, लिजिए,
समाज की गंदगी, दूर कर दीजिए, दीजिए,
सत्य प्रेम अपनाओ रे, हिंसा को दूर हटावो,
अहिंसा दिपावो आवो ॥
अब भी समय है, गर वीरो जग जाओगे, जग जाओगे,
फिर से विश्व में, जैन धर्म चमकाओगे, चमकाओगे,
समय देख जग जावो रे, 'जीत' क्यों व्यर्थ गमावो.
कुछ तो कर जावो ॥ आवो ॥

२५, तर्जः—जब तुम्हीं चले परदेश

ए सब वेदों का सार, विश्व आधार,
जो जाग को प्यारा, है अहिंसा धर्म हमारा ॥ टेर ॥
भगवान ऋषभ फैलाया था, महावीर ने खूब दिपाया था,
गोतम गणधर ने खूब ही किया प्रसारा, ॥ है ॥
जब तक थी अहिंसा भारत में, था बढ़ा हुआ हर हालत में,
सब देशों को था, इसका एक सहारा ॥ है ॥
जब से नई हुकुमत आई है, हिंसा ने धाक जमाई है,
दिन पर दिन गिर रहा भारत भाग्य सितारा ॥ है ॥
अब जाग जाग हिन्दुस्तानी, दे मिटा हुकुमत हैवानी,
दे लगा अहिंसा का भारत में नारा ॥ है ॥
गांधी ने भी अपनाया है, भारत को "जीत" बतलाया है,
आजादी का है शस्त्र अहिंसा प्यारा ॥ है ॥

---

२६ तर्जः—उठ जाग मुसाफिर भोर भई

उठ जाग जाग जैनी भाई, ए रैन बीत अब भोर भई,
आलस को करके दूर जरा, ले देख समय की चाल नई ॥ टेर ॥
जो समाज सब से ऊंचा था, वही दिन दिन आज गिरा जाता,
नए नए निराले पंथ हुए, आपस में द्वेषता बढती गई ॥ उठ
जिस भारत में, मेवाड़ वीर
हुए भामाशाह से त्यागी नर,
कहां गया आज वो त्यागी तेरा, कहां अस्पतता की शान रही ॥ उठ

जो गले लगाते गैरों को, वही आज गैरों के बन जाते,
कहां रही परस्पर हमदर्दी, दिन दिन यों घटती आ ही रही ॥ ७८ ॥
था धर्म दयामय जो प्यारा, क्यों उसे आज तुम भूल गए,
दिन दिन हिंसा बढ़ रही जग में, कुछ तो करके दिखला तू सही ॥ ७० ॥
अब समय नहीं है सोने का, और समाजें सारी जाग गईं,
करके तू संगठन "जीत" जगा, फिर से भारत में ज्योति वही ॥ ८० ॥

---

२७ तर्ज:—छोटी मोटी सुइयां रे, जाली का

वीर जिनंद जी हो, यही है मेरी प्रार्थना ॥ टेर ॥

काम, क्रोध, मद, लोभ में फंसकर, हां लोभ में फंसकर,
जो भूलूं निज भान, तो शिघ्र बचावना ॥ वीर ॥
मोह माया के विकट जाल में, हां विकट जाल में,
फंस छोड़ू नव ध्यान, तो शिघ्र छुड़ावना ॥ वीर ॥
फंस विषयों के फंद में भूलू, हां फंद में भूलू,
जो निज आत्म ज्ञान, तो शिघ्र हटावना ॥ वीर ॥
जब लग आवागमन न छूटे, हां गमन न छूटे,
प्रित पुरानी पाल, सदा अपनावना ॥ वीर ॥
"जीत" अर्ज यही तुम चरणन मे, हां तुम चरणन में,
नैया जो गोते खाय, तो पार लगावना ॥ वीर ॥

२५, तर्जः—जब तुम्हीं चले परदेश

ए सब वेदों का सार, विश्व आधार,
जो जग को प्यारा, है अहिंसा धर्म हमारा ॥ टेर ॥
भगवान ऋषभ फैलाया था, महावीर ने खूब दिपाया था,
गोतम गणधर ने खूब ही किया प्रसारा, ॥ है ॥
जब तक थी अहिंसा भारत में, था बढ़ा हुआ हर हालत में,
सब देशों को था, इसका एक सहारा ॥ है ॥
जब से नई हुकुमत आई है, हिंसा ने धाक जमाई है,
दिन पर दिन गिर रहा भारत भाग्य सितारा ॥ है ॥
अब जाग जाग हिन्दुस्तानी, दे मिटा हुकुमत हैवानी,
दे लगा अहिंसा का भारत में नारा ॥ है ॥
गांधी ने भी अपनाया है, भारत को "जीत" बतलाया है,
आजादी का है शस्त्र अहिंसा प्यारा ॥ है ॥

---

२६ तर्जः—उठ जाग मुसाफिर भोर भई

उठ जाग जाग जैनी भाई, ए रैन बीत अब भोर भई,
आलस को करके दूर जरा, ले देख समय की चाल नई ॥
जो समाज सब से ऊंचा था, वही दिन दिन आज गिरा ज
नए नए निराले पंथ हुए, आपस में द्वेषता बढती गई
हुए भामाशाह से त्यागी नर, मेवाड़ वीर जिस भारत
कहां गया आज वो त्यागी तेरा, कहां अस्पतता की शान रही

जो गले लगाते गैरों को, वही आज गैरों के बन जाते,
कहां रही परस्पर हमदर्दी, दिन दिन यों घटती आ ही रही ॥ ७८ ॥
था धर्म दयामय जो प्यारा, क्यों उसे आज तुम भूल गए,
दिन दिन हिंसा बढ़ रही जग में, कुछ तो करके दिखला तू सही ॥ ७० ॥
अब समय नहीं है सोने का, और समाजें सारी जाग गई,
करके तू संगठन "जीत" जगा, फिर से भारत में ज्योति वही ॥ ७८ ॥

---

२७ तर्ज:—छोटी मोटी सूइयां रे, जाली का

वीर जिनंद जी हो, यही है मेरी प्रार्थना ॥ टेर ॥
काम, क्रोध, मद, लोभ में फंसकर, हां लोभ में फंसकर,
जो भूलूं निज भान, तो शिघ्र बचावना ॥ वीर ॥
मोह माया के विकट जाल में, हां विकट जाल में,
फंस छोड़ू तव ध्यान, तो शिघ्र छुड़ावना ॥ वीर ॥
फंस विषयों के फंद में भूलू, हां फंद में भूलू,
जो निज आतम ज्ञान, तो शिघ्र हटावना ॥ वीर ॥
जब लग आवागमन न छुटे, हां गमन न छुटे,
प्रित पुरानी पाल, सदा अपनावना ॥ वीर ॥
"जीत" अर्ज यही तुम चरणन में, हां तुम चरणन में,
नैया जो गोते खाय, तो पार लगावना ॥ वीर ॥

२५, तर्जः—जब तुम्हीं चले परदेश

ए सब वेदों का सार, विश्व आधार,
जो जाग को प्यारा, है अहिसा धर्म हमारा ॥ टेर ॥
भगवान ऋषभ फैलाया था, महावीर ने खूब दिपाया था,
गोतम गणधर ने खूब ही किया प्रसारा, ॥ है ॥
जब तक थी अहिसा भारत में, था बढ़ा हुआ हर हालत में,
सब देशों को था, इसका एक सहारा ॥ है ॥
जब से नई हुकुमत आई है, हिसा ने धाक जमाई है,
दिन पर दिन गिर रहा भारत भाग्य सितारा ॥ है ॥
अब जाग जाग हिन्दुस्तानी, दे मिटा हुकुमत हैवानी,
दे लगा अहिंसा का भारत में नारा ॥ है ॥
गांधी ने भी अपनाया है, भारत को "जीत" बतलाया है,
आजादी का है शस्त्र अहिसा प्यारा ॥ है ॥

---

२६ तर्जः—उठ जाग मुसाफिर भोर भई

उठ जाग जाग जैनी भाई, ए रैन बीत अब भोर भई,
आलस को करके दूर जरा, ले देख समय की चाल नई ॥ टेर ॥
जो समाज सब से ऊंचा था, वही दिन दिन आज गिरा जाता,
नए नए निराले पंथ हुए, आपस में द्वेषता बढती गई ॥ उठ ॥
हुए भामाशाह से त्यागी नर. मेवाड़ वीर जिस भारत में,
कहां गया आज वो त्यागी तेरा, कहां अस्पतता की शान रही ॥ उठ ॥

जो गले लगाते गैरों को, वही आज गैरों के बन जाते,
कहां रही परस्पर हमदर्दी, दिन दिन यों घटती आ ही रही ॥ ७८ ।
था धर्म दयामय जो प्यारा, क्यों उसे आज तुम भूल गए,
दिन दिन हिंसा बढ़ रही जग में, कुछ तो करके दिखला तू सही ॥ ८० ।
अब समय नहीं है सोने का, और समाजें सारी जाग गई,
करके तू संगठन "जीत" जगा, फिर से भारत में ज्योति वही ॥ ८८

---

२७ तर्ज:—छोटी मोटी सूइयां रे, जाली का

वीर जिनंद जी हो, यही है मेरी प्रार्थना ॥ टेर ॥

काम, क्रोध, मद, लोभ में फंसकर, हां लोभ में फंसकर,
जो भूलूं निज भान, तो शिघ्र बचावना ॥ वीर ॥
मोह माया के विकट जाल में, हां विकट जाल में,
फंस छोड़ू नव ध्यान, तो शिघ्र छुड़ावना ॥ वीर ॥
फंस विषयों के फंद में भूलू, हां फंद में भूलू,
जो निज आतम ज्ञान, तो शिघ्र हटावना ॥ वीर ॥
जब लग आवागमन न छूटे, हां गमन न छूटे,
प्रित पुरानी पाल, सदा अपनावना ॥ वीर ॥
"जीत" अर्ज यही तुम चरणन में, हां तुम चरणन में,
नैया जो गोते खाय, तो पार लगावना ॥ वीर ॥

---

२८ तर्जः—छोटे से बलमा मोरे आंगना में

शान्तिनाथ भगवान, प्रभू शान्ति वरतावो ॥ टेर ॥

पुर्व भव पुण्य प्रसादे, अजर अमर पद पायो,

सोलवें तिर्थंकर आप, शान्ति नाथ कहावो ॥ शान्ति ॥

मृगी का रोग छाया, देश में जिस दम,

आप आये थे ले अवतार, हुयो शान्ति वरतावो ॥ शा० ॥

ऐक पखेरू हित आपने, निज अंग कटायो,

आज बढ़ रही है हिंसा घोर, प्रभू अब क्यों नहीं आवो ॥शा०

हिंसा कलह मिटावो, शान्ति शान्ति वरतावो,

रोग सोग कर दूर, जग का दुःख मिटावो ॥ शान्ति ॥

भक्त वच्छल भगवान, भीर भक्ता की आवो,

शांति वरतावो जग मांय, 'जीत' को तुम्हें बुलावो ॥ शा० ॥

२६, तर्जः—भँवर बागां में आजो जी

गुणी जन पुण्य कमावो जी,

अब आयो पर्व पर्युषण, सब मंगल गावोजी ॥ टेर ॥

पुर्व भव पुण्य प्रसादे जी, यो नरभव दुर्लभ पायो,

याने सफल बनावो जी ॥ गुणी ॥

धर्म में चित लगावो जी सुण वीर प्रभू की वाणी,

निज कर्म खपावो जी ॥ गुणी ॥

दान दे सुयश पावोजी, कर शील व्रत शुभ धारण,

भव बंध छुड़ावो जी ॥ गुणी ॥
त्याग वृत खूब निभावो जी, करो श्रद्धा सारू तपस्या,
भली भावना भावो जी ॥ गुणी ॥
रोज स्थानक में आवो जी, आ लेवो आठूं दिन लावो,
मत व्यर्थ गमावो जी ॥ गणी ॥

३०, तर्जः—ओ जाने वाले बालमवा लोट के आ

राजुल—ओ जाने वाले साजनवा, लोट के आ, लोट के आ,
नेम—जा मैं ना तेरा साजनवा, बे वफा, बे वफा ॥ टेर ॥
रा०—जान चढी तोरण पर आए, यादव कुल को संग में लाए,
व्याहने को आए, राजुलवा ॥ लोट के आ ॥
ने०—बाड़ों में पशु बंद कराए, जरा तरस नहीं दिल में लाए,
हो गए हम यों खफा । बे वफा ॥
रा०—नाथ यही अर्जी है मोरी, प्रीत पुरानी को क्यों तोरी,
मेरे तो तुम ही हो नेम पिया ॥ लोट के आ ॥
ने०—झूठा है सब जग का नाता, जग का साज मुझे नहीं भाता,
"जीत" शिव रमणी से दिल लगा ॥ बे वफा ॥

३१, तर्जः—दिल साफ तेरा है या नहीं

ए भारतीयों जागो जरा, अब होश में आवो,
लेवो अहिंसा धार, जग को फिर से जगावो,
हिंसा को मिटावो ॥ ए ॥ टेर ॥

जब तक थी अहिंसा देश में, अन्न धन भर पूर था,
सब देशों का सरताज, भारत कोहीनूर था,
वही हुआ मोहताज आज, क्यों ए सुनावो ॥ लेवो ॥
थोड़े जीभ के स्वाद हित, लाखों का घमाशान,
पीते हैं जिसका दूध, लेते हैं उसी को जान,
ए वीरों आवो आज, इनके प्राण बचावो ॥ लेवे ॥
पैदा करें अनाज, उन्हों को आज सताते,
जीवित उतरती खाल, क्रूमी बूंट बनाते,
फेशन में पड़ ए भारतो, क्यों पहन कर शावो ॥ लेवो ॥
महावीर का फरमान अहिंसा, धर्म दिपावो,
गांधी का ए ऐलान, गर आजादी को चावो,
लेकर अहिंसा शस्त्र, वीरों मैदा में आवो ॥ लेवो ॥
बिजली सी शक्ति हो, वीरता होवे रग रग में,
डंका बजादे "जीत" अहिंसा धर्म का जग में,
होकर स्वतन्त्र गैर हुकुमत को मिटावो ॥ लेवो ॥

---

३२. तर्ज:—मनाऊ महावीर भगवान

पधारो महावीर भगवान, करो फिर भारत का कल्यान ॥ टेर ॥
फूट, कपट, मोह माया में फस आज तेरी सन्तान,
भूल गई निज गौरव अपना, हुई दिनों दिन हान ॥ पधारो ॥
नई नई चीजें अपनाई, खूब बढाई शान,
फेशन में पड़ खोदी अपनी, सारी शक्ति महान ॥ पधारो ॥

हिंसा का हुआ जोर जगत में, छिया हिन्द ने मान,
धर्म कर्म सब भूल गए तब, कैसे हो उत्थान ॥ पधारो ॥
सत्य अहिंसा लेकर प्रकटो, वीर गुणों की खान,
पावन करिए भारत भूमि, "जीत" करो कल्यान ॥ पधारो ॥

३३, तर्जः—थांरी काजल केरी डाब्या, ? रुवाड़ी

पायो मनुष्य जन्म, ज्ञानी सुकृत कर लिजो,
लीजो लावो धर्म मांहीं, दूरा मत रीजो ॥ टेर ॥
पूर्व पुण्य कमाई, जिणने आज भर लीजो,
दुर्लभ पायो जमारो, यांरो ध्यान कर लीजो ॥ पायो ॥
पड़के विषयों में ज्ञानी, यांने हार मत दीजो,
चोरासी का चक्कर से ज्ञानो, दूर अब रीजो ॥ पायो ॥
देकर दान सुपात्र, जग में सुयश ले लीजो,
शीलव्रत सुखकारी, ज्ञानी नेमव्रत कीजो ॥ पायो ॥
श्रद्धा सारू कर तपस्या, आतम वश में कर लीजो,
"जीत" धर्म निपाई, बेड़ो पार कर लीजो ॥ पायो ॥

---

३४ तर्जः—दिवाली फिर आ गई सजनी

दिवाली फिर आ गई सज्जनों,
अहा ! हा, वीर प्रभू गुण गाएं ॥ टेर ॥

आवो सज्जनों सब हिल मिल कर, महावीर गुणगांएं
पावांपुरी में आज देखलो, हो रहे मन के चाए,
चोमासा किया वीर प्रभू ने, घर घर आनन्द छाए ॥ दिवाली
देव शर्मा ने प्रतिबोधवा, गोतम ने भिजवायो,
देख समय अब मोक्ष जाणेरो, संथारो प्रभू ढावो,
अट्ठारा देश का राजा आकर, पोसां को ठाठ लगायो ॥ दि०
सोला पहर उपदेश दियो, प्रभू सबने धर्य धरायो,
दोय दिनां र हुयो संथारो, अन्त मोन व्रत थायो,
कार्तिक की अमावश रात में, महावीर मोक्ष सिधायो ॥ दि०
सुरपति इन्द्र आयो तिणवारो, देवी देव संग लायो,
जगमग जगमग जग रही ज्योति, महोत्सव कियो सवायो,
वीर हुआ निर्वाण, जगत में, दिन दिवालो कहायो ॥ दि०
ओर देव नहीं ध्याऊं प्रभू, एक तूं ही मुझने भायो,
अष्ट कर्म दल दूर हटादे, शरण तिहारी आयो,
महर नजर कर दास "जीत" पर चमके फिर, भाग्य सवायो ॥ दि०

---

३५ तर्जः—रूमझुम बरसे बादलवा

दिल सुं कपट हटावो रे, भावां ने शुद्ध बनावो,
फिर थे खमावो, आवो, फिर थे खमावो ॥ टेर ॥
आज समय की कैसी चाल, बताऊँसा, बताऊँसा,
दिल में कपट ऊपर से कहे, खमाऊंसा, खमाऊंसा,

यो कैसो खमावो रे, ज्ञानी कुछ ज्ञान लगावो, दिल ने समझावो ॥ आवो

वीर प्रभू सदेश अरा, चित लाइए, लाइए,
प्राणी मात्र पर क्षमाभाव दरषाइएं, दरषाइए.
राग द्वेष हटावो रे, अवसर यो आच्छो आयो, इण ने अपनावो ॥ आ०
जैन धर्म और उत्तम कुल भी पायो है, पायो है,
रागद्वेष में फंस जो व्यर्थ गमायो है, गमायो है,
तो पढ़सी पछतावो रे, चोरासी का चक्करमे पड़सी भरमावो ॥ आवो
प्रति वर्ष में पर्व संवत्सरी आती है. आती है,
वैर भाव कर दूर, प्रेम सिखलाती, सिखलाती है,
बिछड़ों को अपनावो रे, गेरों के क्यों भिजवावो, गले से लगावो ॥ आ०
जो कोई त्रुटि हुई तो, माफी चाहता हूं चाहता हूँ,
मन, वच, ओर काया से, आज खमाता हूं खमाता हूं,
"जीत" को माफ करावो रे, वैर न दूर हटावो, संप बढ़ावो ॥ आवो

"लक्ष्मी"

या धन की गती तीन हैं. दान, भोग अरू नाश ।
दान भोग में ना लगे, तो निश्चय होत विनाश ॥

'मूमन सेठ'

तर्ज:—लावणी लगड़ी

दान दियां सुं बढ़े लक्ष्मी, दान सुं हो सन्मान,
दान दियां सु फले मनोरथ, दान दियां सु हो कल्याण ॥ टेर ॥

श्री जिनवर का सुमंरण कर, मैं लिखूं कथा बुद्धि अनुसार,
दान वीर एक 'विमल' सेठ जी जिसका श्रोता सुणजो सार,
विमल नगर सुहावणोस जी, बसे जहां सेठ साहुकार,
धर्म ध्यान में दृढ़ रहे नित, करते शुद्ध खरा व्योपार।

शेर उसी नगर में बसे एक, विमल सेठ गुणवान जी,
धन माल जिनके घणों, है देश देश दुकान जी,
सुण्यां धर्म उपदेश कई, था ज्ञानी बुद्धिमान जी,
दीन हीन आवे द्वार, देना सदा वो दान जी,

(लावणी) एक समय सेठ जी, सोचे मन के मांई,
है देश विदेश दुकान समालूं जाई,
ए कैसा चले व्योपार, क्या है कमाई,
यही सोच सेठ जी जाने की ठहराई।

दौड़—कीनो निश्चय विचार, हुआ सेठ जी तैयार,
खर्चा तांई लियो लार धन माल घणो।

झेला—सुण प्यारे, कर काम सेठ फिर वापिस चलकर आया,
सुण प्यारे रस्ते में वहां एक नगर राजपूर आया,
सुण प्यारे, जगह जगह दान पुण्य दीना सेठ मन चाहा,
सुण प्यारे, कियो खर्च सभी धन माल, जो संग में लाया,

चलत—इसलिये उपाय करने को सेठजी, राजपूर में पहुंचे आन। दान

उसी नगर में मूमन सेठ रहे, था धन धाम घणी पुंजी,
सभी तरह का सुख साज था, पर आदत का था मुंजा,
ना खावे ना खाने देवे, ऐसी उसे उल्टी सूजी,
जोड़ जोड़ कर धरे हमेशा, और बात नहीं कोई दूजी,

शेर—उधर विमल सेठजी, करते है यूं विचार जी,
जाऊं मैं मूमन सेठ के, और मांगू धन उधार जी,
सोचकर आए वहां, मूमन कियो सत्कार जी,
किस काम वश आना हुआ, किस वस्तु की दरकार जी,

लावणी—कहे विमल सेठ जी, सुणो बन्धु चितलाई,
मुझको कुछ धन की, यहाँ पर जरूरत आई,
इसलिये देवो एक लाख रूपया भाई,
कर दूंगा अदा मैं एक महीने के मांई।

दौड़—रूपया एक लाख लीना, विमल रुका लिख दीना,
कोल एक महिने का कीना, वरना दुणां सही।

मेला—सुण प्यारे ले लाख रुपया सेठ वहाँ से आए,
सुण प्यारे रस्ते मे करते हुए दान, विमल पुर आए,
सुण प्यारे, सुनकर के आगमन, सेठ का सब हरषाए,
सुण प्यारे, नित नई बणावे गोठ, करे मन चाए

दलत—पुर्ण हुवा एक मास सेठजी, फिर भी नहीं कीनी भुगतान। दान। २.
लाख रुपया नहीं आया अभी तक, मूमन मन में करे विचार।
जाऊं विमल पूर करने तकाजा, रुपया लेकर आऊँ अबार॥
सोच समझ चल दिया सेठजी, फटया पुराणा वस्त्र धार।
पेदल चल कर आया विमल पूर, कोड़ी खर्च नहीं की वेकार,

(शेर) विमल नगर में आय के, आया सेठ के द्वारजी,
देख उनके स्वांग को रोके है पहरेदार जी,
जाकर कहे, निज सेठ से, एक पुरुष खड़ा है द्वार जी,
वो मिलना चावे आपसे, क्या हुक्म है सरकार जी।

(लावणी) दियो हुक्म सेठ जी, जब वो अन्दर आया,
देख करके मूमन को, सेठ जी गले लगाया,
अब देख विमल का ठाठ, मूमन चकराया,
दियो दान सेठ जी, जो कोई द्वार पे आया।
(दौड़) लग रही कचेड़ी खास, बैठा कर्मचारी पास,
खड़ा दासी और दास जिनके सेवा में घणा।
(झेला) सुण प्यारे, ए देख मूमन यों सोचे मन के माई,
सुण प्यारे, है मूरख विमल, जो लक्ष्मी रयो लुटाई,
सुण प्यारे, मैं इण से अपणो धन लेऊँ कढ़ वाई,
सुण प्यारे, यही सोच विमल से कहे सुणो प्रिय भाई।
(चलत) लाख रूपया देवो हमारे, विमल कहे सुण मित्र सुजान ॥ दान ॥
लाख रूपया खरा तुम्हारा, जब चाहो तब हां तैयार,
पहले भोजन करो चाल कर, मूमन सेठ करे इन्कार,
आखिर मानी बात सेठ की, भोजन तांई बैठे जार,
सोना चाँदी का बरतन मांहा, तरह तरह की वस्तु अपार,
(शेर) देख कर ए रंग मूमन, सोचे मन के मांय जी,
अज्ञान विमल समझे नहीं, रयो माल मुफ्त गमाय जी,
भोजक किया के बाद मूमन कहे, विमल से समझाय जी,
मुझको है जल्दि जावणा, देवो लाख रुपया लाय जी,
(लावणी) कहे विमल सेठ जो, सुणो आप चित लाई,
करो आज यहीं आराम महल में जाई,
कल जाना अपने ग्राम रुपया ले भाई,
पर आज तो तुकमो जाने मैं दूंगा नाई,

(दौड़) मानी सेठ जी की बात मूमन रयो वही रात,
कीनी महल में विख्यात दियो आदर घणो,
(मेला) सुण प्यारे ए देख महल की शोभा वरणी न जावे,
सुण प्यारे हुआ देख दुःखी मूमन को नींद नहीं आवे,
सुण प्यारे, कब उगे दिन वो अपणा रुपया ले जावे,
सुण प्यारे, यही करे विचार कहीं रुपया डूब नहीं जावे
(चलत) विमल सेठ भी सोया वहीं पर,
अब आगे का सुणो बयान ॥ दान ॥ ४ ॥
आधी रात के समय नार एक, आई कर सोला सिणगार।
चरण दबावे विमल सेठ के पलंग के ऊपर बैठी जार
विचार सागर में डूबे मूमन को, निंद न आई थी उस वार,
देख नार को पलंग के ऊपर, मन में करने लगा विचार,
(शेर) मेरे सन्मुख नार बुलाई, इसे शर्म आईनहीं,
जो ऐसा ही था इसे तो जाकर सोता और कहीं,
दिन उगते ही जाऊंगा मैं, हरगिज रहूंगा यहां नहीं,
फिर प्रातः उठ कर सेठ जी से बात सब कहदी सही,
लाण सुण के सारा हाल सेठ चकरावे, कहे मेरे पास तो नार कोईनहीं
आवे, फिर पूछे घर में जाय, सभी नट जावे, करे मन में विमल
विचार अचम्भा आवे।
शेर मूमन कहे हरबार, मैंने आंखों देखी नार,
विमल कहे सुनो दिलदार, रहो आज और सही।
मेला सुण प्यारे, आखिर मे मूमन रहा वहीं पर भाई,
सुण प्यारे, भोजन कर सोए जाय महलों के मांई,

सुण प्यारे, ठीक आधी रात के वक्त नार फिर आई,
सुण प्यारे, आई नींद विमल को, मूमन को नहीं आई,
चलत–चरण दबावे नार विमल का, मूमन ने ली झट पहचान। दा० ५
सोच समझ मूमन ने जाके, पकड़ लिया उस नार का हाथ,
क्या लगता है सेठ तेरे, तू कौन बता मुझ को सब बात,
नार कहे मैं हूं लक्ष्मी, और सेठ लगे मेरे स्वामी नाथ,
चरण दबाऊ इनके आकर, रोज यहां मैं आधी रात।
(शेर) मूमन कहे लक्ष्मी तो मेरे, यहाँ रहे दिन रात जी।
ए सेठ तो करता है लक्ष्मी को यूं ही बरबाद जी॥
लक्ष्मी कहे जो खावे खर्चे वही है मेरा नाथ जी।
तू जोड़ बंद रखता मुझे, लगता है मेरे तात जी॥
लावणी ए सुण के हाल मूमन यूं विचार लगाए,
है धन्य वो जिसके लक्ष्मी चरण दबाए,
मैंने जोड़ जोड़ कर धरो न पुन्य कमाई,
सब यहीं धरी रह जाय संग नहीं जाए,
दोड़—करे ऐसे विचार, करू दान पुराय अपार,
गयो राजनगर मझार, लेके रुपया अपणां
झेला—सुण प्यारे, घर जाय पुत्र से मूमन यूं फरमावे,
सुण प्यारे देवो दान जो कोई दीन द्वार पर आवे,
सुण प्यारे, एक धर्मशाला भी यहाँ बणवाई जावे,
सुण प्यारे, देवो पशुशाला खुलवाय, सभी सुख पावे'
चलत—खावो पीवो, करो मोज सब घर आए का करो सम्मान। दा

पुत्र देख ए हाल बाप का, मन में करने लगे विचार,
क्या हो गया है आज बाप को, लक्ष्मी लुटाते है बेकार,
आज तलक नहीं खाया खर्चा, जोड़ २ कर धरा अपार,
पैसा दिया नहीं एक किसी को, आज लुटाते बेशुमार,
(शेर) सोच विचार बेटे कहे, सुनिए हमारे तात जी,
व्यर्थ तुम पुंजी लुटाते, हमें नहीं बरदास्त जी,
सेठ कहे लक्ष्मी तो मैंने, कमाई अपने हाथ जी,
तुमको क्या अख्तयार है, करते हो क्यों बकवाद जी,
लावणी-कहे पुत्र आखिर मालिक तो, हम ही रहेंगे
इसमें से एक कोड़ी न खर्चने देंगे,
इस तरह पुत्र यूं मूमन को समझावे,
पर उसके समझ में तो कुछ भी नहीं आवे,
दोहा— पुत्र करके विचार, दीनो कोठा मांई डार,
मूमन करे बार-बार कोठा मांही सड़े—
ला—सुण प्यारे, कोठा में पड़ियो मूमन माथा फोड़े,
सुण प्यारे, आखिर कोठे में प्रान देह को छोड़े,
सुण प्यारे, उधर विमल सेठ दे दान कर्म को तोड़े,
सुण प्यारे, सब पुत्रों को सभलाय आप पुण्य जोड़े,
[illegible]—"हीनमल" क्या दान प्रभावे, विमल पायो पद निर्वाण । शा० ७

"असाधु"

(तर्ज:—भारत की भाई नैया पड़ी मझधार)

जगत में भाई, साधु हैं कई प्रकार,
छोड़े ही मोह माया, छोड़ दियो तं सार ॥ टेर ॥
[illegible] प्रमाद, बहुत आजकाल, जिनका चरित्र धरूं आगे,
[illegible] में हो विमूढ़, प्रपन्ची, धाक जमाने निज लागे,
है नम्बर पहला ऐसों का बेशुम्मार ॥ जगत ॥
दूजे नम्बर [illegible] स्वछन्दी, क्रिया पर फेरा पानी,

जर, जोरू और जमीन के अब, दलाल बनने की ठानी,
बन गए है अबतो पंचो के भी सरदार ॥ जगत ॥
तीजा न बर · त्रिया मे, एकान्त बैठ करते वातें,
श्रावक की जरूरत नही समझे, लगनी चाहिए निज घातें,
विधवाओ का तो होता है खूब सत्कार ॥ जगत ॥
चौथा नम्बर है उनका जो, नाम के साधु होते है,
इधर की उधर भिडाय समाज मे, बीज फूट के बोते है,
करवाते है भाई आपस मे ए तकरार ॥ जगत ॥
पाँचवा नम्बर पच मुष्ठि का, लोच इन्होने छोड़ दिया,
केंची और मशीन से अबतो काम · लना शुरू किया,
पुंछो तो कहते, लोच मे कष्ट अपार ॥ जगत ॥
छटा नम्बर छरा छिद्र से, चेले बनाना शुरू किया,
नही देखते गुण अवगुण को, आया जिसको मुड लिया,
भग जाते है चेले, छोड के फिर मझधार ॥ जगत ॥
सातवाँ नम्बर सत्य छोड़ ए जगह जगह मारे फिरते,
सबको कहते देवें चिज एक, गर हम कहवें सो करते,
कहते है हमको सार्टीफिकट की दरकार ॥ जगत ॥
आठवा नम्बर आज समय को देख काम नहा करते है,
गृहस्थी को कर तग,. सेकडो की बरबादी करते है,
छपवाते है अपने पोथे, और इस्तीयार ॥ जगत ॥
नवमां नम्बर नही है इनको समाज का अब कुछ भी ध्यान,
अपनी धुन मे मस्त रहे, तब कैसे हो जाति कल्यान,
साधु नहीं ए तो हो रहे आज गवांर ॥ जगत ॥
दस नम्बर बदमाश वो साधु, जो जादु टोना करते है,
जन्त्र, मन्त्र को सिद्ध करे, स्त्रियो के हाथ निरखते है,
ऐसे मुनियों को, बार बार धिक्कार ॥ जगत ॥
एक से दस तक के नम्बर के, जो मैने यहाँ हाल कहे,
साधु नहीं अब रहे स्वादु, वो पानी मुलतान गए,
कहे चेतो साधु, "जीनमल" नमस्कार ॥ जगत ॥

क्षमा वीरस्य भूषणम्

जीत ज्योति भाग पाँचवा

(स्व० कुं० जीतमल चोरड़ा)

मुनिराजों चेतो जरा,

गुरुओं करो विचार,

पंचों पढ़कर जागिए,

बहनों करो सुधार,

मूल्य =)॥ ढाई आना

प्रकाशक—[illegible]
चोरड़ा, अजमेर

हर्ष सूचना

प्रिय पाठकगण,

आपको यह जान कर अत्यन्त हर्ष होगा कि "श्री जैन स्तुति" जो कि जैन जगत में काफी प्रचलित है तथा जिसकी अब तक १० बार आवृतियां छप चुकने पर भी मांग है जिसमें प्रातःकाल सदैव मनन करने के लिये आनुपूर्वी, भक्तामर, दिनयचंद चोवीसी तथा उत्तम चोपाइयां व अन्य अनेक जैन सिद्धान्तों के अनुसार दिये हुए प्रश्नोत्तर तथा उत्तम स्तुतियों की करीब २५६ पेज में रचना की गई है, तथा जिसका प्रत्येक जैन बन्धु के पास होना आवश्यक है। ऐसे उत्तम पुस्तक का प्रचार करने तथा स्वधर्मी बन्धुओं की मांग पूरी करने के लिए हमने अहमदाबाद से इसके प्रकाशन की स्वीकृति मंगा कर इसे छपाने का निश्चय किया है अतएव आपसे प्रार्थना है कि कृपया इसके लिये ज्यादा से ज्यादा तादाद में शीघ्र आर्डर भिजवादें ताकि इसका प्रबन्ध व प्रकाशन शीघ्र एवं उत्तम तरीके से हो सके।

आशा है हमारे जैन बन्धु इस अवसर को हाथ से न जाने देंगे व अपने अपने नगर में इसका प्रचार कर अधिक तादाद में आर्डर भेज कर इस कार्य की सफलता में सहयोग प्रदान करेंगे।

पत्र व्यवहार का पता

सहसकरण जीतमल चोपड़ा

लाखन कोटड़ी, अजमेर

जीत ज्योति

भाग पांचवा

तन दे, धन को राखिए, धन दे रखिए लाज।

तन दे, धन दे, लाज दे एक धर्म के काज॥

रचयिता

कुं० जीतमल चोपड़ा

अवैतनिक मंत्री

श्री श्वे० स्था० जैन युवक संघ अजमेर

मुद्रक व प्रकाशक—अम्बालाल माथुर

अमर प्रेस, अजमेर

प्रथमावृत्ति १००० } आषाढ़ बदी ११ सं० २००५ ता० ३-७-४८ शनिवार { मूल्य =)॥ आना

विश्व बन्धु बापू की स्मृति में

—समर्पित—

बापू तुम इस युग के वीर थे, अद्वितीय थे और महान्
तुम होगये अमर दुनिया में, करके हिंसा का विष पान

'जोत'

स्वतन्त्र भारत-जिन्दाबाद

[तर्ज—आज हिमालय की चोटी से]

१५ अगस्त को लाल किले से, वीरोंने ललकारा है
दूर हटो २ ए अंग्रेजो अब, हिन्दुस्तान हमारा है ॥ टेर ॥
समय बहुत सा बीत चुका, यहां राज्य तुम्हें करते करते
भारत को गारत कर डाला, चालाकियां चलते चलते
पुज्य बापू ने लगाया जब से भारत छोड़ो नारा है ॥ दूर ॥
जोर जुल्म किया अंग्रेजों ने, खूब ही अत्याचार हुआ
आन्दोलन और सत्याग्रह हुए जलियान वाला कांड हुआ
भारत के नर रत्नो ने, हंस हंस प्राणों को वारा है ॥ दूर ॥
१५ अगस्त सन् ४७ में, भागे बन्दर बेचारे
हिन्दुस्तां आजाद हुआ, जय हिन्द लगा सच्चे नारे
नेहरू से वीरों ने 'जोत' भारत का भार अब धारा है ॥ दूर ॥

बापू की स्मृति में

[तर्ज—कव्वाली]

निर्दई कर नीचता पूरा किया अरमान को।

विश्व में तूने किया बदनाम हिन्दुस्तान को ॥ टेर ॥

[शेर] विश्व का सरताज भारत देश माने है सभी।

श्री राम कृष्ण से हुए अवतार यहां पर कभी

उस बार भारत मां के ही थे बापू सच्चे लाड़ले।

होगा नहीं अनुचित अगर अवतारी भी हम मानलें।

[illegible] संसार के थे पूजनीय। प्यारे थे हर इन्सान को ॥विश्व॥

बापू हुए तब राज्य था अंग्रेजों का इस देश में।

हिन्द परवश होगया पड़ पश्चिमी लवलेश में।

बैरिस्टरी कर पास वकालत बापू जब करने लगे।

देखी जो हालत देश की तो फिर नेत्र भरने लगे,
देश को देखा दुःखी बन्धन में माँ की शान को ॥ विश्व ॥

आजादी का नारा लगाया शस्त्र अहिंसा सार कर,
जेलों में जा कर दुःख सहे पाई विजयव्रत धार कर,
अछुतों को हृदय लगाया, देश में की जाग्रति,
नेहरू और सुभाष से साथी थे सच्चे भारती,
"भारत को छोड़ो" नारा लगाया अंग्रेजों की जान को ॥ विश्व ॥

'४७ की १५ अगस्त अंग्रेज भागे हार कर,
स्वतन्त्र भारत हो गया माता के बन्धन काट कर,
फिर भाई भाई लड़ पड़े बेमान पागलपन किया,
तब लाखों ही जानें बचाई शान्ति संदेशा दिया,
अहिंसा की शक्ति दिखाई जग के हर इन्सान को ॥ विश्व ॥

४८ की जनवरी थी ३० तारीख शाम की,
प्रार्थना सभा में पहुँचे वन्दने भगवान् को,
उस समय एक दुष्ट ने वार गोली का किया,
हिन्द का वो सच्चा हिन्दू, हिन्दू के हाथों मरा
भारत हुआ अनाथ बापू पहुंचे स्वर्गस्थान को ॥ विश्व ॥

मर कर अमर वो होगए पर देश उनका है ऋणी,
ए भाइयो सोचो जरा बापू में ए कैसी बनी,
मिट्टी को मानव किया और वो ही कातिल जा बनी,
संसार थूकेगा सदा सुन बापू जी की जीवनी,
प्रातः उठके "ज.र" कर उनके सदा गुन गान को ॥ विश्व ॥

वीर स्तुति

[तर्ज—तू धन, तू धन, तू धन, तू धन,]

तू धन, तू धन, तू धन, तू धन, वीर प्रभु अवतारी,
मिथ्यात्व अंधकार हरन को प्रकट्या दिनकर भारी ॥ तू धन । टेर

"सिद्धारथ" कुल दीपक चन्दन "त्रिसला" दे महतारी,
चैत सुदी तेरस कुंडलपुर प्रकटे जग यश धारी ॥ तू धन ॥

घर घर मंगल मोद सवाया रिद्धि वृद्धि हुई भारी,
वर्धमान जिन नाम दियो फिर तीन लोक सुखकारी ॥ तू धन ॥

इन्द्र इन्द्राणी मेरु शिखर पर, महोत्सव कीनो भारी,
मेरु धुजाया नाम धराया, महावीर बलधारी ॥ तू धन ॥

संयम ले फिर कर्म खपाया, कष्ट सहे अति भारी,
केवल ज्ञान की ज्योत जगा कर, दियो ज्ञान हितकारी ॥ तू धन ॥

सत्य अहिंसा ज्योत जगाई, हिंसा दूर निवारी,
चंद कौशिक अर्जुन से तारे, पापी करे हजारी ॥ तू धन ॥

वर्धमान प्रभु वृद्धि करजो, दीजो वैभव भारी
अक्षय अजर अमर पद पाऊं, जनम जनम दुःख टारी ॥ तू धन ॥

असाढ़ वदी ग्यारस संवत, दो हजार चार मंझारी,
"ओनमल" की शरण चरण में, बार बार बलिहारी ॥ तू धन ॥

"मुनिराजों से"

लोभी गुरु तारे नहीं, तिरे सो तारणहार ।
जो तू तिरयो चाहिये, निर्लोभी गुरु धार ॥

सच्चे साधु

(तर्ज—सरोता कहां भूल आए प्यारे)

हे साधु सच्चे जैन के वो ही जग में भैया ॥ टेर ॥
कनक कामनि के जो त्यागी रखते नहीं रूपैया
प्राणीमात्र की रक्षा के हित निज सर्वस्व लुटैया ॥ हे ॥
नंगे पांव चले नित पैदल देश देश विचरैया
रूखा सूखा मिले जो खाते भिक्षा के लिवैया ॥ हे ॥
पंच मुष्टि का लोच करे खुद नहीं हो बाल बनैया
रात्री में नहीं खाते पीते रखे न गीदा तकैया ॥ हे ॥
कर में ओघा रखते हर दम मुख मुंह पति बंधैया
आठो याम एक प्रभु नाम में चित को रखे रमैया ॥हे॥
सदुपदेश सुनाते जग को सच्ची राह बतैया
राग द्वेष से रहे दूर आपस में प्रेम बढैया ॥ हे ॥
"जैन" धन्य ऐसे साधु जो क्रिया के चलैया
वरना फिरते सफेद पोश कई खाला ढंग रचैया ॥ हे॥
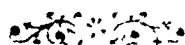
पथ भ्रष्ट साधुओं के कारण त्याग पूर्ण कठोर क्रियाओं की मूर्ति रूप जैन समाज बदनाम होने लगा है उन भेषधारी भ्रष्टाचारियों से क्रान्ति के द्वारा ही इस समाज का रक्षण कर सकते हैं।

"लेखक"

—मुनिराजो जागो—

(तर्ज—जागो २ रे भारतीयों, भारत नैया डूबी जाय)

जागो २ जी मुनिराजो, अब तो दिल मिल करो सुधार ॥ टेर ॥

शिथिलाचारियों को अपनाया [illegible] ही किया प्रचार
साधु होकर के नहीं छोड़ा तेरा मेरा व्यवहार ॥ जागो ॥

आज तुम्हारे ही हाथों है, जैन जाति का भार,
उन्नति रही दूर आपने दिन दिन किया बिगार ॥ जागो ॥

नई नई पंथ नई टोलियां नए नए सरदार
[illegible] छोटी बात को तोड़ी, बन गए गुरु [illegible] ॥ जागो ॥

श्रावकों का डर रहा न मन में, किया इनमें भी वार
[illegible] के प्रबल जाल में, [illegible] हो [illegible] जार ॥ जागो ॥

[illegible] फूट से श्रावक जन, दिन दिन २ हुवा बिगार

* साधुओं से

जैन जगत में आज कुछ: है ऐसों का जोर ।
पेम्फलेट जिनके छपे, जाहिर है चहुँ ओर ॥

[तर्ज – जागो जागो रे स्वाधीनो भारत नैया डूबी जाय]

चेतो चेतो नाम के धारी, साधुओ, जीत कहे ललकार ॥ टेर ॥

कहने को तो छोड़ा तुमने, मोह माया का भार,
पर रखने लग गए आज तो तुम भी कागजिए कलदार ।चेतो॥

सफेद पोस, फैसन में रहते, मिठ बोले सरदार,
भोले भाइयों को फुसला कर, भर लेते भंडार ॥चेतो॥

रखते अपने संग में हर दम, एक गुप्तचर लार,
बड़े बड़े धन्धे खुलवाते, करते जो कारोबार ॥चेतो॥

चेलों की तो भूख के मारे, फिरते सरे बजार,
जो कोई चिड़िया फसे, तुरत ही करते उस पर वार ॥चेतो॥

कुछ लोभी मन मेले श्रावक, करें देटी व्यापार
चेलों के भूखे साधु अब, गिनवाते कलदार ॥चेतो॥

आज्ञा की जरूरत नहीं चाहे, मुंड ले वन में जार
समय पड़े वो शिष्य बन जाते गुरुओं के सरदार ॥चेतो॥

या तो अलग जा टोली बनाते, या छोड़े निज भार
आज तो मोटे मोटे साधु भी, देते भेष उतार ।चेतो॥

अबतो आँखे खोलो जोलो, अपने कर्त्तव्य भार,
शुद्ध संयम, क्रिया में चालो, बनो एक मुख्तियार ॥चेतो॥

कुछ देखा, कुछ सुना और कुछ देखे हैं इश्तिहार,
इसी लिये निज फर्ज समझ कर "जीत" करे हुशियार ॥चेतो॥

युवकों से

देश, धर्म और जाति पे, तन, मन, धन, और प्रान।
युवको वारो हर्ष से, रखो हिन्द की शान॥

देश हित

[तर्ज—जाग जाग मेवाड़, "राजपुतानी"]

जाग जाग रणवीर, जाग ए भारत देश महान,
जाग ए वीरों की सन्तान
स्वतन्त्र होगी आज जगत में भारत मां की शान॥ टेर॥

नव जवानो, आगे आओ, सज केसरिया साज,
आज तुम्हारे ही हाथों है, भारत मां की लाज,
मातृभूमि पे कर दो वीरो, तन, मन, धन, कुरबान॥ जाग ए॥

प्रलय मचे, खंजरें चमके, हो आंधी तूफान,
पग पग पर हो मौत खेलती, कर पूरे अरमान,
स्वतन्त्रता संग्राम में होजा, हंस हंस के बलिदान॥ जाग ए॥

बिजली सी शक्ति हो कर में, हो भाई सब साथ,
मैदाने जंग में दिखलादो, अब तो दो दो हाथ,
दुश्मन के सिर गिरे तुम बन कर, काली बला महान॥ जाग ए॥

देख कहीं ना दूध लजाना, माँ के पूत सपूत,
देख कहीं ना शीस झुकाना, क्रान्ति के अग्रदूत,
[illegible] भारत प्यारा घर-घर जय हिन्दुस्तान॥ जाग ए॥

( )

श्री

धर्म हित

[तर्ज—जागो जागो रे भागीगे]

जागो जागो रे नवयुवकों, अब तो दिल दिल करो सुधार ॥टेर॥
धर्म कर्म को भूल गए सब छाया पापा चार
अस्पत होकर भी तुम भूले, अपना सद् व्यवहार ॥ जागो ॥
हिंसा वादी महा कुकर्मी, जिनके बुरे रिवाज
दोनों वक्त वो भी मस्जिद मे पढ़ते नित्य नवाज ॥ जागो ॥
गिरजाघर में जाकर देखो, रवीवार के भोर
तमाम स्त्रियां पुरुष जाते, यद्यपि कर्म कठोर ॥ जागो ॥
अन्य जातियां भी करती है निश दिन प्रभु की याद
हरी कीर्तन गा गा करते मठ मन्दिर को शाद ॥ जागो ॥
पर अहिंसा का अनुयाई है जो धर्म सभी में श्रेष्ठ
आज तुम्हारे हाथों हो रहा देखो दिन दिन नेष्ठ ॥ जागो ॥
भूले भटके भी नहीं जाते, कभी स्थानक माय
समाई रही दूर पांच नवकार का ध्यान न आय ॥ जागो ॥
सम्प्रदाय के जाल को तोड़ो करो सभी से प्यार
हो जावो फिर "जीत" धर्म पर, तन मन से न्योछार ॥ जागो ॥

[तर्ज—छोड़ जग का ए यार झमेला "प्रभाती"]

जागो जागो जैनी भाई, छोड़ो आलस करो एक ताई ॥ टेर ॥
कैसी निद्रा छाई, भान भूले, अब तो भोर हुआ देख तू ले
सारी दुनियां ने जागृति पाई ॥ छोड़ो ॥
देश आजादी का झूला झूले, जैन कौम क्यों कर्त्तव्य भूले
अपना हक क्यों रहे हो गमाई ॥ छोड़ो ॥
गृह कलह का बन्धन तोड़ो साम्प्रदायिकता से मुंह मोड़ो
दिन दिन गिर रही समाज सदाई ॥ छोड़ो ॥
मोह माया के फंसे चक्कर में, छोड़ा कौम का ध्यान गटर में
समय कौम हित मिलता है नाई ॥ छोड़ो ॥
हुई छुट्टी तो मोज मनाते, खेले तास और गोठ मनाते
आते समाज समाजों में नाई ॥ छोड़ो ॥
नर जन्म जो व्यर्थ गमाते, पी के दूध जो माँ का लजाते
ऐसों का न होना अच्छा भाई ॥ छोड़ो ॥
निज कौम पे तन मन वारो, जागो जैन के वीर सितारो
"जीत" रख कौमी शान सदाई ॥ छोड़ो ॥

[तर्ज—रस कुल करे बखना]

श्रावक पन अपनावो रे, युग युग क्यों व्यर्थ गमावो।
कुछ तो कर जावो जावो, कुछ तो कर जावो ॥ टेर ॥
देख समय की चाल, आज कुछ तो जगो, कुछ तो जगो।
भारत के पांव उठकर, मनों भगो, मनों भगो।

अस्पत जात कहावो रे, ऊंचा होकर के नीचा,
गिरता क्यो जावो ॥ आवो ॥

मनशा जैसी दशा हो रही आज है, आज है।
पापाचार में फंस खोए सुख साज है, साज है ॥
धर्म, कर्म को छोड़ा रे पापों से नाता जोड़ा,
ज्यांरो फल पावो ॥ आवो ॥

पुन्य योग नर रत्न मिला है जग जाना, जग जाना।
चिड़िया चुग जाए खेत, पड़े फिर पछताना, पछताना।
धर्म ध्यान चित लावो रे, तपस्याको जोर लगावो,
आनन्द पावो ॥ आवो ॥

युवक जगे फिर भी थे सो रया नींद में नींद में।
जानी कांई करे, जोश नहीं वींद में, वींद मे ॥
संघपति कहलावो रे, पंचा को नाम धरावो।
कुछ तो निभावो ॥ आवो ॥

सेवा के है भाव हृदय मे, जोश है, जोश है।
मां–बाप को कहने मे, नहीं दोष है, दोष है ॥
बिगड़ी दशा बनाने को, 'जीत' कहे हो शब्द करड़े।
गुस्सो मत लावो ॥ आवो ॥

धर्म हित

[तर्ज – जैनी वीरो विश्व मे जिन धर्म चमकार दीजिए]

जैना वीरो, मेम्बर बन जावो युवक संघ के ॥ टेर ॥
और कोम जग गई, तुमको नहीं अपनी खबर

अब तो चेत आइयो, सब जग उठे है संग के ॥ टेर ॥
द्वेषता को दूर कर, अब एकता धारण करो,
पी पी प्याले प्रेम के सब हो जावो एक रंग के ॥ टेर ॥
समाज में हो जाग्रति, उद्देश्य प्यारा है यही
कुरूढ़ियों को दूर कर कानून बनावें ढंग के ॥ टेर ॥
संस्थाएं फिर सुचारू रूप से आगे बढ़े
तन मन धन अपना लगा जग को जगावें संघ के ॥ टेर ॥
सत्य, अहिंसा, और क्षमा का शस्त्र लेकर हाथ में
जैन ध्वजा को लहराए "जीत" सब मिल संघ के ॥ टेर ॥

(तर्ज़ः—सब बोलो नेमीराजा की)

हिल मिल कर सब खेलो होली ॥ टेर ॥
क्रोध, मान माया की टोली, फंसी आत्मा या भोली ॥ हिल ॥
दूर होय अज्ञान की खोली, आओ खेलें ऐसी होली ॥ हिल ॥
ज्ञान गुलाल की भर २ झोली समता केसर रंग घोली । हिल ।
सत्य अहिंसा क्षमा की गोली, प्रेम सहित बोलो बोली ॥ हिल ॥
'जैन' जाग्रति घर २ होली अब युवकों की बन गई टोली ॥हिल॥

समाज हित

[तर्ज़—आजा आजा मेरे बरबाद मोहब्बत के सहारे]

आगो आगो,
आगो आरे युवको क्यों मां का दूध लजाओ,
आलस को छोड़ क्यों नहीं मैदान में आओ ॥ आगो ॥
[illegible] धर्म के टुकड़े, या धर्म के टुकड़े,

उनके नशे की मस्ती को ए वीरो मिटाओ ॥ आलस ॥
समाज की हालत, तुम्हें मालूम है सारी तुम्हें मालूम है सारी
दर दर फिरते हैं लाल लाखो उन्हें बचाओ ॥ आलस ॥
लुच्चे, जुआरी, लम्पटी के, ब्याह हो जाते, ब्याह हो जाते,
फिरते हैं शिक्षित कुंवारे क्यों आज बताओ ॥ आलस ॥
समाज में जो खेलते दिन रात धन होली दिन रात धन होली
उन्हीं के हथकन्डों से इस जाति को बचाओ ॥ आलस ॥
खाकरके रकमें धर्म की बनते जो साहूकार बनते जो साहूकार
उन कुकर्मियों के कर्म कुछ जग को बताओ ॥ आलस ॥
क्या हुआ गर मिट गए, समाज के लिए, समाज के लिए
मर कर अमर हो जाओगे, ए "जीत", जगाओ ॥ आलस ॥

[तर्ज—तावड़ा धीमो पड़जा रे]

जैनीयो अबतो जागोरे, छोड़ अविद्या भार धर्म हित कुछ तो त्यागोरे ॥टेर॥
मोटा मोटा बांध पागड़ा सूछां ताव लगार
पाप कमाओ क्यों कर कर थे, बेटी का व्यापार ॥ जैनीयो ॥
चोर, जुआरी होवे लम्पटी चाहे हो बीमार
धन ने देखकर ब्यावो बेटी, देवो जन्म बिगार ॥ जैनीयो ॥
जीवन भर दुःख पावे कन्या, फंस कुकर्मी लार
रोगी के संग होवे विधवा, लागे हाय अपार ॥ जैनीयो ॥
डोरा दे दे कन्या ब्यावो, धनवाना की लार
कसर जरासी पड़ जावे तो कर बैठे तकरार ॥ जैनीयो ॥
पढ़या लिख्या कई फिरे कुंवारा इण जातिरा लाल

गरीब देख नहीं देवो लड़की, हेरो धन और माल ॥ जैनीयों ॥

उज्जड खेड़ा फिर वसे सजी निर्धनीया धन होय

म . एक नहीं रहे किसी की या भी लीजो जोय ॥ जैनीयों ॥

भाई ने भाई अपनावो. करो भाई सुं प्यार

"ज्ञानमल" जब ही होवेला जैन जाति उद्धार ॥ जैनीयों ॥

पंचो से

न जाति प्रेम हो जिसमें, मोहब्बत हो न भाई की ।

वो मुर्दा कौम है जिसमें, न बू हो एकताई की ॥

पंच पणा धारो

(तर्ज-रमझुम बरसे बादलवा. मस्त हवाएं आई)

दिल मिल सभी विचारो रे. जाति में करो सुधारो ।

पंच पणो धारो. धारो, पंच पणो धारो ॥

देख समय की चाल, आप जग जावो सा, जावो सा ।

छोड़ पुराना ख्याल एक. बन जावो सा, जावो सा ॥

रन दिन हुयो बिगारो रे. ध्यान कहां गयो तुम्हारो ।

कुछतो विचारो ॥ धारो ॥

सभी संस्थाएं अब दिन दिन गिर रहीं. गिर रहीं ।

फूट कलह के जाल में पूरी घिर रही, घिर रही ॥

थे तो होश सभारो रे, इनको फिर से उद्धारो ।

तन. धन वारो ॥ धारो ॥

उनके नशे की मस्ती को ए वीरो मिटाओ ॥ आलस ॥
समाज की हालत, तुम्हें मालूम है सारी तुम्हें मालूम है सारी
दर दर फिरते हैं लाल लाखो उन्हें बचाओ ॥ आलस ॥
लुच्चे, जुआरी, लम्पटी के, ब्याह हो जाते, ब्याह हो जाते.
फिरते हैं शिक्षित कुंवारे क्यों आज बताओ ॥ आलस ॥
समाज में जो खेलते दिन रात धन होली दिन रात धन होली
उन्हीं के हथकन्डों से इस जाति को बचाओ ॥ आलस ॥
खाकरके रकमें धर्म की बनते जो साहूकार बनते जो साहूकार
उन कुकर्मियों के कर्म कुछ जग को बताओ ॥ आलस ॥
क्या हुआ गर मिट गए, समाज के लिए, समाज के लिए
मर कर अमर हो जाओगे, ए "जीत", जगाओ ॥ आलस ॥

[तर्ज—तावड़ा धीमो पड़जा रे]

जैनीयों अबतो जागोरे, छोड़ अविद्या भार धर्म हित कुछ तो त्यागोरे ॥टेर॥
मोटा मोटा बांध पागड़ा मूछां ताव लगार
पाप कमाओ क्यों कर कर थे, बेटी का व्यापार ॥ जैनीयो ॥
चोर, जुआरी होवे लम्पटी चाहे हो बीमार
धन ने देखकर ब्यावो बेटी, देवो जन्म बिगार ॥ जैनीयो ॥
जीवन भर दुःख पावे कन्या, फंस कुकर्मी लार
रोगी के संग होवे विधवा, लागे हाय अपार ॥ जैनीयो ॥
डोरा दे दे कन्या ब्यावो, धनवाना की लार
कसर जरासी पड़ जावे तो कर बैठे तकरार ॥ जैनीयो ॥
पढ़्या लिख्या कई फिरे कुंवारा इण जातिरा लाल

गरीब देख नहीं देवो लड़की, हेरो धन और माल ॥ जैनीयों ॥
उज्जड खेड़ा फिर बसे सजी निर्धनीया धन होय
सदा एक नहीं रहे किसी की या भी लीजो जोय ॥ जैनीयों ॥
भाई ने भाई अपनावो, करो भाई सु प्यार
"जीतमल" जब ही होवेला जैन जाति उद्धार ॥ जैनीयों ॥

पंचो से

न जाति प्रेम हो जिसमें, मोहव्बत हो न भाई की ।
वो मुर्दा कौम है जिसमें, न बू हो एकताई की ॥

पंच पणो धारो

(तर्ज-रुमझुम बरसे बादलवा, मस्त हवाएं आई)

हिल मिल सभी विचारो रे, जाति में करो सुधारो ।
पंच पणो धारो, धारो, पंच पणो धारो ॥
देख समय की चाल, आप जग जावो सा, जावो सा ।
छोड़ पुराना ख्याल एक, बन जावो सा, जावो सा ॥
दिन दिन हुयो बिगारो रे, ध्यान कहां गयो तुम्हारो ।
कुछतो विचारो ॥ धारो ॥
सभी संस्थाए अब दिन दिन गिर रहीं, गिर रहीं ।
फूट कलह के जाल में पूरी घिर रही, घिर रही ॥
कुछ तो होश सभारो रे, इनको फिर से उद्धारो ।
तन, धन वारो ॥ धारो ॥

बिछुड़े हैं जो लाल, प्रेम उनसे करो, उनसे करो
देख समय को फेर, फेर तुम भी करो, तुम भी करो ॥
प्रेम परस्पर धारो रे, हिल मिलकर करो प्रचारो ।
संगठन धारो ॥ धारो ॥
गरीब हो या अमीर, हटो मत टेक से, टेक से ।
जाति की नजरो में, सब ही एक से, एक से ॥
न्याय नीति ने धारो रे, देखो मत थारो म्हारो ।
सत्य दिल धारो ॥ धारो ॥
युवकों की अर्जी पे ध्यान अब दीजिये, दीजिये ।
तजो आपसी फूट, पंचायत कीजिये, कीजिये ॥
जो भार आप दिल धारो रे, उणने पुरो संभारो, ।
"जीत" सुधारो ॥ धारो ॥

(तर्ज धर्म तिहारो हे नार, पती की सेवा करना)

पंचा करो सुधार. पंचपणा ने धारो ॥ टेर ॥
क्यो दिन दिन शान घटाई, कहां गई वो असपत ताई ।
इणारो करो विचार ॥ पंचा
थे कियो न्याय जद ताई, समझा सबने एक सम भाई ।
हुक्म भी चल्यो अपार ॥ पंचा
अब फंस्या छेपता माई, होगया खुशामदी भाई ।
दिन दिन हुयो बिगार ॥ पंचा ॥
धनवान देख डर जावो, छोटा पर छुरी चलावो ।
न्याय से करदो बार ॥ पंचा ॥

हुई हाण दिना दिन भाई. सब कर रया मन की चाई ।
मर्यादा दीवी बिसार ॥ पंचा ॥
आजम पर पंच बिठाव, सन्मुख फिर पाग बंधाव
पंच भी करे स्वीकार ॥ पंचा ॥
फिर नारेल दो दो ल्याव, वे साची बन बन आव ।
शीश पर तिलक लगार ॥ पंचा ।
जद नियत पलटो खाव, वो खोद लेय निट जाव
जबान रो कांई ईतबार ॥ पंचा ॥
नहीं लाग देय कोई थांकी, चवरी चोवास टांकी ।
भूल गया क्यूं अधिकार ॥पंचा ॥
बुढ़ा भी ब्याह रचाव, कोई दो दो ब्याह कर ल्याव ।
करो थे फिर व्यवहार ॥ पंचा ॥
डोरा से छोरा खोंचे, बेटी ने रुपया ले बेचे ।
क्यान होसी निस्तार ॥ पंचा ॥
अब पंचो कार्य संभारो, देवो दंड छोड़ थांरो म्हारो ।
करे जो ऐसा कार ॥ पंचा ॥
मत मीठा पर ललचावो, अब समय देख जग जावो ।
अर्ज करूं बारम्बार ॥ पंचा ॥
और कौमे सब ही जागी, थांने कांई घुंटी लागी ।
करो क्यों नहीं विचार ॥ पंचा ॥
गर थे कुछ नहीं कर पावो, निज भार छोड़ हट जावो ।
"जीतमल" कहे ललकार ॥ पंचा ॥

धर्म के टुकड़े खोरों से

[तर्ज— गढ़ ऊंचो घणो जी गिरनारी को ॥ होली की]

अरे वा वा मर्दो, पार न पायो मुफ्त हलाली को,
खा खा धर्मादो, गहरो घड़वास्यो कांई ग्रर वाली को ॥ टेर ॥
पचायत को माल, जिस पर खोटी दृष्टि डाल
समझो काकाजी रो माल थे तो
आयो ज्यों ही खायो समझ दलाली को ॥ अरे ॥
साहुकार तो जाण थाने दियो जाति सनमान, जर जमीन और मकान
जिणारो, भार संभलायो रखवाली को ॥ अरे ॥
नियत हुई खराब, लगायो फिर थे अपणा दाव आज तो बनबैठा नवाब
थे तो खूब सीख्यो है धन्धो जाली को ॥ अरे ॥
पर भगवत आगे न्याव, थारा होसी हाल खराब "जीत" नहीं चलसी कोई दाव
बन्दे पीले रस अब भी न्याय की प्याली को ॥ अरे ॥

[तर्ज—खिदमते धर्म पर जो कि मर जायेंगे]

छोड़ स्वार्थ को जब सत्य अपनायेंगे,
तब ही पंच पंचायत चला पायेंगे ॥ टेर ॥
चाहे धनवान हो या गरीब हो कोई,
सबको एकही सा नियम बतलायेंगे ॥ तब ॥
रिश्तेदारीयों का मोह छोड़ सभी,
खुले आम विरोध में आ जायंगे ॥ तब ॥
छोड़ कर के लालच लड्डुओं का ए सब,

करणी की सजा पूरी भुगतायेंगे ॥ तब ॥

देख हालत समय की जो चेतेंगे फिर

नए नियम सभी मिल के बणायेंगे ॥ तब ॥

पंचायत का जर और जमीन सभी

पंच भाईयों के हाथों में संभलायंगे ॥ तब ॥

"जीत" होगी जवानों के हाथों मे जब,

बागडोर तो यही चता जायं ॥ तब ॥

---बहनों मे---

जननी जणे तो भक्त जन, या दाता या शूर ।

नहीं तो रहिजे बांझड़ी, मती गमाजे नूर ॥

(तर्जः—धर्म तिहारो ए नार पति की सेवा करना)

बहनों करो सुधार अब तो होश संभालो ॥ टेर ॥

सब महिलाए अब जागी, निज कर्त्तव्य के पथ लागी,

छोड़ अविद्या भार ॥ अब तो ॥

कुरूढ़या दूर हटावो, अब समय देख जग जावो,

हिल मिल करो सुधार ॥ अब तो ॥

बनो धीर, वीर, बलधारी जाग्रति करो अब भारी,

छोड़ पड़दा सु प्यार ॥ अब तो ॥

संतान की शोभाली जो, निज धर्म की शिक्षा दीजो,

रहे नित शुद्ध विचार ॥ अब तो ॥
पुत्री ने शिक्षा दीजो, श्रद्धा सारू ब्याह कर दीजो
गिणजो मत कलदार ॥ अब तो ॥
नित बड़ां को हुक्म उठावो, सेवा कर लिजो लावो,
खूब करजो सत्कार ॥ अब तो ॥
पति की आज्ञा ने पालो, दुख सुख में एक सम चालो,
बणो सतवन्ती नार ॥ अब तो ॥
मत करजो कभी लड़ाई, संग जासी बोल भलाई,
जाय नहीं धन परिवार ॥ अब तो ॥
नित गीत सुमंगल गावो, मत गाल्यां गाय रिझावो,
बुरो है यो व्यवहार ॥ अब तो ॥
ए मलमल रेशम छोड़ो, खादी सु प्रिती जोड़ो,
सुखी होवे संसार ॥ अब तो ॥
फैशन ने दूरी राखो, मत किसी को कड़वा भाखो,
परस्पर राखो प्यार ॥ अब तो ॥
नित लावो धर्म मे लीजो, दीन दुखिया की सेवा किजो।
पुन्य बांधो। सुखकार ॥ अबतो ॥
एक बात ध्यान मे राखो, मत पानी "होली" पर नाको।
बुरो है यों व्यवहार ॥ अबतो ॥
क्यो गंदो पानी, नाको यो धर्म नही हैं थांको ।
जीव को होय संहार ॥ अबतो ॥
है आशा तुमसे भारी अब जागो जागो ए बहनां सारी।
"जीतमल" कहे हरबार ॥ अबतो ॥

(तर्जः—तावड़ा धीमो पड़जारे ।)

बहना थे अबतो जागो ए छोड़ अविद्या भार धर्म हित कुछ तो त्यागो ए ॥टेर॥

बांध मुंहपती करो समाई, जद थे स्थानक माय,
पॅच-रस हो जावो भेली तो, विकथा देवो चलाय ॥ वहना ॥
पर निंदा करबो करो सथे, ध्यान रखो कुछ नाय,
समाई शुभ करता भी थारे, पाप कर्म बध जाय ॥ बहना ॥
व्याह सगाई लेणा देणा की, पंचायत वहां होय
झुंठ सॉच कहता थेका थाने, ख्यात जरा नहीं होय ॥ वहना ॥
समाई समता धारयां की, मती करो बकवाद
मुश्किल से मिले वक्त इणां मे करो प्रभू ने याद ॥ वहना ॥
व्याख्यान के माय करो थे, हिल मिल सभी सुधार
यथा योग्य देवो जगह, सब ही को करो सदा सत्कार ॥ वहना ॥
धर्म ध्यान में चित्त रमावो रखो परस्पर प्यार
'जीतमल' रहो दृढ़ धर्म पर होसी बेड़ो पार ॥ वहना ॥

(तर्जः—जागो २ रे रणवीरो)

जागो जागो ए गुणांवती बहनो हिल मिल करो सुधार ॥ टेर ॥

जाति न्याति में करो सुधारो, सब मिल एक वार
सारी वाता देख समय की लेवो नियम सुधार ॥ जागो ॥
जाति में जीमण जावो जद राखो सदा विचार
पुरसगारी को ध्यान रखो लेवो इच्छा अनुसार ॥ जागो ॥
घर धणी को नुकसान होय और माल जाय बेकार

झुंठो नांकवा में है हानी, लागे पाप अपार ॥ जागो ॥
चाक पुजवा और पचक्खवा, जावो बजारा माय
एक तरफ सब ही मिल चालो, अलग अलग हो नाय ॥ जगो ॥
राखो प्रेम परस्पर सब ही, धैर्य रखो हरवार
थोड़ी थोड़ी चीजा के खातिर, करणों नहीं तकरार ॥ जागो ॥
पढ़ावो, और बनावो, धीर, वीर, सन्तान
"जीत" थांसु हीं होसी फिर से जाति को उत्थान ॥ जागो ॥

कलयुग——

[तर्ज:— रे पंछी बावरीया]

रे खर्ची ले लेना, कर सुकृत मन चाए,
झमेला दो दिन का, जाना है देश पराए ॥ टेर ॥
देख समय की हालत सारी, कहुँ हकिकत न्यारी न्यारी,
चढयो जुल्म अति जोरसे नहीं देखे न्याय अन्याय समय ऐसो आयो।
खावो, पीवो, पहरवो सब मौजा छुटी यार, देख कर चकरायो
रिश्वत का बाजार में नहीं झुंठ साँच की जाँच फतह पइसो पायो।
धर्म कर्म गए भूल सब कोई छायो पापाचार इस्यो कलयुग आयो।
झेला:—प्रथम, भारत में छायो कन्ट्रोल, नाज नहीं पुरो सरे,
देवे नाज डेढ़ पाव तोल, पेट नही पुरो भरे,
मक्की बाजरा मिलता है नाय मंडी मांय कागला फिरे.
घी भी हो गया तीन छटाग तेल मीठो डेढ पा मिले,
सुण प्यारे, होगई मिठाई बंद वीना शक्कर के,
सुण प्यारे नहीं मिले नाज भी पुरा विना चक्कर के,
सुण प्यारे अब गया गेहूँ का स्वाद मिले नहीं असला
सुण प्यारे हो गया है जिससे रोग नया अब खुजली,
लावणी:—अब कहूँ कपड़े का हाल, सुणो सत्री भाई, भारत में कैसी

छाई आज तबाई, देते है कपड़ा टेक्स लगाकर मार
वह भी नहीं मिलता है तबियत अनुसारा
दोहा—जनता पर अन्याय कर, किया ब्लेक मारकेट,
बुगचे वाले बन गये आज लखपति सेठ ।
काजलियो—मत करो कभी अन्याय, नतिजो है खोटो ।
व्यापार गमायो गांठ से, थे कर कर चोर वजार ॥नतिजो॥
छिप छिप कर छः गुणा करो, फिर बोलो झूठ अपार ॥नतिजो॥
पण पाप को धन पचसी नहीं, है कांग्रेस सरकार ॥नतिजो॥
नया नया अब टेक्स लगा, सब निकाल लेसी सार ॥नतिजो॥
हो चतुर छोड़े दो ब्लेक ने, हो जाब सुखी संसार ॥नतिजो॥
बणजारी—यो देख समय नरनारी, चालो संभल संभल हरवारी
ही वो न्याय निती पे वारी, मत लेवों हाय दुखकारी
न दौलत महल अटारी, नहीं संग जायला थारी
ीं लगे काल के कारी करले सुकृत दिन चारी
(चलत) "जीतमल" समझाए ॥ रे खर्चो ॥

नेता जी

[तर्ज- कव्वाली]

वीर करता युद्ध देखो, वीरता की शान में
आओ प्यारे बोष, फिर एक बार हिन्दुस्तान में ॥टेर॥
हिन्द के सपूत तुम से रत्न पा माँ धन्य है,
क्रान्ति का अग्रदूत तो तुमसा न कोई अन्य है,
सल्तनत की आखों में भी धूल तुमने डालदी,
पहरे में रह गायब हुए हो धन्य प्यारे भारती,

हिन्द से कैसे गये अंग्रेज थे हैरान में ॥ आवो ॥
आजाद हिन्द फौज की विदेश में रचना करी,
सिक्का जमाया बहादुरी का धन्य तेरी चातुरी.
वीरों को कहा जोश से कहना मेरा यही तुम्हे,
तुम मुझे दो खून आजादी देऊंगा मै तुम्हे,
लाखों ही तैयार थे, आजादी के बलिदान में ॥ आवो ॥
बर्मा के मैदान में हुई लड़ाई जोर से,
अंग्रेज खड़े थे एक तरफ हिंद फौज दुजी ओर से,
छक्के छुड़ाए वीरो ने अंग्रेज पिछे को हटे,
अन्न जल पुरा हुआ पर वीर वही थे डटे,
मोसम पलटी वर्फ जमी फिर उस रस्ते दूर स्थान में ॥ आवो ॥
कुछ हटे कुछ काम आए और कुछ पकड़े गए,
चला मुकदमा हिन्द में सभी वीर बरी हुए,
गायब हुए नेताजी जिनका आज तक नहीं है पता,
पर हृदय में विश्वास है जिवित है प्यारे वो नेता,
वक्त पर प्रकटेंगे आकर है अभी अनजान में ॥ आवो ॥
रोशन हुए जब भेद सारे देश भी चकरा गया,
जय हिंद का नारा भी सारे विश्व भर में छा गया,
प्रण हुआ पुरा तेरा अब क्या रहा है शेष में,
भारत माँ रो रो कहे आ लाल अबतो देश में,
"ज्ञान" अब जल्दि पधारो है हिंद तेरे ध्यान में ॥ आवो ॥

अवश्य पढ़िये

जीत संगीत माला का पुष्प पांचवा

जीत की प्रार्थना

उर्फ

गणेश गुण महिमा

श्री जैन जग वल्लभ, सर्व शिरोमणी श्री मज्जैनाचार्य पूज्य श्री १००८ श्री श्री गणेशी लाल जी म० के गुण गायनों की आज कल की सिनेमा व मारवाड़ी तर्जों पर अपूर्व रचना की गई है। मूल्य ≡)

प्रेस में छप रहा है

जीत ज्योति

जिसमें अब तक के पांच भागों के चुनिन्दा चुनिन्दा भजनों का संग्रह किया गया है। प्रत्येक जैन बन्धु के पास इसका होना आवश्यक है यह पुस्तक सभाओं, जलूसों व धार्मिक उत्सवों के लिए परम उपयोगी है।

कृपया पहिले से ग्राहक बनिए।

खुश खबर

प्रिय बन्धुओं।

हमारे पास बाहर के स्वधर्मी बन्धुओं के कई कार्ड व पत्र आए हुए हैं जिसमें उन्होंने जीत ज्योति के सैट की मांग की है, परन्तु स्टाक में पुस्तकों की कमी के कारण हम न भेज सके। अब चूंकि कुछ पुस्तकों का संग्रह कर लिया गया है, अतएव अब जीत ज्योति के भाग पांच व जीत संगीत माला के पांच पुष्प, इन दसों पुस्तकों के कुछ सैट तैयार हो जायंगे। अतएव विदित हो कि जिन बन्धुओं को इसके सैट की आवश्यकता होवे २) दो रुपया सजिल्द के, मनिआर्डर अथवा रेवन्यु स्टाम्प (खाने के टिकट) पहले भेजने की कृपा करें। ताकि पुस्तक बुक पोस्ट द्वारा भेज दी जायगी तथा व्यर्थ की लिखा पढ़ी एवं समय की बरबादी से बच सकेंगे।

कृपया शीघ्रता करें वरना फिर निराश होना पड़ेगा।

पुस्तक मिलने का पता
सहसकरण जीतमल चोपड़ा
लाखन कोटड़ी अजमेर

जीत ज्योति भाग तिसरे का पुष्प पहिला

जीत चोवीसी

रचयिता :—

कुँ० जीतमल चोपड़ा अजमेर

अवैतनिक मंत्री :—

श्री श्वे० स्था० जैन युवक संघ अजमेर.

अमूल्य भेंट

श्री सज्जैनाचार्य पूज्य श्री श्री १००८ श्री हस्तिमलजी म० साहब की सम्प्रदाय के महा सतयां जी श्री छोगा जी म० के ठाणों आठ से २००२ में अजमेर चातुर्मास की खुशी में श्रीमान सेठ मगनमल जी सा० अच्चाणी की तरफ से अमूल्य भेंट।

अवश्य पढ़िए

जीत ज्योति भाग १, २, ३,

मिलने का पता:—

सहसकरण जीतमल चोपड़ा

लाखन कोटड़ी अजमेर।

पुज्य श्री १००८ श्री ... लीमलजी महाराज की सम्प्रदाय के

महा सतीजी ... श्री छोगाजी के ठाणां ८ से सं० २००२

में अजमेर चातुर्मास की खुशी में अमूल्य भेट

प्रकाशक:—

श्रीमान् सेठ मगनमलजी सा० ...

प्रसीडेन्ट:—

श्री श्वे० स्था० जैन युवक संघ अजमेर ।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतम प्रभूः ।
मंगलं स्थुलि भद्राद्याः, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ॥

"चोबीस तिर्थंकर महिमा"

(*तर्ज:—मेरे छोटे से दिल में छोटी सी दुनियाँ रे*)

मैं तो प्रातः उठ वंदू, चोबीस तिर्थंकर रे ॥ टेर ॥

रिषभ अजित संभव अभिनन्दन,
सुमति पद्म सुपार्श्व चंदा वंदन,
सुविधी नमन कर रे ॥ मैं ॥ १ ॥

शीतल श्री यश, वासु पुज्य स्वामी,
विमल अनन्त, धर्म जिन नामी,
शान्ती जिनेश्वर रे ॥ मैं ॥ २ ॥

कुंथु अरह मल्ली मुनि सुव्रत,
नेमी नाथ रिष्टनेमी, पारस,
चोबीसवे महावीर रे ॥ मैं ॥ ३ ॥

मंगल मय है श्री जिन सारे,
हृदय रखो, इनको नित प्यारे,
वो ही उद्धार रे ॥ मैं ॥ ४ ॥

"जीतमल" ली शरण चरण की,
करो कृपा प्रोय पार करण की,
नैया भँवर में रे ॥ मैं ॥ ५

१ "आदि नाथ स्तवन"

(तर्ज़ः—सावन के नज़ारे हैं)

आदि नाथ हमारे हैं, नमो नमो ॥ टेर ॥

पहले तिर्थंकर, जैनियों, जिन पद को धारे हैं ॥ आदि ॥
"मरूदेवी" के लाला, "नाभी" नृप के नद जैनियों"
"नाभी" नृप के नंद, राज सुख अपारे हैं ॥ आदि ॥ १ ॥
देख दशा को भारत की, सब सुख को छोड़ा, "जैनियों"
सब सुख को छोड़ा, किया धर्म प्रचारे है ॥ आदि ॥ २ ॥
जैन धर्म कि की आदि, मेटी दुःख व्याधि "जैनियों"
मेटी दुःख व्याधी, भव जीव उद्धारे हैं ॥ आदि ॥ ३ ॥
भारत माता प्यारी, है संकट में भारी, "आदि प्रभू"
है संकट में भारी, आज तोय पुकारे हैं ॥ आदि ॥ ४ ॥
प्रभू सुधि लेवो आकर, तेरे चरणों का चाकर, 'आदि प्रभो'
तेरे चरणों का चाकर, खड़ा "जीत" द्वारे है ॥ आदि ॥ ५ ॥

२ अजित नाथ स्तवन

(तर्ज —जैन धर्म का डंका दुनियां में, बजवा दिया नेमी लाले ने)

ए जीत का डंका दुनियां में, बजवाया अजित जिन प्यारे ने । टेर ।
"जय-शत्रु" के आनन्द भया, विजया राणी घर जन्म लिया,
तिर्थंकर पद को पाय लिया, भारत के वीर सितारे ने । ए ।
अज्ञान की काली घटा छाई, भाई के दुश्मन थे भाई,
अवतार लिया प्रभू ने आई, भक्तों के संकट हारे ने । ए ।
जैन धर्म को प्रभू ने चमकाया, अहिंसा का पाठ फिर सिखलाया,

सोते हुए हिन्द को जगाया, उस वीर के एक एक नारे ने।
आज भारत पर दुख छाया है, सत्य धर्म को भूल गमाया है,
हां-कैसा रंग जमाया है, यहां पाप के इस अंधियारे ने। ए।
कहे "जीतमल" जल्दि आवो, भारत को फिर से अपनावो,
सुमार्ग धर्म का बतलावो, टेरी टेर तेरे एक प्यारे ने। ए।

३ संभव नाथ स्तवन

(*तर्जः— पंछी-बावरिया*)

रे मन नित ध्याएजा, श्री संभव जिनराज।
के ध्यान लगाएजा, सदा सुधारे काज। टेर॥
"जीतारथ" नृप के सुत प्यारे, धर्म की जोत जगाई सारे,
तिर्थंकर पद साज। रे मन। १
त्रिभुवन के तुम नाथ कहाए, "सेन्या" लाल मेरे मन भाए,
वंदू तुझको आज रे मन। २॥
तुम जग जीवन अन्तरयामी, भव भव बंध छुड़ाओ स्वामी,
रख भक्तन की लाज। रे मन। ३
भारत में फिर आवो स्वामी, कष्ट मिटावो अंतरयामी
आन सुधारो काज। रे मन। ४
"जीतमल" तेरा गुण गावे, नित चरणों का ध्यान लगावे,
मेरे हो सरके ताज। रे मन। ५

४ अभिनन्दन स्तवन

(*तर्जः—थारी काजल केरी डाब्या-मारवाड़ी*)

अभिनन्दन जिनराज रो, नित ध्यान धर लीजो,

ध्यान धरियां, पहलां थे, मन शुद्ध कर लीजो, । टेर
"संवर राय" पिता रा नंद, आज वंद लीजो,
"सिद्धारथ" राणो रा लाल, आय दर्शन दीजो । अभि । १
झुंठो संसार जाण इण में, मोह मत दीजो,
आवागवन मिटावो तो, प्रभु ध्यान धर लीजो । अभि । २
पाकर जैन धर्म, इण से दूरा मत रीजो,
तन मन धन से कर सेवा, जग में लावो ले लीजो । अ०
मतलब को संसार, थो ही सार ले लीजो,
प्रभू नाम लेई आतम, उद्धार कर लीजो, । अभि । ४
कहे "जीनमल" इण पे ध्यान थे दीजो,
लगा लगन प्रभू से, बेड़ो पार कर लीजो । अभि । ५

५ सुमति नाथ स्तवन

(तर्जः—छोटी मोटी सुईया रे जाली का मेरा कातना)

सुमति सुमति दातार, प्राणी नित ध्यावना ॥ टेर ॥
लक्ष चोरासी में भटकत आया २
अब के मिल्यो पुण्य योग भावोनी शुद्ध भावना । १
मनुष्य जन्म पाया उत्तम कुल भा
मिलता न बारम्बार, न व्यर्थ गमावना । २
जीवन है एक फूल सो माया,
आखिर मिलना हे धूल, सोरभ लुटावना । ३
लगा लगन मन जिन भक्ति में
जनम मरन दुःख टाल, शीव सुख पावना । ४

हांजी प्रगटे पर दुःख मेटन काज । जीवरे । २
कंचन काया धार, जीवरे, कियो आतम उद्धार,
हाँजी तारी जैन धर्म की जहाज । जीव[illegible] । ३
सुमरयां दुःख टल जाय, जीवरे, मन मंछित फल पाय,
हांजी राखे भक्त जनन की लाज । जीवरे । ४
"जीतमल" गुण गाय, प्रभूजी, चरणां शीश नवाय,
हाँजी प्रभू सारो आतम काज । जीवरे । ५

८ चंदा प्रभू स्तवन

(तर्ज—हवा तुम धीरे बहो रे, मेरे आते होंगें चितचोर)

प्राणी जन नित उठ ध्यावो रे, श्री चंदा प्रभु उठ भोर ॥ टेर ॥
त्रीभुवन के हो अधिकारी, मन मोहन मुरतिया प्यारी,
हो प्रभु नैया पार करो मेरी, अध बीच खाय हिलोर ॥ प्रा० ॥
"महासेन" नृप नंद दुलारे, 'लखमा' सती के हो उजियारे
राज पाट धन धाम छोड़कर, अष्ट कर्म लिया तोर ॥ प्रा० ॥
चन्द्र समान शीतल है काया, अद्भुत तेरी है प्रभु माया,
दास शरण में आया, मेरे चित को लीना चोर ॥ प्रा० ॥
भक्त जनन के हो रखवारे, दीनों के दुख मेटन हारे,
हो प्रभु प्यारे तुम्ही बतावो, कौन हमारा और ॥ प्रा० ॥
'जीतमल' नित वंदू तुझको, पार करो भव सिन्धु से मुझको,
करता बारम्बार विनय यही, कर अर्जी पर गोर ॥ प्रा० ॥

९ सुविधी नाथ जी स्तवन

(तर्जः—भँवर थारी बादली)

चतुर नर ध्यावजो श्री सुविधीनाथ जिनराज ॥ टेर ॥

'सुग्रीव' नृप का लाड़ला प्यारे 'रामा' देवी का नंद,
नवमां जिनेश्वर वंद ले प्यारे, मिट जावे भव भव फंद ॥१॥
त्रिभुवन केरो नाम है प्यारे, कंचन वरण शरीर,
घट घट व्यापक है प्रभू प्यारे, भक्तां की हरे पीर ॥चतुर॥२॥
ध्यान धरयां आनन्द होवे प्यारे, भजतां भय सब दूर,
सिध होय सब कामना प्यारे, सुख सम्पति भरपूर ॥चतुर॥३
औषधी को सेवन कियां प्यारे, रोग दूर हो जाय,
प्रभू गुण गायां चित से प्यारे, कर्म चूर हो जाय ॥ चतुर ॥४॥
महिमा का नहीं पार है प्यारे, कहाँ तक करूँ बयान,
'जीतमल' पावो मोक्ष पद, प्यारे, धर जो प्रभू को ध्यान ॥ चतुर ॥५

१० शीतल नाथ जी स्तवन

(तर्जः—प्रभू जी मान चाकर राखो जी)

शीतल प्रभू हृदय राखो जी ॥ टेर

हृदय राखस्यो पार उतरस्यो, आवा गमन मिटास्यो,
भव भव का फिर बंध छुड़ाकर, मुक्ति पथ ने पास्यो ॥ प्र० ॥१॥
"दृढ़ रथ" नृप का लाल कहावो, नंदा देवी माता,
दसवें तीर्थंकर हो नामी, जग में हो विख्याता ॥ प्र० ॥२॥
शीतल काया, अद्भुत माया, पार नहीं कोई पाया,
निश्चय हुआ उद्धार हृदय से, जिसने ध्यान लगाया ॥ प्र० ॥३॥
कर्मों का कर नाश धर्म से, जिसने स्नेह लगाया,
पार हुआ भव सिन्धु से उसका, जग ने सुयश गाया ॥ प्र० ॥४॥
हृदय में हरदम रखो प्रभू को, कहाँ तक महिमा गाऊं,
"जीतमल" प्रभू को चरणों में, बार बार बलि जाऊँ ॥ प्रभू ॥५॥

११ श्रीयंश स्वामी स्तवन

(तर्ज:— *श्री महावीर स्वामी, अंतर यामी, दीनानाथ दयाल*)

श्री यंश स्वामी, तिर्थंकर नामी, वंदू वारम्वार। टेर
"विश्व सेन" का लाड़लारे, विश्वा देवी नंद,
जीवरे ग्यारवां तिर्थंकर मोटा, प्रातःउठ नित वंद। श्री। १
राज सुख सब छोड़ केरे, कियो. आतम उद्धार
कर्म काट कर मोक्ष पधारया भ ग्या सुख अपार। श्री। २
जब आ कष्ट पडयो भारत पर, प्रभू थे लोयो बचाय,
जैन धर्म को मार्ग सांचो, दीनों आप बताय,। श्री। ३
आज मिट्यो सत्य धर्म हिन्द को, मचरहा हाहाकार,
आकर सुधि लेवो आप प्रभूजी, हे जग पालन हार। श्री। ४
दीन दयाल, दया के सागर, करना नित गुण गान,
"जीतमल" नैया पार लगाजो, हे श्री यंश भगवान। श्री। ५

१२ वासुपुज्य स्तवन

(तर्ज.—*बिछुड़ा*)

वासु पुज्य गुण गावो, ध्यान लगावो हो ज्ञानी जी,
सभी मनावोज्ञानी जी, सुख वैभव पावो ज्ञानीजी,। टेर
दोहा जब आ भारत भूमि में छाया कष्ट अपार,
लाज रखी प्रभु ने तभी आप ले अवतार,
जनम मरण मिटावो, जो गर चावो हो ज्ञानी जी,। सभी १
"वसु" राजा के लाड़ले, "जैया" राणा के नंद,
शुद्ध मन ध्यावे सदा, तो वरते आनन्द,
श्री जिन बारवां ध्यावो, शीश नवावो हो ज्ञानी जी,। सभी २

झूट कपट छल छिद्र में, फंसा था जब संसार,
प्रकट होकर के तभी, किया जगत उद्धार,
हिंसा कलह मिटावो, अहिंसा अपनावो हो ज्ञानी जी। स ३
दोहा दया धर्म का ज्ञान दे, तिथकर पदधार,
ज्योत जगाई ज्ञान की, तो वरता जय जय कार,
भव भय वंद छुड़ावो, जो गर चावो हो ज्ञानी जी, । स ४
मंगल मय है जिन सदा, कष्ट निवारण हार,
"जीतमल" जावे सदा चरणों मे बलिहार,
दास को प्रभू अपनावो, पार लगावो हो ज्ञानी जी, । स ५

१३ विमल नाथ स्तवन

(तर्जः—दुनिया मे सब जोड़े जोड़े)

विमल नाथ गुण गाए, गाए,
चरणों में शीश नवाए, हां हांरे प्राणी गाए, गाए। टेर
'कृतभानु' के राज दुलारे, 'सामा' राणी के हो सुत प्यारे.
वार वार बलि जांए। हां हांरे प्राणी ॥ १ ॥
हो तुम जग में हे जिन नामी, दीन दयाल भक्तों के स्वामी,
तेरा हो ध्यान लगाए। हां हांरे प्राणी ॥ २ ॥
धर्म दिवाकर गुण के सागर, पाठ पढाकर, ज्ञान बताकर,
कितको आप सिधाए। हां हांरे प्राणी ॥ ३ ॥
आज ए भारत माता प्यारी तुम बिन हो रही हा दुखियारी,
आवो, तुम्हे बुलाए। हां हांरे प्राणी ॥ ४ ॥
प्रातः उठ नित ध्यान लगाऊँ तेरी महिमा हरदम गाऊं,
"जीतमल" मन भाए, हां हांरे प्राणी ॥ ५ ॥

१४ अनन्त नाथ स्तवन

(तर्ज़ः—बस मे होते आए भगवान भक्त के)

अन्नत नाथ गुण गायें, आवो हम सब ही मिल करके। टेर

सिंहरथ नृप के हो तुम लाला, राज पाट धन धाम विशाला,
"सुजसा" नंद कहाए। आवो। १।

तुच्छ समझ सब जग की माया दया धर्म से नेह लगाया,
जग में सुयश पाए। आवो॥ २॥

कर्मो का कर चूर आपने, माया को कर दूर आपने,
भव भव बंद छुड़ाए। आवो॥ ३॥

जग उद्धारक आप कहाए, ज्ञान देय फिर मोक्ष सिधाए,
तारण तिरण कहाए, । आवो॥ ४॥

दीनों के हो सरजन हारे, "ओतमल" के हो रखवारे,
नित तेरा गुण गाए। आवो॥ ५॥

१५ धर्म नाथ स्तवन

तर्ज़ः—(देखो २ जी बदरवा छाए जिया घबराए)

आवो आवो जी सभी गुण गाए धर्म नाथ ध्याए। टेर

"भानु" नृप घर जन्म लिया था, घर घर आनन्द छाए,
"सुव्रता" के लाल आपके, सब मिल मंगल गाए, । आवो। १

सुन पुकार जग की हे प्रभू तुम अवतार ले आए,
पीड़ा आन हरी भक्तों की, धन्य वीर तुम जाए, । आवो। २

अहिंसा का दे ज्ञान जगत में, धर्म ध्वजा फहराए,
कौन जगत के उज्जवल तारे तेरी याद समाए, । आवो। ३

आकर मेटो कष्ट हमारे, फिरसे तुम्हें बुलाए,
जब आ कष्ट पड़े भक्तों पे, तुमने ही आन बचाए। आवो। ४
"जीतमल" गहरी नदियां में, नैय गोते खावे,
तुम बिन स्वामी, कौन हमारी, नैया पार लगाए। आवो। ५

१६ शान्ती नाथ स्तवन

(तर्जः—आरती—ओम जय जगदीश हरे)

अ म् जय "अचला" नन्दन, स्वामी, जय अचला नन्दन,
शान्ति जिनेश्वर स्वामी, करता नित वन्दन ॥ ओम्। टेर ॥
शान्ति शान्ति के दाता, तिर्थंकर नामी स्वामी २
घट घट के हो व्यापक, हे अंतरयामी ॥ ओम् ॥ १ ॥
जैन धर्म के स्वामी, हो तुम प्रतिपाला,
अहिंसा को अपनाया, कर्मों को टाला। ओम् ॥ २ ॥
भक्त जनन के स्वामी, हो तुम रखवारे,
सुख सम्पत्ति के दाता, दुःख मेटन हारे ॥ ओम् ॥ ३ ॥
मंगल मय है स्वामी, जो कोई गुण गावे,
रोग सोग मिट जावे, सद्गती को पावे ॥ ओम् ॥ ४ ॥
"विश्वसेन" के नंदा, ध्यान धरूँ तेरा,
"जीतमल" प्रभू काटो, भव भव का फेरा ॥ ओम्। ५ ॥

१७ कुंथु नाथ स्तवन

(तर्जः—बालम धीरे बोल, कोई सुन लेगा)

है जिन्दगी अनमोल, कुन्थु नाथ भजले ॥ टेर ॥
"सूर" राजा के पुत्र प्यारे, "श्री देवी" के नंदा,

प्रात उठी ने नित स्मरण कर मिट जावे भव फंदा,
तू घट के पट खोल ॥ है ॥ १ ॥
झूंठी है सब जग की माया, है जग झूठा सपना,
क्षण भंगूर है देह एक दिन, मिट्टी मांही मिलना,
ले ज्ञान तराजू तोल ॥ है ॥ २ ॥
मतलब की है दुनिया सारी, नहीं साथ कोई चलना,
धनी के सब ही हैं संग साथी, बिगड़ी के कोई ना,
प्रभू नाम तू बोल ॥ है ॥ ३ ॥
फंसा जो गर इस मोह में प्यारे, तो फिर कुछ नहीं होना,
बचपन खेल, जवानी मोह में, बुढ़ापे में रोना—
पाकर नर चोल ॥ है ॥ ४ ॥
शीतमल हे दीन बन्धु ! मैं, लिया तिहारा शरणा,
भव सागर बीच नाव पुरानी, प्रभू! पार तुम करना,
मत कर जो थे पोल ॥ है ॥ ५ ॥

१८ अरह नाथ स्तवन

(*तर्जः—खिदमते धर्म पर जां कि मर जायंगे*)

ज्ञानी चेतो तुम्हारा, किधर ध्यान है,
अरह नाथ का ए सच्चा फरमान है ॥ टेर ॥
प्रीति प्यारे धर्म से तुम करना सदा,
गुण गावो, प्रभू के न भूलो कदा,
होते भक्तों ही के वश में भगवान है ॥ ज्ञानी ॥ १ ॥
छोड़ो झूंठ, कपट, छल छिद्र सभी,

न करना भूल करके चोरी कभी,
समझो इनको नरक के ए सामान है ॥ ज्ञानी ॥ २ ॥
ब्रह्मचर्य का पालन करो हरदम,
समझो पर नारी को निज माता के सम,
कभी करना न तन जन पे अभिमान है ॥ ज्ञानी ॥ ३ ॥
सच्ची बात सदा तुम मुख से कहो,
नि धर्म का पालन भी करते रहो,
बढ़ता इस ही से जग में सम्मान है ॥ ज्ञानी ॥ ४ ॥
प्रभु की वाणी को हरदम हृदय रखना,
उनकी शिक्षा पे "जीत" ध्यान धरना,
माता देवी सुदर्शन के सुत महान है ॥ ज्ञानी ॥ ५ ॥

१९ मल्लीनाथ स्तवन

(तर्ज.—मन मूरख क्यों दीवाना है)

मल्लो नाथ जिनेश्वर प्यारा है,
तिर्थंकर पद को धारा है, । टेर ।
दया धर्म अवतार लेय प्रभु,
जग का तारण हारा है, । मल्लो । १
प्रकट हुए जब दुख मेटन को,
क्रिया धर्म विस्तारा है, । मल्लो । २
"कुम्भ" पिता परभावती मां के,
रूप नारी का धारा है, । मल्लो । ३
ज्ञान को ज्योति जगाई जग में,

संकट मेटन हारा है। मल्ली। ४
"जीतमल" नित वंदन तुझको,
बारम्बार हमारा है। मल्ली। ५

२० मुनिसुब्रत तवन

(तर्जः—प्रभाती—प्रभू की लीला का पार न पाया)

मुनिवर सुब्रत के गुण गाऊँ, नित चरणों का ध्यान लगाऊँ। टेर।
"सुमती" नृप के हो उजियारे, माता "पदमा वती" के प्यारे
जिनराज बिसवें ध्याऊँ। नित। १
घोर अन्धकार जब छाया, लेके अवतार प्रभू आया
तेरी महिमा को पार न पाऊँ। नित। २
हिंसा कलह को दूर भगाया, जग को अहिंसा का पाठ सिखाया
तिर्थंकर तुम्हें मनाऊँ। नित। ३
प्रभू तुम हो दीन दयाला, भक्तो के हो तुम रखवाला
तेरे गुण में कहां तक गाऊँ। नित। ४
आज भारत पर दुःख छाया, सत्य धर्म को भूल गमाया,
आवो "जीतमल" बुलाऊँ। नित। ५

२१ नमी नाथ स्तवन

(तर्जः—नदी किनारो हो, तारे भरी रातें)

नमी नाथ जिनेश्वर के, आवो गुण गाए। टेर
"विश्व नंद" "विप्रा" के लाल वंद,
इक्कीस वें जिनंद, तुम्हें मनाए,। नमि। १
जैन धर्म के लाल, शुद्ध संयम पाल,

जनम मरण टाल, सद्‌गती पाए, । नमो । २
राज के सुख को छोड़ा, दुनियां से मुख मोड़ा,
तप से कर्मों को तोड़ा भव बंध छुड़ाए, । नमो । ३
कष्ट सहे अपार, तन मन से हो न्योछार,
धर्म की जय जय कार, घोर कराए, । नमो । ४
जैन जाति के ताज, घोर दुःख छाया आज,
आन सुधारो काज, "जीत" बुलाए, । नमो । ५

२२ अरिष्ठ नेमीनाथ स्तवन

(तर्जः—तावड़ा धीमो पड़ज रे)

धन्य हो नेम कँवर ज्ञानी,
छोड़,नार को मोह, पशु की पीड़ा पहचानी । टेर ।
"समुद्र विजय" का लाड़ला सजी, बाईसवा जिन राज,
"उग्रसेन" घर आविया सजी, लेय वराती साज, । धन्य । १
हाथी घोड़ा पालकी ज्यांरी गिनती बेशुम्मार,
देखन आया देवी देवता, असंख्या नर नार, । धन्य । २
तोरण पर रथ आवियो सजी, पशुजन करी पुकार,
सुनकर करूणा आई नेम ने जाय चढ़ा गिरनार । धन्य । ३
राजुल महलां मांय सुनी जद, लिनी प्रतिज्ञा धार,
और किसी की चाह नहीं मैं वरूंगी नेम कँवार । धन्य । ४
राजुल भी संग चली नेम के छोड़ सभी सिणगार,
गिरनारी पे जाय "जीतमल" लीनो संजम सार, । ध

२३ पारस नाथ स्तवन

(तर्जः—मै हो गई पपैया राम पीऊ पीऊ करके)

मैं गाऊँ गुण आज प्रभू, पारस जिनन्द के ॥ टेर ॥

अश्व सेन के लाड़ले, तेवीसवे जिनराज,
लजा मोरी राखियो सदा सुधारो काज,
घर घर बजे फिर बाजे प्रभू आनन्द के ॥ मैं ॥ १ ॥

प्रकट हुये थे आप ले, दया धर्म अवतार,
जलते लक्कड़ में किया नाग नागिन उद्धार,
हो तुम्हीं तारण हार पद्भावती धरनेन्द्र के ॥ मैं ॥ २ ॥

जंगल मे जब मग्न थे, ध्यान में हे तुम वीर
दुष्ट मेघ ने वेर ले, बरसाया वहाँ नीर,
मुख तक आ गया नीर, 'भामा" नन्दन के ॥ मैं ॥ ३ ॥

प्रकट हुए पदमावती, और वहां धरनेन्द्र,
शीश पे फिर लीना उठा, ध्यान में मग्न जिनेन्द्र,
चरणों में गिरा आय मेघ शरमिन्द के ॥ मैं ॥ ४ ॥

अहिंसा का प्रचार कर, किया जीव उद्धार,
चिंतामणी के नाम से, वरते जय जय कार,
"जीतमल" हरषावे गुण गावे प्रभू चंद के ॥ मैं ॥ ५ ॥

२४ महावीर स्तवन

(तर्जः—घटा घनघोर घोर)

घटा घन घोर घोर, नैया खावे हिलोर,
वीर प्रभू आजा ॥ टेर ॥

सिद्धारथ के नंद आप हो, त्रिसला लाल कहाए,
चैत सुदि तेरस को जन्मे, घर घर आनन्द छाए,
बधावो बटे द्वार द्वार, घर घर मंगलाचार, बज रहे बाजा ॥आ
जनमत ही जग में आकर के चमत्कार दिखलाए,
लगा अंगुठा मेरू धुजाया महावीर कहलाए,
चरण तेरे बारबार, जाऊँ मैं बलिहार, दरश दिखाजा ॥ आ०॥
राज पाठ धन धाम छोड़ फिर धर्म स्नेह लगाए,
सुख को छोड़ा कर्म को तोड़ा भव भव बंध छुड़ाए,
गोतम शिष्य लार लार, कर दिया खेवा पार भव बंध छुड़ाजा । आ
आज फंसी छल छिद्र में दुनिया झूंठ कपट मन छाए,
हिंसा फैली घोर जगत में तुम बिन कौन बचाए,
दया दिल धार धार, प्रभू सुधि लेवो आर, पाठ पढ़ाजा । आ०।
देख दशा झट आवो प्रभो ! अब तेरी याद सताए,
न मन्दिर में बैठ "जीतमल" नित तेरा गुण गाए,
भवोदधि तार तार, नैया है मझधार, पार लगाजा ॥ आजा ॥

चातुर्मास की खुशी में

(तर्ज़ः—काली ए रानी, सफल कियो अवतार

धन्य धन्य हो सती, कर रया धर्म प्रचार,
हो रया जय जय कार ॥ धन्य ॥ टेर ॥

त्रिसला नंदन वीर प्रभू का ध्यान हृदय में धार,
सती श्री छोगा जी आपने, वंदू बारम्बार, ॥ १ ॥

दो हजार दो साल में जी, अजय शहर सुखकार,
चोमासो कियो आपने जी, घर घर मंगलाचार, ॥ २ ॥

सती राधा जी साथ में जी, ठाणां आठ सुं लार,
सती सुन्दरां जी गुणवंता त्यागी सुख संसार, ॥ ३ ॥

व्याख्यान की शेली उत्तम, हर्षे सुन नरनार,
ज्ञान ध्यान में चित रमावे कर रया आतम उद्धार, ॥ ४

शान्त स्वभावी धीर है जी, ज्ञानी गुण आगार,
शुद्ध क्रिया के मांही चाले, है सती आज्ञा कार, ॥ ५ ॥

धर्म ध्यान हुवो ठाठ से जी, लावो लेय नरनार,
तपस्या भी हुई खुब ही जी, आनन्द हुवो अपार, ॥ ६

दो हजार दो साल सवत्सरी, महिमा का नहीं पार,
"जीतमल" जावे सदा जी चरणां में बलिहार ॥ ७ ॥

"जीत ज्योति भाग तिसरे का पुष्प दूसरा"

जीत का गीत

रचयिताः—

कुँ० जीतमल चोपड़ा, अजमेर.

अवेतनिक मंत्रीः—

श्री श्वे० स्थानक वासी जैन युवक संघ,

व उपमंत्रीः—

श्री श्रमणो[illegible]सक जैन संगीत मंडल अजमेर.

प्रथमावृत्ति १००० | २००२ | मूल्य— —)॥ डेढ आना

"जैन बन्धुओं से"

ओर कोमें सब जग गई, पर जगी न जैन समाज ।
समय देख चाले नहीं, पाले कु रिवाज ॥
होली के त्योंहार पर, बोले जो अलफाज ।
अस्पत होकर खो रहे, अस्पत ताई आज ॥
"जीत का गीत" अर्पण करूं, पढ कर करो सु काज ।
राव बादशाह दूर कर, सजो उन्नति का साज ॥
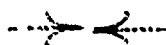
अवश्य पढिए

जीत ज्योति भाग दूसरा

जिसमें आप मोरध्वज, हरिश्चन्द्र, कर्ण, चन्दन बाला, अर्जुन माली, जम्बू स्वामी व नेम प्रभू आदि महापुरूषों के चरित्र को काव्य के नए कलेवर में पाएंगे ।

मुल्य =) तीन आना ।

मिलने का पता :—
महसकरण जीतमल चोपड़ा,
लाखन कोटड़ी, अजमेर ।

* अमर प्रेस अजमेर *

श्री वितरागाय नमः

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गोतम प्रभू।
मंगलं स्थुलि भद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ॥

"नेम प्रभु-स्तुति"

(तर्ज—जय बोलो वजरंग बाला की)

जय बोलो नेमी लाला की जय बोलो । टेर ॥

यादव कुल के हो उजियारे समुद्र विजय के सुत प्यारे ॥जय॥
परणन काज जान सज आए, उग्रसैन नृप घर धाए ॥जय॥
हाथी घोड़ा ऊंट पालकी, रथ मे नेम छवि बांकी ॥जय॥
देखन आए देवी देव भी, जान देख हरषाय सभी ॥जय॥
भात काज पशु पकड़ मंगाए, वाडों में वंद करवाए ॥जय॥
इधर नेम तोरण पर आए, पशु सभी मिल कुलड़ाए ॥जय॥
सुनि पुकार प्रभु करुणा लाए, ले तोरण से रथ फिर आए ॥जय॥
चढ़े भाव वैराग्य के दिल में, तजी नार प्रभु एक पल में ॥जय॥
चढ़े जाय गिरनार प्रभु फिर, संजम में चित किनो थिर ॥जय॥
जनम मरण दुख दिया मिटाई, तिर्थं कर पदवी पाई ॥जय॥
"जीत" धन्य प्रभु अन्तरयामी, भव भव बंध छुडावो स्वामी ॥जय॥

२ ❋ होली ❋
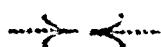
(तर्ज – देखो २ जी बदरवा छाय)

आई, आई जी फागण ऋतु आई, खुशियां छाई ॥ टेर ॥

फागण मस्त महिनों, गावो होली की बधाई।
घर घर में संदेश सुनावो, जागो जैनी भाई। आई ॥
ज्ञान का रंग घोल के खेलो, होली आपस मांई।
मीठा मीठा बोल बोल कर, प्रेम बढावो भाई ॥ आई ॥
कुरुढ्यां ने दूर हटावो, फाटा गाणो नांई।
आपस मांही गंदा बोले, कैसी कुमति छाई ॥ आई ॥
और कोम सब जाग गई, अब थे क्यों करो हंसाई।
राव, बादशाह दूरा मेलो, करो संगठन भाई ॥ आई ॥
जाति न्याति को करो सुधारो छोड़ो सब अकड़ाई।
'जीतमल' अब भी चेतो तो, रहसी बात सवाई ॥ आई ॥

३ ॥ चेतो नरनारी ॥

(तर्ज – थोरो काजलियो)

यो देख समय को फेर, चेतो नरनारी ॥ टेर ॥

झूंट कपट छायो घणो, सत गयो समन्द्रा पार ॥ चेतो ॥
भाई भाई दुश्मन बण्या, आपस में कर तकरार ॥ चेतो ॥
जुलम बढ्यो अति जोर से, नहीं देखे न्याय अन्याय ॥ चेतो ॥
नहीं पंच पंचायती, नहीं रयो प्रेम दिल माय ॥ चेतो ॥
मर्यादा एर मर मिट, न पाणी गया मुलतान ॥ चेतो ॥
छोड़ कुरिती रिवाज ने, अब चलो समय अनु सार ॥ चेतो ॥

घर घर मे करो प्रचार यो, कोई जागो जैन समाज ॥ चेतो ॥
तन, मन, धन सब वार के, हो जाति पे न्योछार ॥ चेतो ॥
समय नहीं अब सोने का, रयो 'जीतमल' ललकार ॥ चेतो ॥

४ ❀ नेताजी का पुकार ❀

(तर्ज – आशक आया ए जान)

चेतो चेतो नर नार, देख दशा अब जागो कररया नेताजी पुकार ।टेर।
छोड़ो रीत पुरानी सारी, इण सुं है बरबादी थारी ।
तजो अविद्या भार, ज्ञान को करो जी प्रचार ॥ देख ॥
वस्त्र विदेशी से मुख मोड़ो, मलमली फाग पोमचा छोड़ो ।
करो खादी सुं प्यार, देश को करसी या उद्धार ॥ देख ॥
फेशन में मत डून्थां जावो, फिजुल खर्ची दूर हटाओ ।
करो देश हित त्याग, छोड़कर पड़दा को व्यवहार ॥ देख ॥
जाति-पांति में करो सुधारो, होकर पंच पंचपण धारो ।
छोड़ कपट को जाल, होवो तन मन से न्योछार ॥ देख ॥
जाग उठो अब युवक भाई, घर घर चरखा देवो चलाई ।
"जीत" अहिंसा धार, जिणसुं गांधी जी ने प्यार ॥ देख ॥

५ (युवकों से)

(तर्ज —मैं तो आया ए नखराली थारे पावना ए)

युवको हो जाओ तैयार देश के कारणे रे ॥ टेर ॥
कका: करिओ संप जरूर, खखा: खोलो मंडल पूर ।
गगा: गरजो बन के शूर, घघा: घर घर करो प्रचार ॥ देश ॥
चचा: चर्चा ज्ञान करावो, छछा: छापा बाच सुनाओ ।

जजाः जिण में लेख धरावो, झझाः झंडा कर में धार ॥ देश ॥
टटाः टेम वृथा मत खोवो ठठाः ठाला जो थे होवो ।
डडाः डर कर के मत सोवो, ढढाः ढोवो कर्तव्य भार । देश ॥
ततः तास खेलना छूटे थथाः थूंक फजीती छुटे ।
ददाः दुश्मन बने ना रूठे धधाः धर्म करो मुख्त्यार । देश ॥
पपाः पुत्र वीर के प्यारों, फफाः फेशन दूर निकालो ।
बबाः बंद करो बद धारो, भभाः भुल सुधारो यारों ॥
ममाः मातृ भुमि हित धार ॥ देश ॥
ययाः यत्न करो सुखदाई, रराः राखो घणी सफाई ।
ललाः लावो लेल्यो भाई, ववाः वक्त न व्यर्थ विसार ॥ देश ॥
शशाः शुभ गीतों को गावो षषाः षड ऋतुओं त्यों लावो ।
ससाः सावधान हो जावों, हहाः हिलमिल करो सुधार ॥ देश॥

६ ❀ वहनों मे ❀

(तर्ज—बहनों हो जावो तैयार)

"मीरा" सी प्रभू भक्ता प्यारी, 'सीता' सी सतवन्ती नारी ।
वनकर वहिनों आवो सारी, लो ए प्रतिज्ञा धार ॥वहनों॥
देश धर्म के लिए आज तुम, कर दिखलावो कुछ तो काज तुम ।
छोड़ देवो कुरिति रिवाज तुम, बनकर सच्चो नार ॥वहनों॥
वनो वीर बुजदिली को त्यागो, देख दशा भारत की जागो ।
तन मन धन चाहे कुछ भी लागो, डटकर करो सुधार ॥वहनों॥
सत्य धर्म झंडा लहरावो, अहिंसा की फिर ज्योत जगावो ।
भारत नैया पार लगावो, बनकर खेवन हार ॥वहनों॥
तुम ही से आशा है भारी, जगो वीर भारत की नारी ।
"जीत" निश्चय होगी तुम्हारी, जग में जय जय कार ॥वहनों॥

६ "किशमत का खेल"

(तर्ज—कोरो काजलियो)

इस किशमत आगे यार, किसी की नहीं चलती ॥ टेर ॥

किशमत से हरिश्चन्द्र ने, जा भर्यो निच घर नीर,
चली कुछ नाय गती ॥ इस ॥

किशमत से श्रीरामजी, गए चउदह वर्ष वनवास,
केकई की फिरी मती ॥ इस ॥

किशमत से रावण किया, जा रामचन्द्र से वैर,
लायो हर सीता सती ॥ इस ॥

किस्मत से हिरना स्व, गयो राम नाम ने भूल,
गर्व वश फिरी मती ॥ इस ॥

किशमत से कौरव दल ने, किना महाभारत युद्ध,
जिते द्रोपदी के पति ॥ इस ॥

किशमत से अब भारत में, ए मच रया हाहा कार,
फूट से हुई ए गती ॥ इस ॥

किश त के सब खेल हैं, कोई करो सत्य से प्रेम,
सत्य बिन नोय गती ॥ इस ॥

किशमत से ही "जीतमल" ए गाय सभा के बीच,
झूंठ नहीं एक रत्ती ॥ इस ॥

७ "बहनों से"

(तर्जः—अरे हो मृगानेनी हस्ती रा मान घटाया ए)

अरे हो गुणवंती पतिव्रत धर्म निभाई जो,
करके पति सेवा, जीवन सफल बनाई जो ॥ टेर ॥

ज्ञानचन्दजी सारी नार, सुन्दर सुणजो ध्यान लगार,
जग में पति सेवा सुखकार प्यारी, करके सेवा थे सुयश कमाईजो॥
आलस दुरो किजे, निद्रा बेगी ही तज दिजे,
प्रथम प्रभु को सुमरण किजे, पाछे पति का शुभ दर्शन पाई जो॥
घर का काज संवारो, हुक्म थें बड़ां को दिल में धारो,
काम चतुराई से करो सारो, जिणसुं गुणवंती थें कहलाई जो॥
भोजन सरस बनावो, पहले पति ने बैठ जिमावो,
हाथ में पखी लेय ढुलावो, करके खातिर थे पति ने खूब जिमाई जो॥
सभी काम खुद करजो, महनत करबा से मत डरजो,
संगत उत्तम नार की करजो जिणसुं ज्ञान सवायो नित पाईजो।
जो होवे सन्तान, उणने विद्या को दे ज्ञान,
बड़ा को करे सदा सन्मान, ऐसी शिक्षा थे खूब सिखाई जो॥
सज सोला सिणगार, पोढो पति देव की लार,
होकर तन मन से न्योछार, प्यारी करके खातिर थे खूब रिझाईजो।
(झेला) – थे तो करके खातिर खूब, हुक्म उठाई जो,
थे तो मीठी वाणी बोल प्रेम दरसाई जो॥
थे तो पर पुरुपां को ओर ध्यान मत लाई जो,
थे तो शुद्ध शीलव्रत पाल, सुयश कमाई जो,
थे तो रहिजो धर्म मांही लीन, प्रभु गुण गाई जो,
थे तो श्रद्धा सारू दे दान, पुण्य कमाई जो,
जो इण पर ध्यान लगासी पति कदे परनारां नहीं जासी,
"जीत" फिर थारां ही हो जासी, थे तो हंस हंस के कंठ लगाई जो॥

———

८ ॥ होली ॥

(तर्ज—धुंसो बाजो रे महाराज उम्मेदसिंह को)

हिल मिल कर सब खेलो होली ॥ टेर ॥

ककाः करो संगठन सारे, खखाः खोल मंडल प्यारे ॥ हिल ॥
गगः गरजो शूर समाना, घघाः घर घर संप करना । हिल ॥
चचाः चतुर छोड़ कुटलाई, छछाः छोड़ कुव्यसन भाई ॥ हिल ॥
जजाः जैन बन चित दे धरम में, झझाः झंड़ा ले धार कर में ॥ हिल ॥
टाः टेम न व्यर्थ गमावो, ठठाः ठाला मत बन जावो ॥ हिल ॥
डाः डर कोई काम न करना, ढढाः ढील भी नहीं करना ॥ हिल ॥
ताः ताव तज धीरज मोटी थथाः थूंक फजीति खोटी ॥ हिल ॥
दाः दुश्मन बनो न किसी के, धधाः धर्म पर रहो डटके ॥ हिल ॥
पाः पराई तज दो नारी, फफाः फेशन दुःख कारी ॥ हिल ॥
वाः वोलो बोल विचारो, भभाः मूल मत देवो गारी ॥ हिल ॥
याः यत्न करो सुखदाई, ररा: रहो मिल जुल भाई ॥ हिल ॥
लाः ल्यो लावो तन मन धन से, ववा वक्त नहीं आवे फिर से ॥ हिल ।
शाः शुभ गीतों को गावों, षषाः पड़ ऋतुल्यो लावो ॥ हिल ॥
ससाः सुकृत कर नर भव में, हहाः हो 'जीत' अमर जग मे ॥हिल॥

---

९ ॥ सुकृत करले रे ॥

(तर्ज— पत राखीयो ख्वाजे जी अजमेरां को)

सुकृत करले रे, जोवन दिन चार रसीया ॥ टेर ॥

गर्भवास में जब तूं आयो, तो प्रभू उंधो कर लटकायो ॥ सुकृत ॥

सुकृत को कर कोल तूं आयो, या नर भव देह दुर्लभ पायो ॥ सुकृत ॥
बचपन तूं हंस खेल गमायो, प्रभू भजन नहीं कर पायो ॥ सुकृत ॥
योवन वय में त्रिया प्यारी, मोहमाया में उलझो भारी ॥ सुकृत ॥
भोग विलासों में फंसरयो भारी, छोड़ प्रभू भक्ति प्यारी ॥ सुकृत ॥
काल चक्र को नहीं ठिकाणो, खाली हाथ पड़सी जाणो ॥ सुकृत ॥
कोड़ी कोड़ी माया जोड़ी, अन्त समय सब यहीं छोड़ी ॥ सुकृत ॥
प्रभू को कचेरी में जद जासी, किया जिस्या फल भुगतासी ॥ सुकृत ॥
जो सुख चाहै तूं भव, भव में, 'जीत' कमाले सुयश जग में ॥ सुकृत ॥

---

१० बहनों से

(तर्ज—म्हें तो आया प नखरालो थांरे पावणां प)

बहनों हो जावो तैयार देश के कारणे रे ॥ टेर ॥
कका: कहूं वात एक भारी, खखा: खादी सब सुं प्यारी।
गगा। ग्रहण करो गुणवारी, घघा: घर घर करो प्रचार ॥ देश ॥
चचा: चतुराई थे धारो, छछा: छोड़ो फेशन सारो।
जजा: जात में करो सुधारो, झझा: झगड़ा दूर निवारो ॥ देश ॥
टटा: टेम देख जग जावो, ठठा: ठीक समय यो आवो।
डडा: डर न दूर भगावो, ढढ़ा: ढोवो देश को भार ॥ देश ॥
तता: तुम से आशा भारी थथा: थूंक फजिती ख्वारी।
ददा: दूर करो अब सारी, धधा: धर्म पे हो न्योछार ॥ देश ॥
पपा: परदो दूर हटावो, फफा: फालतू खर्च मिटावो।
बबा: बूरा गीत मत गावो, भभा: भक्ति हृदय में धार ॥ देश ॥

ययाः यत्न करो सुखकारी, ररा: रहीजो मिल जुल सारी ।
लला: लिजो जग यश भारी, ववा: वीरता दिल में धार ॥ देश ॥
शशा: शान्ति सदा सुख दाई, षषा: षठ ऋतु लेवो भलाई ।
ससा: सांची "जीत' दरसाई, हहा: हिल मिल करो सुधार ॥ देश ॥

११ ❀ रहनेमी-राजुल ❀

सवाल (तर्ज—देवर भोजाई) जवाब

रहनेमी—राजुल कहना मान करूं मैं लाचारी ॥ टेर ॥
राजुल - रहनेमी नादान, मति क्यों गई मारी ॥ टेर ॥
रह: —राज गुफा मांय देखो, बैठो में ध्यान में,
रा: - गिरनार पे चाला प्रभू दरशन की ठान में,
रह:—इतने ही में वर्षा वरसी, शब्द पड्या कान में,
रा:—भिजा वस्त्र सारा, आई गुफा दरम्यान मे,
रह:— देखी मैने एक नारी ॥ रा० ॥
रा:—घोर अन्धकार छायो, दिखे ना कोयजी,
रह: नार है कोई साध्वी, ऐसी दिखे मोयजी,
रा:—वस्त्र सुखाया बैठी, अंग छिपोयजी,
रह:—देखी राजुल नार, रूप लिनो मन मोहजी,
रा:— देख्या मुनि एक भारी ॥ रह० ॥
रह:—भूल गयो ज्ञान ध्यान कुछ ना सुहायजी,
रा: - थर, थर धुजे अंग, देख पुरुष की छांयजी,
रह:—मै हूँ रहनेमी राजुलजी, डरो कोई नायजी,
रा:—देखकर देवरने वंध्यो, धिर दिल मायजी,

सुकृत को कर कोल तूं आयो, या नर भव देह दुर्लभ पायो ॥ सुकृत ॥
बचपन तूं हंस खेल गमायो, प्रभू भजन नही कर पायो ॥ सुकृत ॥
योवन वय में त्रिया प्यारी, मोहमाया में उलझो भारी ॥ सुकृत ॥
भोग विलासों में फंसरयो भारी, छोड़ प्रभू भक्ति प्यारी ॥ सुकृत ॥
काल चक्र को नहीं ठिकाणो, खाली हाथ पड़सी जाणो ॥ सुकृत ॥
कोड़ी कोड़ी माया जोड़ी, अन्त समय सब यहीं छोड़ी ॥ सुकृत ॥
प्रभू को कचेरी में जद जासी, किया जिस्या फल भुगतासी ॥ सुकृत ॥
जो सुख चाहै तूं भव, भव में, 'जीत' कमाले सुयश जग में ॥ सुकृत॥

---

१० बहनों से

(तर्ज—म्हें तो आया ए नखराली थांरे पावणां ए)

बहनों हो जावो तैयार देश के कारणे रे ॥ टेर ॥
कका: कहूं बात एक भारी, खखा: खादी सब सुं प्यारी ।
गगा: ग्रहण करो गुणवारी, घघा: घर घर करो प्रचार ॥ देश ॥
चचा: चतुराई थे धारो, छछा: छोड़ो फेशन सारो ।
जजा: जात में करो सुधारो, झझा: झगड़ा दूर निवारो ॥ देश ॥
टटा: टेम देख जग जावो, ठठा: ठीक समय यो आवो ।
डडा: ड़र न दूर भगावो, ढढ़ा: ढोवो देश को भार ॥ देश ॥
तता: तुम से आशा भारी थथा: थूंक फजिती ख्वारी ।
ददा: दूर करो अब सारी, धधा: धर्म पे हो न्योंछार ॥ देश ॥
पपा: परदो दूर हटावो, फफा: फालतू खर्च मिटावो ।
बबा: बूरा गीत मत गावो, भभा: भक्ति हृदय में धार ॥ देश ॥

यया: यत्न करो सुखकारी, ररा: रहीजो मिल जुल सारी।
लला: लिजो जग यश भारी, ववा: वीरता दिल में धार ॥ देश ॥
शशा: शान्त सदा सुख दाई, षषा: पठ ऋतु लेवो भलाई।
ससा: सांची "जीत" दरसाई, हहा: हिल मिल करो सुधार ॥ देश ॥

११ ❀ रहनेमी–राजुल ❀

सवाल

(तर्ज– देवर भोजाई)

जवाब

रहनेमी—राजुल कहना मान करूं मैं लाचारी ॥ टेर ॥
राजुल - रहनेमी नादान, मति क्यों गई मारी ॥ टेर ॥
रह: -राज गुफा मांय देखो, बैठो में ध्यान में,
रा: - गिरनार पे चाला प्रभू दरशन की ठान में,
रह:—इतने ही में वर्षा बरसी, शब्द पड्या कान में,
रा:—भिजा वस्त्र सारा, आई गुफा दरम्यान मे,
रह:—
देखी मैंने एक नारी ॥ रा० ॥
रा:—घोर अन्धकार छायो, दिखेना कोयजी,
रह: नार है कोई साध्वी, ऐसी दिखे मोयजी,
रा:—वस्त्र सुखाया बैठी, अंग छिपोयजी,
रह:— देखी राजुल नार, रूप लिनो मन मोहजी,
रा: —
देख्या मुनि एक भारी ॥ रह० ॥
रह:—भूल गयो ज्ञान ध्यान कुछ ना सुहायजी,
रा: - थर, थर धुजे अंग, देख पुरुप की छांयजी,
रह:—मैं हूँ रहनेमी राजुलजी, दुजो कोई नायजी,
रा:—देखकर देवरने बंध्यो, धिर दिल मायजी,

रह:— अर्ज एक सुनो मारी ॥ रा० ॥
रा:—वस्त्र समेटवाने, उठी तत्कालजी,
रह:—ठहरो प्यारी राजुल, पहले आयो यहां चालजी,
रा:—सुनकर वचन उठी, तन मांही झाल जी,
रह:—भोगें भोग दोनों, ओर छोड़ सब ख्यालजी,
रा:— शर्म नहीं दिल धारी ॥ रह० ॥
रह:—या उतम नर देही राजुल मिले नहीं हर वारजी,
रा:—पंच महाव्रत धारी हो, क्यो रयां जमारो हारजी,
रह:—भोगें सुख संसार का, योवन मझार जी,
रा:—काम के बश हो रहे अंधे कुछ तो करो विचारजी,
रह:— सुरत पर हूं वारी ॥ रह० ॥
रा:—संसार सुख छोड्या पाछे, फिर क्यों ललचायजी,
रह: चढ्यो रंग रूप को, कुछ ना सुहायजी,
रा:—वमन किया अन्न ने तो कुत्ता ही खायजी,
रह:—ऐसे कांई बोलो, मांसू सह्यो न जायजी,
रा:— देवेला धिक संसारी । रह० ॥
रह:—धन्य धन्य राजुल दिया, खूब ही ज्ञानजी,
रा:—संयम में रहो दृढ़ जिससे, होवे कल्यानजी,
रह:—काम के वश हो माता, मैं भूल गयो भानजी,
रा:—सुवह गयो शाम आवे, भुल्यो न जाणजी,
रह:— "जीनमल" जांऊवारी ॥ रा० ॥

———

१२ (हरिश्चन्द्र तारा)

'सवाल (तर्ज—युवको हो जावो तैयार) जवाब"

तारा - मैं तो विकती हूं विप्र घर सत्य के कारणे रे ॥ टेर ॥

हरि—तुमको धन्य है रानी तारा, सत्य के कारणे रे ॥ टेर ॥

तारा-कका: कियो न कुछ भी प्यारे खखा: खोल्या न पट घुंघटरे।

गगा: गाती थी गीत सुन हरे, घघा: घर घर अब मैं फिरती ॥सत्य॥

हरि-चचा: गले वस नही मारो, छछा: छोड़ो हाथ हमारो।

जजा: जावो काम संवारो झझा: झाडू जाकर मारो ॥ सत्य॥

तारा-टटा: टाट पे कभी ना सोती ठठा ठड़ा कभी ना खाती।

ड़ड़ा: ड्योढी हजारो रहती, ढढा: ढोती अब मैं भार ॥सत्य॥

हरि-तता: तेरी सदा विजय हो थथा: थांरो नाम अमर हो।

ददा: दुनियां यो कहती हो धधा: धर्म पे विकगई रानी ॥सत्य॥

तारा-पपा: प्यारे तुम सरताज फफा: फर्ज यही मम आज।

बबा: वक्त पड्या रख लाज, भभा: भूल न सत्य विसार ॥सत्य॥

हरि-यया याद रखो मेरी बात, ररा: रहि जो प्रेम के साथ।

'लला। लिजो यश में हाथ, ववा: वेर न किजो प्यारी ॥सत्य॥

तारा:-शशा: शान्ति करो अब नाथ, षपा: षड़ऋतु ों के नाथ।

ससा: सत्य के खातिर आज, हहा: हिल मिल बिछुड़े 'जीत' ।सत्य॥

१३ ❀ मोरध्वज ❀

(तर्ज—हरिश्चन्द्र तारा म. २ संग रोहितास)

वचन नही हारा, महाराज, वचन नहीं हारा,

दिया सुत को चीर, मोरध्वज से वीर ॥ टेर ॥

प्राण जाय पर प्रण रहे, सतधारी की आन' ऐसे ही वीरो ने राखी-
भारत भू की शान, राज सुख छोड़े म. २ हो गए फकीर ।।मोर।।
उन वीरों में से हुआ एक मोरध्वज गुणवान, एक दिन बैठा राज सभा में-
आए दो मन्त महान, सिंह एक लारे म. २ संग बहुत ही भीर ।।मोर।
देख खुशी हुआ भूपति उठऊर किया प्रणाम ऊंचे आसन बिठा कहे-
कहो मुझ लायक कुछ काम, सेवा में थारे म २ मैं हूँ हाजिर ।।मोर।।
योगी कहे सुणो राजवी हम बहुत दूर से आया, तीन दिनो से हम ओ-
सिंह ने अन्न पाणी नहीं खाया, अब आए तेरे म. २ द्वारे धर धीर। मोर।।
हुक्म होय हाजर करु जो वस्तु मन भाय, योगी कहे तो देवो वचन-
जो मांगू सो मिल जाय, राजा कहे मांगो, म. २ मत होवो अधीर।।मोर।
राजा से ले वचन योगी कहे, पुरो यही आस, तीन दिनों का भूखा एसिंह-
खावे मनुष्य का मांस, चढावो इसके म. २ निज सुत का चीर।।मोर।।
तुम राजा रानी मिल दोऊ, बीच सभा मंझार, अपने हाथ से राजकंवर पे-
करो आरे का वार, न आय किसी के, नयनों से नीर ।। मोर ।।
सोच समझ राजा कहे, है मुझको मंजूर, पर करके बातरानी को संग में-
लाऊ जाय हजूर, वहां तक ठहरो म. २ योगी गंभीर ।। मोर ।।
राजा पहूंचे महल में, रानी देख घबराय, किस कारण कहो राजवी ए-
सुरत रही कुमलाय, उदासी छाई म २ हो रहे अधीर ।। मोर ।।
आदि से ले अन्त तक किस्सा किया ब्यान, सुनराणी कहे धीरज धारो-
भला करे भगवान, टरे नहीं टारे, म २ जो लिखा तकदीर ।।मोर।।
राज कुटुम्ब और संपदा फिर भी मिलसी आय वचन चूक गर हो जावोगे
कुल के दाग लग जाय, पुत्र फिर होगे म. २ न हो दिलगीर ।।मोर।।

श्री वितरागाय नमः

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गोतम प्रभू ।
मंगलं स्थुलि भद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ॥

"नेम प्रभु-स्तुति"

(तर्ज—जय बोलो बजरंग बाला की)

जय बोलो नेमी लाला की जय बोलो । टेर ॥

यादव कुल के हो उजियारे समुद्र विजय के सुत प्यारे ॥जय॥
परणन काज जान सज आए, उग्रसैन नृप घर धाए ॥जय॥
हाथी घोड़ा ऊंट पालकी, रथ में नेम छबि बांकी ॥जय॥
देखन आए देवी देव भी, जान देख हरषाय सभी ॥जय॥
भात काज पशु पकड़ मंगाए, बाडों में बंद करवाए ॥जय॥
इधर नेम तोरण पर आए, पशु सभी मिल कुलड़ाए ॥जय॥
सुनि पुकार प्रभु करुणा लाए, ले तोरण से रथ फिर आए ॥जय॥
चढ़े भाव वेराग्य के दिल में, तजी नार प्रभु एक पल में ॥जय॥
चढ़े जाय गिरनार प्रभु फिर, संजम में चित किनो थिर ॥जय॥
जनम मरण दुख दिया मिटाई, तिर्थं कर पदवी पाई ॥जय॥
"जीत" धन्य प्रभु अन्तरयामी, भव भव बंध छुडावो स्वामी ॥जय॥

२ ❀ होली ❀

(तर्ज – देखो २ जी बदरवा छाए)

आई, आई जी फागण ऋतु आई, खुशियां छाई ॥ टेर ॥

फागण मस्त महिनों, गावो होली की वधाई ।
घर घर में संदेश सुनावो, जागो जैनी भाई । आई ॥
ज्ञान का रंग घोल के खेलो, होली आपस मांई ।
मीठां मीठा बोल बोल कर, प्रेम वढावो भाई ॥ आई ॥
कुरुढ्यां ने दूर हटावो, फाटा गाणो नांई ।
आपस मांही गंदा बोले, कैसी कुमति छाई ॥ आई ॥
और कोम सब जाग गई, अब थे क्यों करो हंसाई ।
राव, वादशाह दूरा मेलो, करो संगठन भाई ॥ आई ॥
जाति न्याति को करो सुधारो छोड़ो सब अकड़ाई ।
'जीतमल' अब भी चेतो तो, रहसी बात सवाई ॥ आई ॥

३ ॥ चेतो नरनारी ॥

(तर्ज –कोरो काजलियो)

यो देख समय कों फेर, चेतो नरनारी ॥ टेर ॥

झूंट कपट छायो घणो, सत गयो समन्द्रा पार ॥ चेतो ॥
भाई भाई दुश्मन वण्या, आपस में कर तकरार ॥ चेतो ॥
जुलम वढ्यो अति जोर से, नहीं देखे न्याय अन्याय ॥ चेतो ॥
नहीं पंच पंचायती, नहीं रयो प्रेम दिल माय ॥ चेतो ॥
मर्यादा एर मर मिटे, व पाणी गया मुलतान ॥ चेतो ॥
छोड़ कुरिती रिवाज ने, अब चलो समय अनु सार ॥ चेतो ॥

घर घर में करो प्रचार यो, कोई जागो जैन समाज ॥ चेतो ॥
तन, मन, धन सब वार के, हो जाति पे न्योछार ॥ चेतो ॥
समय नहीं अब सोने का, रयो 'जीतमल' ललकार ॥ चेतो ॥

४ ❀ नेताजी का पुकार ❀

(तर्ज – आशक आया ए जान)

चेतो चेतो नर नार, देख दशा अब जागो कररया नेताजी पुकार ।टेर।
छोड़ो रीत पुरानी सारी, इण सुं है बरबादी थारी ।
तजो अविद्या भार, ज्ञान को करो जी प्रचार ॥ देख ॥
वस्त्र विदेशी से मुख मोड़ो, मलमली फाग पोमचा छोड़ो ।
करो खादी सुं प्यार, देश को करसी या उद्धार ॥ देख ॥
फेशन मे मत डून्यां जावो, फिजुल खर्ची दूर हटावो ।
करो देश हित त्याग, छोड़कर पड़दा को व्यवहार ॥ देख ॥
जाति-पांति में करो सुधारो, होकर पंच पंचपण धारो ।
छोड़ कपट को जाल, होवो तन मन से न्योछार ॥ देख ॥
जाग उठो अब युवक भाई, घर घर चरखा देवो चलाई ।
"जीत" अहिंसा धार, जिणसुं गांधी जी ने प्यार ॥ देख ॥

५ (युवकों से)

(तर्ज — मैं तो आया ए नखराली थारे पावना ए)

युवको हो जाओ तैयार देश के कारणे रे ॥ टेर ॥
कका: करियो संप जरूर, खखा: खोलो मंडल पूर ।
गगा: गरजो बन के शूर, घघा: घर घर करो प्रचार ॥ देश ॥
चचा: चर्चा ज्ञान करावो, छछा: छापा बाच सुनावो ।

जजाः जिण में लेख धरावो, झझाः झंडा कर में धार ॥ देश ॥
टटाः टेम वृथा मत खोवो ठठाः ठाला जो थे होवो ।
डडाः डर कर के मत सोवो, ढढाः ढोवो कर्तव्य भार । देश ॥
तताः तास खेलना छूटे. थथाः थूंक फजीती छुटे ।
ददाः दुश्मन बने ना रूठे धधाः धर्म करो मुख्त्यार ।. देश ॥
पपाः पुत्र वीर के प्यारों, फफाः फेशन दूर निकालो ।
बबाः बंद करो बद धारो, भभाः भुल सुधारो यारों ॥
ममाः मातृ भुमि हित धार ॥ देश ॥
ययाः यत्न करो सुखदाई, रराः राखो घणो सफाई ।
ललाः लावो लेल्यो भाई, ववाः वक्त न व्यर्थ विसार ॥ देश ॥
शशाः शुभ गीतों को गावो षषाः षड ऋतुओं त्यों लावो ।
ससाः सावधान हो जावों, हहाः हिलमिल करो सुधार ॥ देश॥

६ ❀ बहनों मे ❀

(तर्ज—बहनों हो जाओ तैयार)

"मीरा" तो प्रभू भक्ता प्यारी, 'सीता' सी सतवन्ती नारी ।
बनकर बहिनों आवो सारी, लो ए प्रतिज्ञा धार ॥बहनों॥
देश धर्म के लिए आज तुम, कर दिखलावो कुछ तो काज तुम ।
छोड़ देवो कुरिति रिवाज तुम, बनकर सच्चो नार ॥बहनों॥
बनो वीर बुजदिली को त्यागो, देख दशा भारत की जागो ।
तन मन धन चाहे कुछ भी लागो, डटकर करो सुधार ॥बहनों॥
सत्य धर्म झंडा लहरावो, अहिंसा की फिर ज्योत जगावो ।
भारत नैया पार लगावो, बनकर खेवन हार ॥बहनों॥
तुम ही से आशा है भारी, जगो वीर भारत की नारी ।
"जीत" निश्चय होगी तुम्हारी, जग में जय जय कार ॥बहनों॥

६ "किशमत का खेल"
(तर्ज—कोरो काजलियो)

इस किशमत आगे यार, किसी की नहीं चलती ॥ टेर ॥

किशमत से हरिश्चन्द्र ने, जा भरयो निच घर नीर,
चली कुछ नाय गती ॥ इस ॥

किशमत से श्रीरामजी, गए चउदह वर्ष वनवास,
केकई की फिरी मती ॥ इस ॥

किशमत से रावण किया, जा रामचन्द्र से वैर,
लायो हर सीता सती ॥ इस ॥

किस्मत से हिरना कस्त्र, गयो राम नाम से भूल,
गर्व वश फिरी मती ॥ इस ॥

किशमत से कौरव दल ने, किना महाभारत युद्ध,
जिते द्रोपदी के पति ॥ इस ॥

किशमत से अब भारत में, ए मच रया हाहा कार,
फूट से हुई ए गती ॥ इस ॥

किश त के सब खेल हैं, कोई करो सत्य से प्रेम,
सत्य बिन नोय गती ॥ इस ॥

किशमत से ही "जीतमल" ए गाय सभा के बीच,
झूंठ नहीं एक रत्ती ॥ इस ॥

७ "बहनों से"
(तर्जः—अरे हो मृगानेनी हस्नी रा मान घटाया ए)

अरे हो गुणवंती पतिव्रत धर्म निभाई जो,
करके पति सेवा, जीवन सफल बनाई जो ॥ टेर ॥

ज्ञानचन्दजी सारी नार, सुन्दर सुणजो ध्यान लगार,
जग में पति सेदा सुखकार प्यारी, करके सेवा थे सुयश कमाईजो॥
आलस दुरो किजे, निद्रा बेगी ही तज दिजे,
प्रथम प्रभु को समरण किजे, पाछे पति का शुभ दर्शन पाई जो॥
घर का काज संवारो, हुक्म थें बड़ां को दिल में धारो,
काम चतुराई से करो सारो, जिणसुं गुणवंती थें कहलाई जो॥
भोजन सरस बनावो, पहले पति ने बैठ जिमावो,
हाथ में पखी लेय दुलावो, करके खातिर थे पति ने खूब जिमाई जो॥
सभी काम खुद करजो, महनत करबा सं मत डरजो,
संगत उत्तम नार की करजो जिणसु ज्ञान सवायो नित पाईजो।
जो होवे सन्तान, उणने विद्या को दे ज्ञान,
बड़ा को करे सदा सन्मान, ऐसी शिक्षा थे खूब सिखाई जो॥
सज सोला सिणगार, पोढो पति देव की लार,
होकर तन मन से न्योछार, प्यारी करके खातिर थे खूब रिझाईजो।
(झेला) - थे तो करके खातिर खूब, हुक्म उठाई जो,
थे तो मीठी वाणी बोल प्रेम दरसाई जो॥
थे तो पर पुरुपां की और ध्यान मत लाई जो,
थे तो शुद्ध शीलव्रत पाल, सुयश कमाई जो,
थे तो रहिजो धर्म मांही लीन, प्रभु गुण गाई जो,
थे तो श्रद्धा सारू दे दान, पुण्य कमाई जो,
जो इण पर ध्यान लगासी पति कदे परनारां नहीं जासी,
"जीत" फिर थारां ही हो जासी, थे तो हंस हंस के कंठ लगाई जो॥

---

८ ॥ होली ॥

(तर्ज—धुंसो बाजो रे महाराज उम्मेदसिंह को)

हिल मिल कर सब खेलो होली ॥ टेर ॥

ककाः करो संगठन सारे, खखाः खोल मंडल प्यारे ॥ हिल ॥
गगाः गरजो शूर समाना, घघाः घर घर संप करना । हिल ॥
चचाः चतुर छोड़ कुटलाई, छछाः छोड़ कुव्यसन भाई ॥ हिल ॥
जजाः जैन बन चित दे धरम में, झझाः झंडा ले धार कर में ॥ हिल ॥
टटाः टेम न व्यर्थ गमावो, ठठाः ठाला मत बन जावो ॥ हिल ॥
डडाः डर कोई काम न करनो, ढढाः ढील भी नहीं करना ॥ हिल ॥
तताः ताव तज धीरज मोटी थथाः थूंक फजीति खोटी ॥ हिल ॥
ददाः दुश्मन बनो न किसी के, धधाः धर्म पर रहो डटके ॥ हिल ॥
पपाः पराई तज दो नारी, फफाः फेशन दुःख कारी ॥ हिल ॥
बबाः बोलो बोल विचारो, भभाः भूल मत देवो गारी ॥ हिल ॥
ययाः यत्न करो सुखदाई, रराः रहो मिल जुल भाई ॥ हिल ॥
ललाः ल्यो लावो तन मन धन से, ववा वक्त नहीं आवे फिर से ॥ हिल ॥
शशाः शुभ गीतों को गावों, षषाः षड् ऋतुल्यो लावो ॥ हिल ॥
ससाः सुकृत कर नर भव में, हहाः हो 'जीत' अमर जग में ॥ हिल ॥

---

९ ॥ सुकृत करले रे ॥

(तर्ज— पल राखीयो ख्वाजे जी अजमेरां की)

सुकृत करले रे, जोबन दिन चार रसीया ॥ टेर ॥

गर्भवास में जब तूं आयो, तो प्रभू उंधो कर लटकायो ॥ सुकृत ॥

सुकृत को कर कोल तूं आयो, या नर भव देह दुर्लभ पायो ॥ सुकृत ॥
बचपन तूं हंस खेल गमायो, प्रभू भजन नहीं कर पायो ॥ सुकृत ॥
योवन वय में त्रिया प्यारी, मोहमाया मे उलझो भारी ॥ सुकृत ॥
भोग विलासों में फंसर-यो भारी, छोड़ प्रभू भक्ति प्यारी ॥ सुकृत ॥
काल चक्र को नहीं ठिकाणो, खाली हाथ पड़सी जाणो ॥ सुकृत ॥
कोड़ी कोड़ी माया जोड़ी, अन्त समय सब यहीं छोड़ी ॥ सुकृत ॥
प्रभू को कचेरी में जद जासी, किया जिस्या फल भुगतासी ॥ सुकृत ॥
जो सुख चाहै तूं भव, भव में, 'जीत' कमाले सुयश जग में ॥ सुकृत॥

---

१० बहनों से

(तर्ज—म्हैं तो आया प नखरालो थांरे पावणां प)

बहनों हो जावो तैयार देश के कारणे रे ॥ टेर ॥
ककाः कहूं बात एक भारी, खखाः खादी सब सुं प्यारी ।
गगा। ग्रहण करो गुणकारी, घघाः घर घर करो प्रचार ॥ देश ॥
चचाः चतुराई थे धारो, छछाः छोड़ो फेशन सारो ।
जजाः जात में करो सुधारो, झझाः झगड़ा दूर निवारो ॥ देश ॥
टटाः टेम देख जग जावो, ठठाः ठीक समय यो आवो ।
डडाः ड़र न दूर भगावो, ढढ़ाः ढोवो देश को भार ॥ देश ॥
तताः तुम से आशा भारी थथाः थूंक फजिती ख्वारी ।
ददाः दूर करो अब सारी, धधाः धर्म पे हो न्योछार ॥ देश ॥
पपाः परदो दूर हटावो, फफाः फालतू खर्च मिटाओ ।
बबाः बूरा गीत मत गाओ, भभाः भक्ति हृदय में धार ॥ देश ॥

यया: यत्न करो सुखकारी, ररा: रहीजो मिल जुल सारी ।
लला: लिजो जग यश भारी, ववा: वीरता दिल में धार ॥ देश ॥
शशा: शान्ति सदा सुख दाई, षषा: षठ ऋतु लेवो भलाई ।
ससा: सांची "जीत" दरसाई, हहा: हिल मिल करो सुधार ॥ देश ॥

११ ❀ रहनेमी-राजुल ❀

सवाल (तर्ज-देवर भोजाई) जवाब

रहनेमी—राजुल कहना मान करूं मैं लाचारी ॥ टेर ॥
राजुल - रहनेमी नादान, मति क्यों गई मारी ॥ टेर ॥
रह: —राज गुफा मांय देखो, बैठो में ध्यान में,
रा: - गिरनार पे चाला प्रभू दरशन की ठान में,
रह:—इतने ही में वर्षा वरसी, शब्द पड्या कान में,
रा:—भिजा वस्त्र सारा, आई गुफा दरम्यान में,
रह:— देखी मैंने एक नारी ॥ रा० ॥
रा:—घोर अन्धकार छायो, दिखे ना कोयजी,
रह: नार है कोई साध्वी, ऐसी दिखे मोयजी,
रा:—वस्त्र सुखाया बैठी, अंग छिपोयजी,
रह:—देखी राजुल नार, रूप लिनो मन मोहजी,
रा:— देख्या मुनि एक भारी ॥ रह० ॥
रह:—भूल गयो ज्ञान ध्यान कुछ ना सुहायजी,
रा: - थर, थर धुजे अंग, देख पुरुष की छांयजी,
रह:—मैं हूँ रहनेमी राजुलजी, दुजो कोई नायजी,
रा:—[illegible]

रह:— अर्ज एक सुनो मारी ॥ रा० ॥

रा:—वस्त्र समेटवाने, उठी तत्कालजी,

रह:—ठहरो प्यारी राजुल, पहले आयो यहां चालजी,

रा:—सुनकर वचन उठी, तन मांही झाल जी,

रह:—भोगें भोग दोनों, ओर छोड़ सब ख्यालजी,

रा:— शर्म नहीं दिल धारी ॥ रह० ॥

रह:—या उतम नर देही राजुल मिले नहीं हर वारजी,

रा:—पंच महाव्रत धारी हो, क्यों रयां जमारो हारजी,

रह:—भोगें सुख संसार का, योवन मझार जी,

रा:—काम के बश हो रहे अंधे कुछ तो करो विचारजी,

रह:— सुरत पर हूं वारी ॥ रह० ॥

रा:—संसार सुख छोड्या पाछे, फिर क्यों ललचायजी,

रह:—चढ्यो रंग रूप को, कुछ ना सुहायजी,

रा:—वमन किया अन्न ने तो कुत्ता ही खायजी,

रह:—ऐसे कांई बोलो, मांसू सह्यो न जायजी,

रा:— देवेला धिक संसारी । रह० ॥

रह:—धन्य धन्य राजुल दिया, खूब ही ज्ञानजी,

रा:—संयम में रहो दृढ़ जिससे, होवे कल्यानजी,

रह:—काम के वश हो माता, मैं भूल गयो भानजी,

रा:—सुबह गयो शाम आवे, भुल्यो न जाणजी,

रह:— "जीनमल" जांऊवारी ॥ रा० ॥

———

१२ (हरिश्चन्द्र तारा)

सवाल (तर्ज—सुवको हो जावो तैयार) जवाब"

तारा - मै तो विकती हूं विप्र घर सत्य के कारणे रे ॥ टेर ॥

हरि—तुमको धन्य है रानी तारा, सत्य के कारण रे ॥ टेर ॥

तारा–कका: कियो न कुछ भी प्यारे खखा: खोल्या न पट घुंघटरे।

गगा: गाती थी गीत सुन हरे, घघा: घर घर अव मैं फिरती ॥सत्य॥

हरि–चचा: रले वस नहीं मारो, छछा: छोड़ो हाथ हमारो।

जजा जाओ काम सवारो झझा: झाडू जाकर मारो ॥ सत्य॥

तारा–टटा: टाट पे कभी ना सोती ठठा ठड़ा कभी ना खाती।

डड़ा: ड्योढी हजारों रहती, ढढा: ढोती अव मै भार ॥सत्य॥

हरि–तता: तेरी सदा विजय हो थथा: थारो नाम अमर हो।

ददा: दुनियां यो कहती हो. धधा: धर्म पे विकगई रानी ॥सत्य॥

तारा–पपा: प्यारे तुम सरताज फफा: फर्ज यही मम आज।

ववा: वक्त पड्या रख लाज, भभा: भूल न सत्य विसार ॥सत्य॥

हरि–यया याद रखो मेरी वात, ररा: रहि जो प्रेम के साथ।

लला॥ लिजो यश में हाथ, ववा: वेर न किजो प्यारी ॥सत्य॥

तारा:–शशा: शान्ति करो अव नाथ, षपा: षड्ऋतुओं के नाथ।

ससा: सत्य के खातिर आज, हहा: हिल मिल बिछुड़े 'जीत' ।सत्य॥

१३ ॐ मोरध्वज ॐ

(तर्ज—हरिश्चन्द्र तारा म. २ संग रोहितास)

वचन नहीं हारा, महाराज, वचन नहीं हारा,

दिया सुत को चीर, मोरध्वज से वीर ॥ टेर ॥

प्राण जाय पर प्रण रहे, सतधारी की आन' ऐसे ही वीरो ने राखी-
भारत भू की शान, राज सुख छोड़े म. २ हो गए फकीर ।।मोर।।
उन वीरों में से हुआ एक मोरध्वज गुणवान, एक दिन बैठा राज सभा में-
आए दो सन्त महान, सिंह एक लारे म. २ संग वहुत ही भीर ।।मोर।
देख खुशी हुआ भूपति उठऊर किया प्रणाम ऊंचे आसन बिठा कहे-
कहो मुझ लायक कुछ काम, सेवा में थारे म २ मैं हूँ हाजिर ।।मोर।।
योगी कहे सुणो राजवी हम वहुत दूर से आया, तीन दिनो से हम ओ-
सिंह ने अन्न पाणी नहीं खाया, अव आए तेरे म. २ द्वारे धर धीर। मोर।
हुक्म होय हाजर करु जो वस्तु मन भाय, योगी कहे तो देवो वचन-
जो मांगू सो मिल जाय, राजा कहे मांगो, म २ मत होवो अधीर ।।मोर।
राजा से ले वचन योगी कहे, पुगे यही आस, तीन दिनों का भूखा एसिंह-
खावे मनुष्य का मांस, चढावो इसके म. २ निज सुत को चीर ।।मोर।।
तुम राजा रानी मिल दोऊ, बीच सभा मंझार, अपने हाथ से राजकंवर पे-
करो आरे का वार, न आय किसी के, नयनों से नीर ।। मोर ।।
सोच समझ राजा कहे, है मुझको मंजूर, पर करके वातरानी को संग में-
लाऊ जाय हजूर, वहां तक ठहरो म. २ योगी गंभीर ।। मोर ।।
राजा पहूंचे महल में, रानी देख घबराय, किस कारण कहो राजवी ए-
सुरत रही कुमलाय, उदासी छाई म २ हो रहे अधीर ।। मोर ।।
आदि से ले अन्त तक किस्सा किया व्यान, सुनराणी कहे धीरज धारो-
भला करे भगवान, टरे नहीं टारे, म २ जो लिखा तकदीर ।।मोर।।
राज कुटुम्ब और संपदा फिर भी मिलसी आय वचन चूक गर हो जावोगे
कुल के दाग लग जाय, पुत्र फिर होंगे म. २ न हो दिलगीर ।।मोर।।

सुण कर राणी के वचन कंवर लिया बुलवाय, हाल सुनाया राजा ने सब-
कंवर कहे समझाय, भेंट दो सिंह को म. २ हूं मैं हाजीर ॥ मोर ॥
जी चाहे सो करो फेर भी, हो सकता नहीं उर्ण, छोड़ पुत्र की ममता राजा-
करो वचन को पुर्ण, चरण में थारे म. २ हाजिर ए शरीर ॥ मोर ॥
आखिर योगी पास आ बीच सभा मंझार राजा रानी मिल राज कंवर पे-
करे आरे का वार, धन्य सुत सहता म. २ आरे की पीर ॥ मोर ॥
चल कर आरा शीश से धार लिया उग्र रूप दो टूक किए कंवर के उसत्म-
धन्य धन्य अहो भूप, धन्य तुम रानी, म २ धन्य सुत गंभीर ।मोर।
राजा कहे कर जोड़ के लो योगी तैयार, इक धड़ महल पे रखदे राजा-
एक सिंह को डार, राजा ने किनी, म. २ ऐसी ही तस्वीर ॥ मोर ॥
राजा कहे हुआ वचन पुर्ण अब भोजन करो पधार बात मान योगीजो-
बैठे भोजन तांही जार, पतल दो पुरसो म. २ जीमो गुणधीर ॥मोर॥
इधर राणी गई महल पे, देखी धड़ मुरझाय, हे विधना क्या करी एक-
धड़ पड़ी पड़ी कुमलाय, यहां क्यों रक्खी म २ इस धड़ को बीर ।मो ।
उधर योगी कहै सुनिए राजा हम जिमेंगे नाय, जाके देखले महल में-
तेरी राणी रुदन मचाय, क्यों [illegible] या उसके, म [illegible] नयनों से नीर ।मोर।
राजा कहे कर जोड़ सुणो हे ज्ञानी गुण परवीण, पहले पुत्र की भेंट-
चढा फिर भक्ति भी रहे छीन, करी क्या मैंने म. २ ऐसी तकसीर ।मोर।
आखिर योगी कहै पत्तल तीन यहां और लगाबो राजा राणी को बुलवाय-
कंवर को अवाज देवो एक राजा जिमेंगे पांजो म. २ मिल करके फिर।मोर
राणी को बुलवाय कंवर को अवाज दी उसवार आया महल से दोड़ता-
फेर वहां राजकंवार चरण शिर नाया म. २ हो गया हाजीर ॥मोर॥

कंवर कहे सुणो राजवी लो इनको पहचान अर्जुन जिनके संग में प-
श्रीकृष्ण भगवान, के दरशन पाए म. २ धन्य धन्य तकदीर ॥मोर॥
मनवांछित वरदान दे योगी गए पधार दो हजार दो साल 'जीतमल -
कियो खेल तैयार बचन मत हारो म. २ ज्ञानो गुणधीर ॥ मार ॥

"शीघ्र प्रकाशित हो रहा है"

❀जीत-ज्योति भाग चोथा❀

जिसमें आप सभाओं, जलुसों व धार्मीक उत्सवों के लि
आजकल की फिल्मों पर तैयार किए हुए भक्ति रस तथा जोशील
गायनों का अपूर्व आनन्द प्राप्त करेंगे ।

मिलने का पता:-

सहसकरण जीतमल चोपड़ा

लाखन कोटड़ी, अजमेर ।

जीत संगीत माला का पुष्प तीसरा

जीत गुरू गुण महिमा

गुरु दीपक, गुरु चांदणो,
गुरु बिन घोर अंधार ।
पलक न विसरूं ताहिं को,
गुरु मम प्राणाधार ॥

रचयिता:—
कुं० जीतमल चोपड़ा
अवेतनिक मन्त्री:—
श्री श्वे० स्था० जैन युवक संघ, अजमेर

प्रथमावृत्ति 1000 | संवत्सरी 2003

॥ शीघ्र प्रकाशित हो रहा है ॥

—• जीत ज्योति भाग चौथा ❋—

जिसमें आप सभाओं, जलूसों व धार्मिक उत्सवो के लिये आजकल की फिल्मों व मारवाड़ी तर्जों पर बनाए हुए ईश भक्ति उपदेशी भजन व जोशले गायन, तथा साथ ही सन्त मुनिराजों के उपयोगित दान, शील आदि विषयों पर बनाई हुई लावणीयों के अपूर्व आनन्द प्राप्त करेंगे।

॥ श्री वितरागायनमः ॥

जीत गुरू गुण महिमा

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गोतम प्रभू ।

मंगलं स्थूलि भद्राद्या, जैन धर्मोऽस्तु मंगलम् ॥

वीर स्तुति

(तर्ज—अरि हाय अविद्या पापिन कैसे भारत घर कीनो)

मैं प्रथम श्री महावीर मनाता, शिव सुख के दाता ॥टेर॥

सिद्धारथ नृप का सुत प्यारा, त्रिसला मां नंद दुलारा,

लागो म्हांने प्यारा, थांरे चरणां में नित शीश नवाता ॥शिव॥

जगत शिरोमणि हो तुम स्वामी, चोवीसवां तिर्थंकर नामी,

घट घट अन्तरयामी, दीजो बल बुद्धि वैभव विख्याता ॥शिव॥

जैन धर्म के प्रबल प्रचारी, अहिंसा के थे सच्चे पुजारी,

सत्य क्षमा के धारी, आज तुझ बिना दुःखी है भारतमाता ॥शिव॥

भारत मे प्रभु फिर से आवो, वही सत्य संदेश सुनावो,

सोया हिन्द जगावो स्वामी, करो महर आ तुम्हे बुलाता ॥शिव॥

'जीतमल' आया शरण में तेरी, लाज रखो आ सभा में मेरी,

काटो भव भव फेरी, वर यही मम इच्छित मैं तुम

—※—

सम्प्रदाय महिमा

(लावणी)

पूज्य नानक गुरु की सम्प्रदाय में प्यारे,
हुये जैन धर्म प्रतिपाल चमकते तारे ॥टेर॥
मैं प्रथम श्री उस वीर प्रभू को मनाता,
जिनकी ही महर से जोड़ लावणी गाता ;।
हुये बड़े २ विद्वान जगत विख्याता,
जिनका मैं शुरु से सारा हाल सुनाता,
गुरु तरण तारण की जहाज के पार उतारे ॥हुए॥
पूज्य मलूकचन्दजी महाराज जगत में नामी,
हुए शिष्य जिन्हों के नानकरामजी स्वामी,
ए ममता मार और जग उद्धार की ठामी,
दे हुए धर्म उपदेश मोक्षपद गामी,
ए करने जगत उद्धार लिया अवतारे ॥ हुए ॥
पूज्य न्यालचन्दजी शिष्य जिन्हों के प्यारे,
हुए शान्त स्वभावी वीर ज्ञान भंडारे,
कियो दया धर्म विस्तार जीव उद्धारे,
ए करके उज्वल नाम के स्वर्ग सिधारे,
धन्य धन्य हो थांरी मात, धन्य उजियारे ॥ हुए ॥
पूज्य सुखलालजी महा बाल ब्रह्मचारी,
लगा धर्म ध्यान में चित्त आतमा तारी,

ए सत्य अहिंसा और दया दिल धारी,

ए शुद्ध संयम को पाल ममता को मारी,

ऐसे मुनियों को वंदू बारम्बारे ॥ हुए ॥

मुनि हरकचन्दजी शिष्य जिन्हों के कहाए,

ए तप की कसौटी पर कंचन से आए,

थे गुण के सागर महिमा बरणी न जाए,

लिया अष्ट कर्म को काट मोक्ष पद पाए,

इनके चरणों का ध्यान धरो नित प्यारे ॥हुए॥

मुनि हीराचन्दजी महाराज हुए वड़ भागी,

संग दयाचन्दजी गुणवान वीर वैरागी,

दिया छोड़ सुखों को ज्योत ज्ञान की जागी,

जग मायां छोड़ हुए कनक कामनी के त्यागी,

इन दोनों ने मिल किया धर्म विस्तारे ॥ हुए ॥

मुनि लक्ष्मीचन्दजी के कहां तक गुण गाऊं,

थे बुद्धि के भंडार पार नहिं पाऊ,

जो काटे कर्म का जाल, धर्म के दिपाऊ,

उनके चरणों में बार बार वलि जाऊं,

गुणीजन के गुण गाने से होय उद्धारे ॥ हुए ॥

मुनि हगामीलालजी के गुण गाऊं प्यारे,

ए पंच महाव्रत पाल दोष को टारे,

ए चले क्रिया से गादी दिपावन हारे,

रहे अवगुण से नित दूर गुणों को धारे,

है शान्त स्वभावी करते धर्म प्रचारे ॥ हुए ॥

ए प्रातः उठ जो कोई गुरु गुण गावे,

प्यारे वरते नित आनन्द विपद नहीं आवे,

ए संवत दो हजार मेरे मन भावे,

मिती महा सुदि पूनम बुधवार जब आवे,

ए "जोत" चोपड़ा कथी बुद्धि अनुसारे ॥ हुए ॥

—※—

"अजमेर चातुर्मास में"

तर्जः आज रंग बरसरे)

हर्ष चित चायो रे गुरुदेव आपको दर्शन पायो रे ॥ टेर ॥

गजमलजी पिता आपके अनोपदेवी माता रे,

ओस वंश विख्यात गोत्र चपलोत विख्याता रे ॥ हर्ष

संवत १९६६ मांही, दिक्षा की मन धारी रे,

नव वर्ष ऊमर में त्यागो, सुख संसारी रे ॥ हर्ष

गुरू आपके लक्ष्मीचन्दजी, ज्ञान तणा भंडारी रे,

किनो धर्म प्रचार जगत में है सब जारी रे ॥ हर्ष ॥

पंच महाव्रत धार मुनिवर, क्रिया मांही चाल रे,

करते उग्र विहार, दोष वइयां लिस टाल रे ॥ हर्ष ॥

दो हजार की साल पधारा, अजय शहर के मांई रे,

दिया धर्म उपदेश ज्ञान की ज्योत जगाई रे ॥ हर्ष ॥

शान्त स्वभावी, दया के सागर बुद्धिमान ब्रह्मचारी रे,

भिन्न २ कर समझाय, समझ पड़े न्यारी न्यारी रे ॥ हर्ष ॥

कहां तक महिमा कहूँ गुरू की मुझ से वरणी न जावे रे ॥
"जीतमल" मुनि, चरणां में नित शीस नवावे रे ॥ हर्ष ॥

—

(तर्ज: इजाजत दे माता लेस्यां संयम भार)

मुनि हगामीलाल, सुनो मेरी अरजी,
नैया पड़ी मँझधार, पार कर हो मरजी ॥टेर ॥
गजमलजी के सुत प्यारे, अनोपकँवर के हो उजियारे,

सवैया

मेवाड़ में मशहूर है कोई हुग्ड़ा गांव के मांई मुनि अवतार लिया,
नव वर्ष की उम्र मे संवत १९६६ दिक्षा का विचार किया,
चौपाई—लक्ष्मीचन्दजी गुरू है प्यारे, ईशरदासजी पिता है न्यारे,
फेफांबाई मात के दुलारे, १९२८ मांय लिया अवतारे,
दोड़—उन्नीसो छियालीस माई, मुनि के दिक्षा की मन भाई,
गुरू है हीराचन्द सुखदाई, जिन्होंने धर्म की ज्योत जगाई,
लावणी—उन्नीसो बहतर मांय दिक्खन में आया,
ए विचरत विचरत, नगर जालणां भाया,
मुनि लक्ष्मीचन्दजी महाराज यां स्वर्ग सिधाया,
धन्य धन्य थांरी मात ऐसा सुत जाया,
झेला.—सुण प्यारे, अब रहे हगामीलाल मुनि ब्रह्मचारी,
सुण प्यारे, ए मात पुत्र दोनों ने दिक्षा धारी,
वणजारा—ए पंच महाव्रत धारे, कोई करते उग्र विहारे,
दिया ज्ञान धर्म का सारे, नहि राग द्वेष दिल धारे,

द्रोण—महाराज देवे यूं ज्ञान, जगत है झूंठा सपनाजी,
तुम संभल चलो नरनार, नहीं कोई यां पर अपनाजी,
महाराज महिमा कहां तक बरणूंजी,
हूँ बालक नादान, ज्ञान दो पडूं मैं चरणोंजी,

काजलियो—
कोई दो हजार की साल, आनन्द हुयो घणो,
अजर अमर अजमेर में, कोई हो रयो चातुर्मास ॥ आनन्द ॥
धर्म ध्यान का ठाठ लाग्या, हुई तपस्या भरपूर ॥ आनन्द ॥
कर कोशिश नवकार को, कोई जाप कियो दिन रात ॥ आनन्द ॥
जीतमल हरषा रयो, कर दर्शन मुनिराज ॥ आनन्द ॥
चलत—हांरे चरण का हूं गरजी ॥ मुनि ॥

—※—

(कोरो काजलियो)

धन्य हीराचन्द जी महाराज, धर्म न दीपा दीयो । टेर ॥
ऊंकार सिंहजी के लाड़ले हे, सुजाण देवी मात ॥ धर्म ॥
बल्लूंट कुल में ऊपन्या, हे ओस वंश विख्यात ॥ धर्म ॥
जन्म देवलिया में लियो, संवत उन्नासों पांच ॥ धर्म ॥
संवत उन्नीसो तेरहा में, कोई त्यागो सुख संसार ॥ धर्म ॥
गुरुपुज्य हरकचन्द जी, कोई दियो शास्त्र को ज्ञान ॥ धर्म ॥
जगह जगह उपदे श दे, कोई किनो धर्म प्रचार ॥ धर्म ॥
पाटउपरां शोभते, कोई ज्यों शोहे गगन में भान ॥ धर्म ॥
संवत उन्नोसो छप्पन में, कोई अजय शहर के मांय ॥ धर्म ॥
भादव सुदी चोथ ने, जा कियो स्वर्ग में वास ॥ धर्म ॥

शिष्य लक्ष्मी चन्द जी, कोई धीर वीर गुणवान ॥ धर्म ॥

तणां शिष्य हगामीलालजी, हे ब्रह्मचारी तपवान ॥ धर्म ॥

दो हजार की साल में, हे अजमेर चातुर्मास ॥ धर्म ॥

पर्व पर्युषण ऊपरे, कोई लग्या धर्म का ठाठ ॥ धर्म ॥

नवरंगी और पचरंगी, हुयो नवकार को जाप ॥ धर्म ॥

मुनि श्री के हो रयो कोई वाम सातवों आर ॥ धर्म ॥

भादवा सुदी या चोथ ने, यो 'जीतमल' गुण गाय ॥ धर्म ॥

—※—

मुनि महिमा

(तर्ज—कव्वाली)

मुनी हगामीलाल जी को, बन्दू बारम्बार मैं ।
पार कर भव सिन्धु से, नैया मझी मजधार में ॥ टेर ॥

:—जग में है जाहिर पुज्यवर, नानक गुरु सुजान जी ।
शिष्य हीरा और दया' जिन के हुए गुणवान जी ॥
लक्ष्मीचन्दजी रामजी, गुमानमलजी जान जी ।
अब है हगामीलाल जी, ब्रह्मचारी बुद्धिमान जी ॥
तत:—गादी गुरु की ए दिपादे, रहते धर्म प्रचार में ॥ मुनी ॥१॥

:— शुभ घड़ी आई चढ़ा वैराग, कीना विचार जी ।
मात-पुत्र दोनो ने ही ली, दीक्षा की मन धार जी ॥
१९६६ साल में अजय शहर सुख कार जी ।
गुरु लक्ष्मीचन्द जी पास में मुनी लीनो संजमभार जी ।
तत:—सेवा कर लीयां ज्ञान, नित रहते गुरु की लार में ॥ मुनी ॥२॥

शेरः—समय बड़ी बलवान, रहती एकसी नहि चालजी।
ंगादी दिपावन हार रह गये, एक हगामीलालजी।
करते धर्म की पालना ए, पंच महाव्रत पालजी।
क्रिया मे चलते सदा ए, दोष बइयालीस टाल जी॥

चलतः—नीचों का नहीं संग करते, रहते शुद्ध विचार मे॥ मुनी॥

शेरः—१९९० साल में, साधु सम्मेलन जब हुआ।
जब तक पधारे आप नहीं, तब तक न काम शुरू हुआ॥
चोमासा भी उस साल मुनी का, अजमेर मे ही हुआ।
दो दो हुआ व्याख्यान, गुरू की महर से पूरा हुआ॥

चलतः—चौमासा होरहा मुनी का संवत दो हजार में॥ मुनी॥४

शेरः—अखंड जाप नवकार का, हुआ स्थानक मायजी।
हुआ मुनी के नौ दिनों का, पूरा भी मन चाय जी।
उत्सव हु आ था खूब, दुश्मन देखकर चकरायाजी॥
जीतमल और हेमचन्द नित नई वणा के गायजी।

चलतः अज्ञान दिल से दूर कर, मिल के रहो सब प्यार मे॥ मुनी॥

—※—
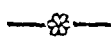
"पीसांगन चातुर्मास मे"

(देखो जी बदरवा छाए जिया घबराए)

पाए पाए जी मुनि के दर्शन जिया हरषाए॥ टेर॥

प्रथम श्री महावीर प्रभू के चरणों शीश नवाए,
जिनकी पूर्ण कृपा आज हम, सब मिल मंगल गाए॥ पाए॥

गजमलजी के सुत प्यारे, अनोपकंवर के जाए,
उज्वल किना सुयश लिना, धन्यवीर तुम जाए॥ पाए॥

गुरु लक्ष्मीचन्दजी के शिष्य बन, ज्ञान की ज्योत जगाए,

धर्म दिपाते, कर्म खपाते, दुनियां सुयश गाए ॥ पाए ॥

संवत दो हजार एक में, पीसांगन मन भाए,

चोमासे की पूरी आशा, घर घर आनन्द छाए ॥ पाए ॥

धर्म ध्यान का ठाट लगाया, हो रहे मन के चाए

सेवा खूब की श्री संघ ने लावो लं रया भाए ॥ पाए ॥

आसोज बदी ए छठ, चापड़ा 'जीतमल' गुण गाए,

आए नरनारी अजयशहर से पा दर्शन हरषाए ॥ पाए ॥

—※—

"कुकड़ा नगर में,,

(तर्ज—ख्याल की)

आछा पधारया पर्वत बीच में, गुरुदेव हमारा ॥टेर॥

श्री जिनवर का ध्यान धरूं नित सतगुरु लागूं पाय,

मुनिराज श्री हगामीलालजी वंदूं शीश नवाय ॥ गुरु ॥

पूज्य नानक गुरु दिपते, जागे सकल समाज,

ज्ञान की ज्योत जगा कर तारो, जैनधर्म की जहाज ॥ गुरु ॥

मुल्कों में मशहूर है भूमि, ए मेवाड़ विशाल,

विचरत आप पधारे हो गया, कुकड़ा नगर निहाल ॥ गुरु ॥

चार ठाणा से सती विराजे, सुगनाजी गुणवान ॥

धीर वीर गम्भीर है शायर सती गुणों की खान ॥गुरु॥

जेठ सुदी है दूज आज ए, घर घर हर्ष अपार ।

शिष्य हो रहे अभयसिंहजी, त्याग के सुख संसार ॥गुरु॥

फोजमलजी के सुत थारे, इचरज कंवर के लाल,

जुग जुग जीवो अभयसिंहजी रहे गुरू की ढाल ॥ गुरु ॥

गुरू की गादी खूब दिपा जो यह मेरी अरदास,
"जीतमल" दृढ़ रह के धर्म में लीजो शिवपुर वास ॥गुरु॥

—※—

दीक्षा महोत्सव

(तर्ज:—देखो देखोजी बदरवा छाए जिया घबराए)

देखो देखो जी जिया हरषाए, आनन्द छाए ॥टेर॥
वीर प्रभू का सुमरण करिया विघ्न सभी टल जाए,
शारदमाता, तोय मनाता, करजो कंठ सवाए ॥ देखो ॥
पूज्य नानक की सम्प्रदाय के, गुरू लक्ष्मी मन भाए,
हरखीलाल, लालों में लाल धन्य दर्श तिहारा पाए ॥ देखो ॥
गजमलजी के सुत प्यारे, अनोपा—लाल कहाए,
नव वर्ष में अति हर्ष में ली दिक्षा मुनिराय ॥ देखो ॥
समय बड़ी बलवान, रह गए आप एक मुनिराए,
क्रिया माँई, रह कर भाई, बहुत ही वर्ष बिताए ॥ देखो ॥
पुण्य योग धन्य भाग्य ले रहे, दिक्षा अभयसिंह भाए,
कुकड़ा माँई, खुशियां छाई, सब मिल मंगल गाए ॥ देखो ॥
अल्प आयु में त्याग दिया, संसारी सुख सब भाए,
ममता त्यागी, हुए वेरागी, धन्य जननी जिन जाए ॥देखो ॥
कई वर्ष के बाद आज ए, हो रहे मन के चाए,
गुणी गुण गाते हर्ष मनाते, दुश्मन चक्कर खाए ॥ देखो ॥
कुकर, काग, कुमाणस नर, आदत से बाज नहीं आए,
दिक्षा रुकाने, आए परवाने फिर भी फतह नहीं पाए ॥ देखो ॥

नीचा हो सो करे नीचता ऊंचा ऊंची चाए॥
फूट करातं मन में शाते, जरा शर्म नहिं आए॥ देखो॥
धन्य मुनि धन्य सती सुगनाजी, खूब ही ठाठ लगाए,
मिल नरनारी सेवा में थारी, अजय शहर सूं आए॥देखो॥
जेष्ठ शुक्ला दुज साल दो हजार तीन मन भाए,
चरण तिहारो, जाऊं बलिहारो, 'जीतमल' गुण गाए॥देखो।

—*—

(महावीर स्वामी, अन्तरयामी, दिना नाथ दयाल)

गुरूदेव हमारो प्राण प्यारा, जाऊँ बलिहारी रे॥ टेर॥
गुरु नानक की सम्प्रदाय के, गादी दिपावन हार,
नव वर्ष की उमर मांही, त्यागो सुख संसार॥ गुरू॥
सती सुगनां जी ठाणा चार से, करता हुआ विहार,
पावन कीनी मेवाड़ भुमी, घर घर हर्ष अपार॥ गुरू॥
संवत दो हजार तीन में, कुकड़ा नगर मंझार;
दिक्षित हुए मुनि अभयसिह जी, सती इचरज जीभी लार॥ गुरू॥
ग्राम नगर पुर सुं दिक्षा पर, आया मिल नर नार,
जेठ सुदि दुज और तीज ने, हो रया मगलाचार॥ गुरू॥
श्री संघ सेवा करे प्रेम से, दिल में भरी उमंग,
जंगल में मंगल कर दीना, धन्य धन्य श्री सघ॥ गुरू॥
देख संघ सत्कार हृदय मे, हो रहा हर्ष अपार,
धन्य धर्म मे रहे लीन प्यारे, वरते जय जयकार॥ गुरू॥
जैन धर्म ने खूब दिपाजो; रख गादी की शान,
रंग कसोटी पर कचन सो, लाज्यो हे गुणवान॥ गुरू॥

अजय शहर सु आया दरश ने, मिलकर सब नरनार
'जीतमल' ली शरण चरण की, वंदन बारम्बार ॥ गुरु ॥

—卐—
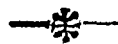
६ (तर्ज: जब तुम्हो चले परदेश, लगाकर ठेस)
तुम जैन धर्म प्रति पाल, "हगामी लाल",
हो गुरुवर प्यारा, एक शरण लिया तिहारा । टेर ॥
पुज्य नानक के उजियारे हो, भारत के वीर सितारे हो,
तेरे पाए दरश हुआ जीवन सफल हमारा ॥ एक ॥
कुकड़ा नगर में आए हो, सब ही के दिल हरषाए हो,
हुए मुनि अमय सिंह छोड़ के जग सुख सारा ॥ एक ॥
सती सुगनां जी भी विराजे हैं, मंगल के बाज यहां बाजे हैं,
हुई सती जी इचरज कंवर के मन को मारा ॥ एक ॥
जो लीन धर्म में रहते है, जगमें आ सुयश लेते ,है,
धन्य उन्हीं का जीवन जग को लगता प्यारा ॥ एक ॥
धन्य नगर कुकड़ा वालों को,.धन्य "जीत" जैन के लालों को
धन्य पाए दरश मेरा चमका भाग्य सितारा ॥ एक ॥

—*—
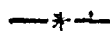
सभी गुण गावोरे, गुरु नानक जी का ध्यान लगावोरे ॥ टेर ॥
प्रथम पूज्य श्री नानक राम जी; जिनकी महिमा भारी रे ।
किया स्वर्ग में वास, सम्प्रदाय है जारी रे ॥ १ ॥
महिमा अतिय अपार आपकी, देश २ यश छायो रे ।
ज्ञान वृद्धि निमल प्रकाश, से जग चेतायो रे ॥ २ ॥

आत्मार्थी पूज्य नथालचन्दजी, शिष्यजिनो के नामी रे।
जैन धर्म की ज्योती जगा, पहुँचे सूर धामी रे ॥ सभा ॥ ३ ॥
तीजे प्रतापी सुखलाल जी, महा बाल ब्रह्मचारी रे।
भव जीवो को तार हुए, मुनी शिव पुर धारी रे ॥ सभी ॥ ४ ॥
शासन प्रभाविक हरक चन्दजी महिमा बरणी न जाए रे।
महा तपधारी हो गुणकारी, निर्वाण सिधाए रे ॥ सभी ॥ ५ ॥
पंडितबर्य्य हीरा चंदजी, दया चंदजी गुरु भाई रे।
दोनों ने मिल किया जगत उद्धार मनाई रे ॥ सभी ॥ ६ ॥
छट्ठे गुरू श्री लक्ष्मी चंदजी हुए बाल ब्रह्मचारी रे ॥
दे वीर प्रभू संदेश, हुए निर्वाण पद धारी रे। सभी ॥ ७ ॥
अब सातवें नम्बर हगामी लालजी, जाणे सब नर नारी रे।
बाल ब्रह्मचारी जगत मे जारी, हैं हुशियारी रे ॥ सभी ॥ ८ ॥
जो नर नारी गुरू वर तेरा गुण जो नित प्रति गावे रे।
"जीत" चोपड़ा निश्चय ही, निर्वाण पद पावे रे ॥ सभी ॥ ९ ॥
दोहा:—सम्प्रदाय वर्णन किया, सुनो सभी नर नार।
नित प्रति इसको ध्यावे, तो निश्चय हो उद्धार ॥
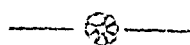
॥ पूज्य गुण-गायन ॥

(तर्जः—जिन्दगी है प्यार की प्यार से बिताये जा)

पूज्य गुरू नानक के गुण नित गायेजा।
प्रातः उठ के ध्यान, उनके चरणो में लगायेजा।

सुख वैभव पाएजा ॥ पूज्य टेर ॥

भारत के लाल थे, धर्म के प्रति पाल थे।

उनके लगाये हुए पौधे को बढायेजा ॥

प्रेम रस पायेजा ॥ पूज्य ॥ १ ॥

पूज्य थे सबके सरताज, नहीं कोई वैसा आज।

देते सबको ज्ञान प्यारे, धर्म को दिपाएजा ॥

सत्य को अपनाएजा ॥ पूज्य ॥ २ ॥

जग की हिंसा को मिटाया, झंडा अहिंसा का लहराया।

उनके झंडे की ज्योति प्यारे तू भी जगायेजा ॥

विश्व में फहरायेजा ॥ पूज्य ॥ ३ ॥

फूट का कर नाश, रखो सत्य के ऊपर विश्वास।

आवो मिल कर बैठे पास, प्रेम को बढ़ायेजा ॥

अवगुण को हटायेजा ॥ पूज्य ॥ ४ ॥

जीतमल तेरा दास, करता केवल यही आस।

नैया है मझधार, बेड़ा पार तू लगायेजा ॥

बुद्धि को बढ़ायेजा ॥ पूज्य ॥ ५ ॥

---+---

॥ गुरु गुण गायन ॥

(तर्ज—प्रभाती)

गुरु हीरा के मैं गुण गाऊं, दया लक्ष्मी को शीश नमाऊं ॥ टेर ॥

पुज्य नानक के उजियारे,

शिष्य ज्ञान के हो भंडारे,

गुरू की गादी के आप दिपाऊ ॥ दया० ॥ १ ॥

सांई समाज को तुमने जगाया,

दया धर्म का पाठ पढ़ाया,

अहिंसा के थेसकचे पूजाउ ॥ दया ॥ २ ॥

तुमने ज्ञान की ज्योत जगाई,

जग में जैन ध्वजा फहराई,

तेरी महिमा का पार न पाऊं ॥ दया ॥ ३ ॥

आवो भारत में फिर प्यारे,

मेटो आकर दुःख हमारे,

गए कित को मैं तुम्हे बुलाऊं ॥ दया ॥ ४ ॥

जीतमल के हो प्राण आधारे,

नैया गोते खाय मझधारे,

कैसे तुम बिन पार लगाऊं ॥ दया० ॥ ५ ॥

—+—

"मुनि पुरोत्सव"

(तर्जः—दुनियां सारी बिगड़ गई है नया जमाना आने से)

धन्य २ अहो भाग्य हर्ष अति आज हृदय पर छाया है,

नव दिवस की कठिन तपस्या का पुरोत्सव आया है ॥ टेर

जुग २ जीवो हगामीलाल मुनि, हे प्रभू तुमसे यह अरदास,

बैर पाप को छोड़ हृदय में सत्य धर्म का हो प्रकाश,

बीर बहादुर बन भारत के संकट का हम करदें नास,

ज्ञान की ज्योति जगा बतलावें, धर्मों में जिन धर्म है खास,
आज मातृभूमि भारत पर ए दुख का दिन आया है। धन्य।
पव पर्युषण के लगते ही तपस्या की ली तुमने धार,
सुख दुःख की पर्वाह न करके छोड़ दिया तुमने आहार,
अखंड जाप करवाया आपने भजके महामंत्र नवकार,
रात दिनों तक जगे बराबर होकर तन मन से न्यौछार,
बीत गए नो दिन पर फिर भी बीर नहीं घबराया है। धन
आखिर नव दिन बाद आपने पूर किया था सुखदाई,
सेकड़ों ही नर-नार इकट्ठे धन्य २ देते आई,
भादव सुदी ७ के दिन और दो हजार साल भाई,
बहुत दिनों के बाद आज ए घर २ पे खुशियां छाई,
पुरोत्सव का देख रंग ए 'जीतमल' गुण गाया है। धन

—— × ——

(तर्ज— लावणी)

मुनि अभयसिंह जी महाराज, बाल ब्रह्मचारी,
हुए समता मार मुनि, पंच महाव्रत धारी ॥ टेर ॥
था नगर तिहारी वास आपका प्यारे,
थे फौजमल जी हिंगड़ तात जिणारे,
ए इचरज कंवर माता के वीर मितारे,
धन्य २ हो ज्यांरी मात धन्य उजियारे,
किया उज्जवल जग में नाम, आतमा तारी ॥ मुन ।

चल बसे पिता परलोक, लघु वय मांही,
रहे माता के दो लाल बहन और भाई,
फिर लगा धर्म का प्रेम हृदय के मांई,
पुण्य योग सती सुगनाजी मिल्या सुखदाई,
फिर सर्व प्रथम लघु बहन ने दिक्षा धारी ॥ हुए ॥

फिर संवत २००३ जब आया,
गुरु हगामी लाल जी मुनि का दर्शन पाया,
फिर मात पुत्र दोनों ने विचार लगाया,
है झूंठा जग जंजाल जगत की माया,
ले दिक्षा करें उद्धार यही दिल धारी ॥ हुए ॥

ए जेठ सुदी फिर दूज तीज दिन आया,
मेवाड़ भुमी मे कुकड़ा नगर सुहाया,
गुरु हगामी लाल और सतीसुगनां जी भाया
ले संयम दोनों ने कर लिया मन का चाया,
रहो "जीत" धर्म में लीन अर्ज यही म्हारी ॥ हुए ॥

॥ अवश्य पढ़िए ॥

जीत ज्योति भाग १ २ ३

व

जीत संगीत माला के पुष्प तीन

जीत चोबीसी, जीत का गीत, जीत गुरु गुण महिमा

मिलने का पता

सहस करण जीतमल चोपड़ा

लाखन कोठड़ी अजमेर,

बड़ली चातुर्मास में

(तर्ज:— लाखों प्रणाम)

गुरू हगामी लाल जी, तुमको लाखों प्रणाम २ ॥ टेर ॥

गुरू नानक के हो उजियारे, लक्ष्मी चंद जी के शिष्य प्यारे

गादी दिपावन हारे ॥ तुमको ॥

गजमल जी के कुल चंदा, अनोर कंवर जी के हो नंदा

छोड़ा जग दुख फंदा ॥ तुमको ॥

नव वर्ष में दिक्षा धारी, समझी नश्वर काया सारी,

पंच -महाव्रत धारी ॥ तुमको ॥

संग शिष्य अभय -सिंह प्यारे, शान्त स्वभावी गुण को धारे,

सेवा में नित थारे ॥ तुमको ॥

दो हजार तीन के मांई, बड़ली नगर सदा सुखदाई,

धर्म की ज्योत जगाई ॥ तुमको ॥

चोमासे की पुरी आशा धर्म ध्यान भी हो रहा खासा,

खूब ही ज्ञान प्रकाशा ॥ तुमको ॥

अजय शहर सुं चलकर आए, पा दर्शन तेरा सुख पाए

हृदय हर्ष उमाए ॥ तुमको ॥

श्री संघ बड़ली सेवा मांई, खूब ही लावो ले रया भाई,

धन्य धन्य पुन्याई ॥ तुमको ॥

"जीतमल" की सुणजो अरजी वर यही चाहुँ गुरुवर जी,

करो पार हो मरजी ॥ तुमको ॥

——*——

जीत संगीत माला का पुष्प चौथा

जीत जाग्रति

पूज्यवर हस्तीमल जी,
जग वल्लभ हितकार।
प्रबल प्रचारक जैन के,
धर्म दिपावन हार॥
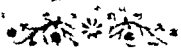
रचयिता—

कुंवर जीतमल चोपड़ा

अवैतनिक मंत्री—

श्रीमान् सेठ बाहूमल जी सरदार मल जी लोढा अजमेर ने
मेरा कार्यालय से प्रकाशित कराया

प्रथमावृत्ति २००० | कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा २००४ | मूल्य सदुपयोग

भूल मत जाइजो

[तर्ज म्हारा छैल भंवर कसुम्बो पीव]

म्हारा अजयशहर की प्रीतड़ली ने, पूज्य भूल मत जाइजो ॥टेर॥
वेगा वेगा दर्शन देकर प्रीत की रीत निभाइजो ॥ पूज्य ॥

पूज्यवर हस्तीमल जी, जग वल्लभ हितकार
चतुर्मास किया ठाठ से, वरत्या जय जय कार ।

रूपां के नंद करुणा के सिन्धु, कुछ करुणा दिल में लाइजो ॥पूज्य॥

अविनय असाधना जो करी मास पांच मझार
क्षमा याचना हम करें, सब मिल बारम्बार ।

हो क्षमा करन के योग्य आप, हम सबको क्षमा कराइजो ॥पूज्य॥

ग्राम, नगर पुर विचरता रखजो म्हाको ध्यान
अजयशहर प्यासो घणो, थे जाणो चतुर सुजान ।

हो मिठ बोले पूज्यराज मत बातां सूं ही रिझाइजो ॥पूज्य॥

दर्शन पा हर्ष सन्यां, दूजी भक्त संभाल
तीजो धर्म प्रचार भी लीजो सुध तत्काल ।

फिर नवयुवकां रा हृदय को उत्साह भी आन बढ़ाइजो ॥पूज्य॥

"जीत" प्रीत तुमसे करी करो सदा प्रतिपाल
हूं चाकर चरणां तणो थे छो दीन दयाल ।

कर कृपा दास पर पूज्य आप फिर शीघ्रही दर्श दिराइजो ॥पूज्य॥

॥ श्री ॥

भक्ति भावांजलि

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतम प्रभू ।
मंगलं स्थूलि भद्राद्या, जैन धर्मोऽस्तु मंगलम् ॥

पूज्य महिमा

१ (तर्जः—पदम प्रभू पावन नाम तिहारो)

पूज्य थांरा दरशण की बलिहारी,
मैं तो वारी जाऊं बार हजारी ॥ पूज्य ॥ टेर ॥

मिथ्यात्व अंधकार हरन को, लीनो नर अवतारी,
भव जीवां को हित चित चायो, छोड्यो सुख संसारी ॥ पूज्य ॥

मोह माया का बंधन तोड्या, ममता मारी समता धारी,
आतम ज्योति जगाकर पायो, अखूट ज्ञान बल भारी ॥ पूज्य ॥

जग मन भायो, पुण्य सवायो, चऊं दिश महिमा है जारी,
धर्म दिवाकर शान्ति के सागर, पायो पद आचारी ॥ पूज्य ॥

दया सिन्धु, दीन बन्धु प्यारा, लागो है उपकारी,
बाल ब्रह्मचारी, गुणधारी, थांरी, सुरत मोहनगारी ॥ पूज्य ॥

"केवल चन्दजी" रा कुल उजियारा, 'रूप कंवर' महतारी,
"जात" लगाई लगन हृदय में, पूज्य 'हस्ती रा चरणाँरी ॥ पूज्य॥

पूज्य-पाटावली

२ (तर्जः—लावणी)

हुए जिन शासन के मांय पूज्य बड भागी,
ज्यांरी सम्प्रदाय की ज्योत सवाई जागी ॥ टेर ॥

पुज्य धर्मदास जी महाराज जगत में जारी,
ज्यांरी सम्प्रदाय की महिमा वरणू सारी,
हुए बड़े बड़े विद्वान, वीर वैरागी ॥ ज्यांरी ॥ १ ॥
पुज्य धन्ना जी महाराज हुए गुणधारी,
भूधर जी जिनके शिष्य बड़े उपकारी,
मरूधर भूमि को किया धर्म अनुरागी ॥ ज्यांरी ॥ २ ॥
हुए रवमल, जयमल, जेतसिंह शिष्य भारी,
चौथे शिष्य जिनके कुशलचन्द्र जग जारी,
हुए जिन के पाटानुपाट पुज्य मुनि त्यागी ॥ ज्यांरी ॥ ३ ॥
हुए प्रथम पुज्य गुमानचन्द्र जी प्यारे,
गणी रतनचन्द्र जी पुज्य ज्ञान भंडारे,
जिन छोड़ा सुख संसार बने वैरागी ॥ ज्यांरी ॥ ४ ॥
तीजो पुज्य पद हम्मीर मल मुनि पायो,
पुज्य कजोड़ो मल जी खुब ही धर्म दिपायो,
जिनके हृदय में जिन चरणां लौ लागी ॥ ज्यांरी ॥ ५ ॥
पंचवें पाट पे विनयचन्द्र पुज्य राया,
पुज्य शोभा चन्द जी का तप तेज सवाया,
ज्यांरी वाणी सुण भव्य आत्मा सतपथ लागी ॥ ज्यांरी ॥ ६
अब सप्तम पाटपे पुज्य हस्तीमल प्यारे,
है जैन धर्म प्रतिपाल चमकते तारे,
इन्द्रियां वश कर हुए कनक कामनि के त्यागी ॥ ज्यांरी ॥ ७
इन महापुरूषों के जो प्रतिदिन गुण गावे,

थांरे वरते मंगल, मोद, विपत नहीं आवे,
आनन्द रंग बरसे, रोग सोग भय भागी ॥ थाँरी ॥ ८ ॥
गुणी-गुण गातां तिथ गोत्र बंध जावे,
इम आणी धरो नित ध्यान, "जीत" गुण गावे,
भव सिन्धु दीजो तार, चरण लौ लागी ॥ थाँरी ॥

॥ अजमेर-सेखेकाल-स्वागत गान ॥

२ (तर्जः—सावन के नजारे हैं)

पुज्य राज पधारे हैं, अहा अहा,
अजमेर की गलियों में, जैनियों,
अजमेर की गलियों में खुशियों के नजारे हैं ॥टेर॥
केवल कुल उजियारे, रूपां के प्यारे, "जैनियों"
रूपां के प्यारे, नैनों के सितारे हैं ॥ पुज्य ॥
लघु वय में बने त्यागी, जिन चरणों में लौ लागी, "जैनियों"
जिन चरणों में लौ लागी, पंच महाव्रत धारे हैं ॥ पुज्य ॥
अजमेर नगर मांही, करी कृपा दृष्टी भाई, "जैनियों"
करी कृपा दृष्टी भाई, सेखेकाल पधारे हैं ॥ पुज्य ॥
सेवा में संघ हाजर, तेरे चरणो का चाकर "पुज्यवर जी"
तेरे चरणों का चाकर, "जीत" शरण तुम्हारे है ॥ पुज्य ॥

॥ पुज्य-महिमा ॥

४ (तर्जः—देखो देखो जी जिया हरषाए, जयन्ती मनाएं)
पाए पाए जी पुज्य के दरशन, जिया हरषाए ॥ टेर ॥

धन्य ईश है तेरी माया, आज हुए मन चाए,
पुज्य पधारे, शहर हमारे, "हस्ती मलजी" मुनीराए ॥ पाए ॥ १ ॥
"केवलचन्दजी" के सुत प्यारे "रूपां' लाल कहाए;
उज्ज्वल कीना, सुयश लीना, धन्य जननी तुम जाए ॥ पाए । २
बचपन से ही ज्ञान ध्यान में, रहते आप सवाए,
समता त्यागी, हुए वैरागी, धर्म स्नेह लगाए ॥ पाए ॥ ३ ॥
पुज्य शोभाचन्द जो के शिष्य बन ज्ञान की ज्योती जगाए,
महाव्रत धारी, हो ब्रह्मचारी, पुज्य राज कहलाए ॥ पाए ॥ ४ ॥
सदुपदेश सुनाकर, जग को सुमार्ग बतलाए,
धर्म दिपाते कर्म खपाते, दुनिया सुयश गाए ॥ पाए ॥ ५ ॥
दया धर्म का ज्ञान देय, अहिंसा की ज्योत जगाए,
हिंसक प्रानी, जो अज्ञानी, उनको ज्ञान बताए ॥ पाए ॥ ६ ॥
देश देश में विचरत मुनी, उपदेशामृत बरसाए,
धर्म पे डटते ज्ञान से लड़ते, पाखण्डी शरमाए ॥ पाए ॥ ७ ॥
राग द्वेष को करके दूर, आपस में प्रेम बढ़ाए,
तजे अभिमानी, वही है ज्ञानी तारे और तिर जाए ॥ पाए ॥ ८ ॥
जैसे पपैया पिऊ पिऊ करता पानी बिन तरसाए,
उसी तरस में, कई बरस में, दरशन तक नहीं पाए ॥ पाए ॥ ९ ॥
अब आए हो कई बरस से, करदो मन के चाए,
चातुर्मास, इस साल वास, बस अजय शहर हो जाए ॥ पाए ॥ १०
दो हजार चार, चोपड़ा, "जीतमल" गुण गाए,
दास की अरजी, करजो मरजी, चरणन शीश झुकाए ॥ पाए । १०

॥ विनती ॥

५ (तर्जः—श्री महावीर स्वामी, अन्तरयामी, दिना नाथ दयाल)

अर्जी कर कर थाक्या, कांई हठ लाग्या, मानो मानो जी राज ॥ टेर ॥

दीन बन्धु दीनानाथ हो थे, बाजो दीनदयाल,
अर्जी कर कर हार गया थांरो दिल नहीं हाल्यो हाल ॥ अर्जी ॥

पहलो भी पीपाड़ के मांही, करदी आश निराश,
ऐसी हुई कांई गलती म्हांकी, कर दो नी पुज्य खुलास ॥ अर्जी ॥

कांई नहीं हां मैं श्रावक थांरा, या सेवा में हां कमजोर,
बालपणा का साथ्यां ने भूल्या, प्यारा लाग्या ओर ॥ अर्जी ॥

छोयत्तर का साल यहीं पर, बाध्यो दिक्षा को मोड़,
अजय शहर को है पुज्य पुरानो, या प्रितड़ली मत तोड़ ॥ अर्जी ॥

चहुँ दिशी पर्वत है छवी न्यारी साताकारी शहर,
उनाला में प्यारो लागे, यो अजर अमर अजमेर ॥ अर्जी ॥

मोटा मोटा सेठ नहीं हां, नहीं जाणा मैं जी हजूर,
भक्ति रा भाव, चरण का हां चाकर सेवा करस्यां जरूर ॥ अर्जी ॥

बोलो जी बोलो सामा तो जोलो, छोड़ो घोल मथान,
दिल मांही धड़कन, नजरा है थां पर पल पल वर्ष समान ॥ अर्जी ॥

बालक समझो चाहे नादानी समझो समझो चाहे गंवार,
या तो मंजुरी दे दीजो स्वामी, नहीं अनशन लेस्यां धार ॥ अर्जी ॥

मत तरसावो, हुकम दिरावो, कह दो है स्वीकार,
"जोत" युवक संघ करीचन थारो, भूलसी यो उपकार ॥ अर्जी ॥

"बधाई"

६ (तर्ज—मैयां गावो ए बंधावो, मुनीश्वर आपणे आया)

सब मिल गावो जी बधावो, हो गया आज मन चाया ॥ टेर ॥

बहुत दिनां सु प्यासा, आशा करतां करतां आया,
हस्तीमल जी पुज्यराज का, देखो दरशण पाया ॥ सब ॥

चोमासा कां करी विनती सब मिल भाया बायां,
जयपुर और पाली संघ ने आ, खूब ही जोर लगाया ॥ सब ॥

पुण्य योग अजमेर शहर के, चोमासा मुनि ठाया,
हृदय हर्ष अपार आज, जय जय हो तेरो पुज्यराया ॥ सब ॥

जयपुर और पाली के सब से, यही अर्ज हमारी,
दर्शन कीजो, लावा लीजो, चातुर्मास मझारी ॥ सब ॥

यही जीत की अर्जी बायां भाया, लावो लीजो,
पुण्य योग अवसर यो आयो, वृथा मती खो दीजो ॥ सब ॥

॥ स्तुति ॥

७ (तर्जः—श्री महावीर स्वामी, अन्तर यामी दीना नाथ दयाल)

जय जय हो थांरी, हो उपकारी, जांऊ मैं बलिहार ॥ टेर ॥

प्यासा की प्यास बुझाई स्वामी हृदय हर्ष हुलास,
बालुड़ां री लाज रखी थे, पूरी मन की आस ॥ जय ॥

करूणा सिन्धु कृपा करी जी, मेटी मन की पीर,
चोमासा को हुक्म दिरायो, धन्य रे म्हारो वीर ॥ जय ॥

अर्ज करूं कर जोड़ के जी, सुणजो सकल समाज

पुण्य योग अवसर यो आयो, सजो उन्नति का साज ॥ जय ॥
जागो जी भाया जागो ए बांया, समय मिल्यो अनमोल,
धर्म ध्यान से चित रमावो, लावो लेवो दिल खोल ॥ जय ॥
युवक संघ सेवा में थांरे, तन मन से न्योछार,
"जीतमल" करो भक्ति हृदय से, हो जावे बेड़ो पार ॥ जय ॥

॥ पुज्य महिमा ॥

पुज्यवर हस्तीमल जो, जग वल्लभ हितकार।
चतुर्मास किया ठाठ से, वरत्या जय जय कार ॥

॥ स्वागत गान ॥

८ (तर्जः—जब तुम्हीं चले परदेश: "रतन")

हम स्वागत करते आज, पधारो राज,
प्राणों से प्यारे, रूपां के नन्द दुलारे ॥ टेर ॥
जननी का मान बढ़ाया है, जीवन को सफल बनाया है,
है धन्य तुम्हारा त्याग, धर्म हित प्यारे। रूपां ॥ १ ॥
संसारी सुख वैभव छोड़ा, मोह माया का बन्धन तोड़ा,
लघुवय मे आपने, पंच महाव्रत धारे ॥ रूपां ॥ २ ॥
चतुर्मास का सुअवसर दीना, अजमेर नगर पावन कीना,
नित जावे "जीत" बलिहार, चरण में थारे ॥ रूपां ॥ ३ ॥

॥ जनता से ॥

९ (तर्जः—म्हारा छेल भंवर कसुम्बो पीव, मत कोई नजर)

म्हारा पुज्य राज का समवशरण में, नित उठ वेगा आईजो ॥ टेर ॥

मीठा मीठा बोल पुज्य का सुण सुण ज्ञान वढाइ जी ॥ नित ॥
छोड़ा सब संसार का, तोड़ा माया जाल,
बचपन में धारण किए, महाव्रत पांच विशाल,
इस्या गुणावंता का चरणां में कोई, झुक झुक शीश नवाई जो ॥नित
दुर्लभ ए नरभव मिला, उत्तम कुल इस बार,
सन्तों की संगत मिली, कर सुकृत दिन चार,
करो ध्यान तपस्या, शियल पाल, कोई भली भावना भाई जो ॥ नित ॥
"जीत" प्रित तुमसे करी, करो सदा प्रति पाल,
भव भव के बन्धन कटे, तारो दीन दयाल,
हो मिठ बोले पुज्य राज, कोई प्रित की रीत निभाई जो ॥ नित ॥

॥ स्तुति ॥

१० (तर्ज:—ख्याल की-चारण का मारू कागज दिजे रे जल्दी जार)

पुज्य मोहन गारा, प्यारा छो प्राण समान ॥ टेर ॥
जल में बसे कमोदनी रे, चन्द्र बसे आकाश,
आप हमारे मन बसो जी, जब देखे तब पास ॥ पुज्य ॥
पतिव्रता पति को जपे जी, कब हु नहीं बिसराय,
लगी लगन तुम चरण में जी, दुजा न कोई सुहाय ॥ पुज्य ॥
जल बिन तड़फे, माछली जी, तरसे दादर मोर,
बिन दर्शन नहीं चैन है जी, ऐसो लियो चित चोर ॥ पुज्य ॥
कमल खिल्यो जल बीच में जी, नैना देख लुभाय,
सभा विच पुज्य की छवी जी, निरख निरख हरषाय ॥ पुज्य

जीत प्रित तुमसे करी जी, प्रिति को रीत निभाय,
तारण तिरण तुम बिरद है जी, दीजो मोय पार लगाय ॥ पुज्य ॥

११ (तर्ज:—पनिहारी जी है लोय)

प्राणां सूं प्यारा पुज्यवर, मोहन गारा,
नैन सितारा, जग उजियारा है लोय ॥ टेर ॥

जगत शिरोमणी, वीर हमारा, त्रिसला नंद लागे प्यारा है लोय॥प्राणां॥
केवलचंद जी, रा कुल उजियारा, छोड़या जग सुख सारा है लोय ॥प्राणां॥
बालपणां मांही दिक्षा धारी, समता धार ममता मारी है लोय ॥प्राणां॥
धर्म दिवाकर, पर उपकारी, मन मोहनी छबी न्यारी है लोय ॥प्राणां॥
सुजाण मल मुनि है गुणधारी, सर्व सन्त हितकारी है लोय ॥प्राणां॥
महा सती छोगां जी विराजे, मगल बाज नित बाजे है लोय ॥प्राणां॥
करी कृपा अजमेर पे भारी, चतुर्मास मंगल कारी है लोय ॥प्राणां॥
समय मिल्यो कुछ पुण्य कमावो, बायां भायां लेवो लावो है लोय ॥प्राणां॥
'ज्ञानमल" चरणांको चाकर, दी जो शिव सुख सागर है लोय ॥प्राणां॥

॥ संवत्सरी पर्व ॥

१२ (तर्ज:—अर्जी कर कर थाक्या कांई हद लाग्या, मानो २ जी राज)

पुज्य राज हमारा प्राण प्यारा, मोहन गारा रे ॥ टेर ॥

वीर प्रभू को सुमिरण करियां, विघ्न सभी टल जाय ।
पुज्य राज श्री हस्ती मल जी, वंदू मैं शीश नवाय ॥ पुज्य ॥
केवलचन्द जी का सुत प्यारा, रूपां देवी रा लाल ।
जग वल्लभ हितकारी प्रकट्या, जैन धर्म प्रतिपाल ॥ पुज्य ॥
संवत् १९६७ मांही, लीनो मुनि अवतार,

पीपाड़ नगर के घर घर मांही, वरत्या मंगलाचार ॥ पुज्य ॥
सतन्तर को साल के मांही, अजय शहर सुखकार,
दस वर्ष की उमर मांही, लीनो संजमभार ॥ पुज्य ॥
गुरू मिल्या पुज्य शोभाचन्द जी, ज्ञान तणा भंडार,
सेवा कर ज्यांरी मेवा लीना, कर दिया खेवा पार ॥ पुज्य ॥
सत्तयांसी की साल के माही, जोधाणे मंझार,
पुज्य पदवी दी श्री सघ ने, हर्षया सब नरनार ॥ पुज्य ॥
जैन धर्म की ज्योति जगाई जन्म्या जग जसवंत,
अज्ञान रूपी अधकार मेटवा, प्रकटया पाज्यो पूनम चुंद ॥ पुज्य ॥
दो हजार और चार के मांही, अजर अमर अजमेर,
चोमासा को कृपा किनी, हर्षित सागे शहेर ॥ पुज्य ॥
सुजाण मल जी संग में थांरे, अमर मुनि गुणवंत,
दोनो ही लक्ष्मी चन्द जी प्यारा, माणक मुनि मोटा संत ॥ पुज्य ॥
धर्म ध्यान का ठाठ लगाया, घर घर आनन्द उछाव,
तपस्या भी हुई बरत रया जैसा, देश काल और भाव ॥ पुज्य ॥
धन्य धन्य अहो भाग्या, पधारया, पावणींया दिन चार,
फिर भी मैं तो थांकी पुरी, कर न सक्या मनवार ॥ पुज्य ॥
युवक संघ की अर्जी यही त्रुटि हुई हो जो इस वार,
एक वार शिघ्र अवसर दीजो, लेस्यां भूल सुधार ॥ पुज्य ॥
गावो जी भाया गावो ए बायां, मंगल बधाओ आज,
"जीतमल" सोहे आज सभा में जैन जगत रो ताज ॥ पुज्य ॥

—: ३४ दिन की तपस्या के पूर के उपलक्ष में :—

१३—तर्ज (देखो देखो जी बदरवा छाए)

देखो देखो जी जिया हरषाए, आनन्द छाए ॥ टेर ॥

दीन दयाल, दीन के बन्धु दीनानाथ कहाए,
प्राण पियारे, पुज्य हमारे, हस्तीमलजी मुनिराए ॥ देखो ॥
सुजाण मलजी संतगुणी हैं, अमर मुनि मन भाए,
शोभा रिझाते, सब मन भाते, लक्ष्मी चन्दजी मुनिराए ॥ देखो ॥
सरल हृदय लघु मुनि लक्ष्मी, सेवा खुब बजाए,
वाणी प्यारी, माणक थांरी, सुण २ सब हरषाए ॥ देखो ॥
महा सती छोगा जी विराजे, मंगल मोद सवाए,
सतीयां सारी है गुणधारी, वंदू शीश निवाए ॥ देखो ॥
धर्म ध्यान और तपस्या के, खूब ही ठाठ लगाए,
तपस्वीराज, श्री सोहन राजजी, जोधाणे से आए ॥ देखो ॥
भादव वदी अमावस के दिन, घर घर आनन्द छाए,
ममता मारी, समता धारी, तपस्वी राज तप ठाए, ॥ देखो ॥
एक दिवस भूखा रहने पर, सूरत कुमला जाऐ,
यहां हुए चौतीस फेर भी, खुशी नजर में आए, ॥ देखो ॥
निर अभिमानी, उत्तम प्रानी, बिरले ही दरषाए,
निस्वार्थ बुद्धि, कर रहे शुद्धि, निज आतम की भाए ॥ देखो ॥
धन्य धन्य, पुज्य, धन्य मुनि, और धन्य तपस्यी भाए,
जीतमल ऐसे गुणीयों के, चरणों में बलि जाए ॥ देखो ॥

जाग्रति

१४. (तर्ज:—नलराय सोभागी, रानी दमयन्ती शीयल शिरोमणी)

धन्य भाग्य हमारो, कीनो चोमासो पुन्यवर ठाठ से ॥ टेर ॥

संवत दो हजार चार में, अजय शहर सुखकार,
चोमासो पुज्य हस्ती मुनि को, वरत्या मंगला चार ॥ धन्य ॥

असाढ सुदी दसमी पे पधार, चोमासा रे काज,
जय जय करता हृदय उमाय, स्वागत कियो समाज ॥ धन्य ॥

लोढा का समीर भवन में, मडप की छबी न्यारी,
ममैया को नोहरो बाजे जहां ठहरया अनगारी ॥ धन्य ॥

हुआ कई शुभ काम यहां पर, जिणरो करूं बयान:
दो युवक संघ था जो पहले, हुआ एक सुण ज्ञान ॥ धन्य ॥

गवर्नमेंट कर वन्द गेहूं को, आटो देणो चाई,
जैन संघ होकर के भेलो, अधिकारी ने सुझाई ॥ धन्य ॥

शास्त्र प्रमाण पुज्य सुं लेकर, आटो निषेध बतायो,
देख प्रमाण झुकया अधिकारी, आटो बन्द करायो ॥ धन्य ॥

पर्युषण के पर्व मायने, मंडप सज्यो अति भारी,
भाया बायां की गिनती नाहीं जगह भर गई सारी ॥ धन्य ॥

जैन अजैन सभी मिल आता, वाणी सुण हरषाता,
केसरीया कसुमल पेचा, चऊं दिशी नजर में आता ॥ धन्य ॥

युवक संघ ने इन्तजाम में, खुब ही शोभा लिनी,
जगह २ स्वयं सेवक हाजिर, शान्ति स्थापित किनी ॥ धन्य ॥

धर्म ध्यान का ठाट लगाया, तपस्य हुई पचरंगी,

समाशां की गिनती नाहीं, 'नत पच, सत, नव रंगी ॥ धन्य ॥
शान्ती जाप और आठ दिनां हुयो, अखंड जाप नवकार,
जीव दया की हुई पानड़ी, संवत्सरी मंझार ॥ धन्य ॥
अट्ठाई तप हुयो घणो ही, बायां लावो लीनो,
मंगल बाजा बजा नित्य, उद्योग धर्म को कीनो ॥ धन्य ॥
व्याख्यान में पूज्य श्री, नल-दमयन्ती–चरित्र सुनाता,
सुजाणमल्ल जी की सुण वाणी, सज्जन सब हरषाता ॥ धन्य ॥
भादव बदी अमावस ने हुयो, चौतीस दिन को पूर,
युवक संघ एक करी पानडी, तपस्या हुई भरपूर ॥ धन्य ॥
आसोज सुदीयों में कांफ्रेंस, बम्बई से आयो तार,
रावलपिंडी के बन्धुओं हित, करी पानड़ी तैयार ॥ धन्य ॥
इणा सभी कामों मे युवक संघ, खुब ही लावो लीनो,
दर्शनार्थीयो ने जल और रोशनी, स्थान सभी कुछ दीनो ॥ ध०
एक आयंबिल उपवास, एकासणो, नित का रह तो जारी,
दया गंठ भी करी सभी मिल, धर्म चक्र हुयो भारी ॥ धन्य ॥
भोजन व्यवस्था थी अति उत्तम, चोको दूर हटयो,
बारी बारी से श्रीमानो ने, खुब ही लाभ उठायो ॥ धन्य ॥
सबसे उत्तम पुज्य प्रताप से, रही शान्ति की लहैर,
देश के सम्प्रदायिक झगड़ों से, बचा रहा अजमेर ॥ धन्य ॥
जाग्रति के लिए और भी, होते कई शुभ काम,
पर कोमी संघर्ष के भय से, रुके रहे तमाम ॥ धन्य ॥
समाज सुव्यवस्था के हित हो रहै, कई वीर तैयार,

जैन संघ वहां करके स्थापित, करसी "जीत" सुधार ॥ छन्द

॥ सुजाण महिमा ॥

१५. (तर्ज.—आज रंग बरसे)

मोहन गारा रे, श्री सुजाणमल जी मुनिवर प्यारा रे ॥ टेर ॥
संवत उन्नीसो अड़तीस मांही, जयपुर शहर मंझारा रे,
आसोज बदी नवमी ने लिना, नर अवतारा रे ॥ मोहन ॥
ओस वंश विख्यात आपका, पटनी कुल उजियारा रे,
मालीराम जी पिता, दाखां के नन्द दुलारा रे ॥ मोहन ॥
बचपन से ही लगी लगन, जिन चरणन में चित धारा रे,
नश्वर काया जान, त्याग दिया सुख संसारा रे ॥ मोहन ॥
उन्नीसो इक्यावन, चेत शुक्का, दसमी दिन प्यारा रे,
तेरहा वर्ष की लघु वय मांही, संयम धारा रे ॥ मोहन ॥
गुरू हंस राज जी के शिष्य बन, किया ज्ञान प्रसारा रे,
दया धर्म की ज्योति जगा, भव जीवों को तारा रे ॥ मोहन ॥
वाणी प्यारी, है हितकारी, बरसे अमृत धारा रे,
हर्षित होवें हृदय, देख दीदार तुम्हारा रे ॥ मोहन ॥
दो हजार चार दिवाली, अजय शहर सुखकारा रे,
"जीत" गुणो गाय, चमके भाग्य सीतारा रे ॥ मोहन ॥

॥ भूल मत जाना ॥

१६. (तर्जः—अंखियों मिलाके, जिया भरमाके)
नेह लगाके, दिल को लुभाके, भूल मत जाना ॥ टेर ॥

जीवन समझते धन्य, दर्श पा प्रिति दिन सबेरा,
नैत्र हो जाते हर्षित, देख के दीदार तेरा,
नैनों को लुभाके, प्रिति को बढ़ाके—भूल ॥
प्राणों से प्यारे, कैसे सहे हम जुदाई तेरी,
दिखते थे महिने पाँच, बीतते लगी ना देरी,
सोतों को जगाके, ज्ञान रस पाके ॥ भूल ॥
तेरे आभार का ऋण, कैसे हम चुकावें स्वामी,
सेवा भी पूरी नहीं कर सके, रह गई है खामी,
फिर भी अपना के, दया उर लाके ॥ भूल ॥
बच्चों की गलतीयों पर, ध्यान न देना उपकारी,
प्रित पुरानी पाल, क्षमा कर दीजो सारी,
सुमार्ग बताके, लगन लगाके ॥ भूल ॥
अज्ञानता वश पिछे रहे, तेरा सत्संग पाके,
पर "जीत" को उम्मीद, अबके संभलेंगे हम ठोकर खाके,
सुधि लाजो आके, अजमेर से जाके ॥ भूल ॥

॥ विदाई ॥

१७. (तर्जः—जब तुम्हीं चले परदेश)

अजमेर की पालो प्रित, पुरानी रीत,
को याद रखाना, पुरन्दर जी भूल मत जाना ॥ टेर ॥
जब चतुर्मास करने आये, नर नारी सब जन हरषाये,

पर छोड़ हमें अब, हो रहे आज रवाना ॥ पुज्य ॥
प्रभु ने क्या मार्ग बताया है, बेदर्दी तुम्हें बनाया है,
नहीं करो तोड़ते देर, प्रित का बाना ॥ पुज्य ॥
जब दर्शन आ तेरे पाते, मुरझे चहरे भी खिल जाते,
अब तुम बिन सूना लगे वो आज ठिकाणा ॥ पुज्य ॥
दे विदा आज जब जावेंगे, बीते दिन याद दिलावेंगे,
तब तुम्हीं कहो, कैसे दिल को समझाना ॥ पुज्य ॥
हृदय न जुदाई चहाता है, रग रग दे विदा मुरझाता है,
हृदय के वेग का कहां तक करूं बयाना ॥ पुज्य ॥
अविनय असाधना जो भी की, करूं क्षमा याचना त्रुटि की,
हो क्षमावान, तुम क्षमा हमे कर जाना ॥ पुज्य ॥
हो महर नजर ए वर देजा, शीघ्र होंगे दर्शन यह कह जा,
यही "जीत" की अर्जी, स्वामी ध्यान में लाना ॥ पुज्य ॥

आनन्द इसी अवसर में है,
अपने हृदय का पट खोलो,
एक बार भक्ति से सब,
श्री पुज्यराज की जय बोलो,

समाप्त

हर्ष सूचना

।। प्रेस मे छप रहा है ।।

जीत ज्योति

भाग १ से ५ तक के चुनिन्दा भजनों का संग्रह

प्रिय पाठकगण !

हमारे पास बाहर से स्वधर्मी बन्धुओं के बहुत से कार्ड व समाचार आए हुए हैं परन्तु पुस्तकों की कमी के कारण न भेज सके इसके लिए क्षमा चाहते हैं, अब फिर से अब तक की तमाम रचनाओं में से चुनिन्दा चुनिन्दा भजनों का संग्रह करके "जीत ज्योति" नाम से प्रकाशन किया गया है अत अब शीघ्र ही आपकी सेवा में भेज दी जायगी।

अवश्य पढ़िए:—

जीत ज्योति भाग पाँचवा

जिसमें:—

मुनिराजों के नोज़रां युवकों करो विचार
पंचों पढ़कर जागिए बहनों करो सुधार

शीघ्र प्रकाशित हो रहा है

जीत संगीत माला का पुष्प पांचवा

---> * - -
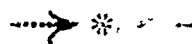
जीत की प्रार्थना

जिसमें जैन जग वल्लभ श्री मज्जैनाचार्य पूज्य श्री १००८ श्री गणेशीलाल जी महाराज साहब के गुण गायनों की आज-कल सिनेमा व मारवाड़ी तर्जों पर अपूर्व रचना की गई है।

* कृपया पहले से ही ग्राहक बनिये *

पुस्तक मिलने का पता—

सकसकरण जीतमल चोपड़ा
लाखन कोटड़ी
अजमेर

जीत संगीत माला का पुष्प पाँचवां

जीत की प्रार्थना

उर्फ

गणेश गुरु महिमा

अहो गणपति वर दो मुझे, करके महर अपार।
यही "जीत की प्रार्थना," भव भव भ्रमण निवार॥

रचियता:—

कुं० जीतमल चोपड़ा

अवैतनिक मंत्री
श्री श्वे० स्था० जैन युवक संघ अजमेर

प्रकाशक

* सहसकरण जीतमल चोपड़ा अजमेर *

मुद्रक—अम्बालाल माथुर
अमर प्रेस, अजमेर

प्रथमावृत्ति १०००

संवत्सरी पर्व
२००५

मूल्य
≡) तीन आना

हर्ष सूचना

प्रिय पाठकगण,

आपको यह जान कर अत्यन्त हर्ष होगा कि "श्री जैन स्तुति" जो कि जैन जगत में काफी प्रचलित है तथा जिसकी अब तक १० बार आवृत्तियां छप चुकने पर भी मांग है जिसमें प्रातःकाल सदैव मनन करने के लिये आनुपूर्वी, भक्तामर, विनयचंद चोवीसी तथा उत्तम चोढाइयां व अन्य अनेक जैन सिद्धान्तों के अनुसार दिये हुए प्रश्नोत्तर तथा उत्तम स्तुतियों की करीब २५६ पेज में रचना की गई है, तथा जिसका प्रत्येक जैन बन्धु के पास होना आवश्यक है। ऐसे उत्तम पुस्तक का प्रचार करने तथा स्वधर्मी बन्धुओं की मांग पूरी करने के लिए हमने अहमदाबाद से उसके प्रकाशन की स्वीकृति मंगा कर उसे छपाने का निश्चय किया है अतएव आपसे प्रार्थना है कि कृपया इसके लिये ज्यादा से ज्यादा तादाद में शीघ्र आर्डर भिजवादें ताकि इसका प्रबन्ध व प्रकाशन शीघ्र एवं उत्तम तरीके से हो सके।

आशा है हमारे जैन बन्धु इस अवसर को हाथ से न जाने देंगे व अपने अपने नगर में इसका प्रचार कर अधिक तादाद में आर्डर भेज कर इस कार्य की सफलता में सहयोग प्रदान करेंगे।

पत्र व्यवहार का पता

सहसकरण जीतमल चोपड़ा

लाखन कोटड़ी, अजमेर

जीत की प्रार्थना

उर्फ

गणेश गुण महिमा

[शेर]

सिद्धार्थ नन्दन जगत वन्दन, करता हूँ नमस्कार जी,
तारण तिरण श्री सतगुरु, वन्दू मैं वारम्वार जी।
पूज्य राज की महिमा गाऊं, बुद्धि के अनुसार जी,
गुणवंत के गुण गावंता, हो निश्चय ही उद्धार जी॥

पूज्य स्तुति

[तर्ज—मनाऊं मैं तो श्री अरिहंत महन्त]

मनाऊं मै तो, श्री गणपति गुणवंत ॥ टेर ॥
पूज्य जवाहर की गादी पर बैठे जग जसवन्त,
ज्योति जगाई जैन धर्म की, चहुँ दिश महिमा करंत ॥मनाऊं॥
वाणी प्यारी महिमा भारी, अमृत सम बरसन्त,

अरिहन्त, सिद्ध, सिवरू सदा, आचारज उपाध्याय ।
साधु सकल के चरण को, वंदूं शीश नवाय ॥

सुरत थांरी मोहन गारी, दर्श करत दुःख अंत ॥मनाऊं॥
धीर, वीर, गंभीर है ज्ञानी, त्यागी मोटा सन्त,
तेज प्रताप देख कर थांरो, पाखंडी शरमन्त ॥मनाऊं॥
"साहिब" तात 'इन्द्रा' माता ने, जायो लाल पुन्यवंत,
"शील" देवो वो शक्ति स्वामी, अष्ट कर्म करु अंत ॥मनाऊं॥

"पूज्य–पाटावलि"

[तर्ज—नेमजी की जान बणी भारी]

पूज्य की सम्प्रदाय जारी, जगत में महिमा विस्तारी ॥ टेर ॥
वीर तीर्थंकर पदधारी, चरण में जाऊं बलिहारी,
पूज्यवर प्रकटे अवतारी, महिमा सुणजो नरनारी.
दोहा:—प्रथम पूज्य जग दिपते, हुकमीचन्द जी महाराज।
जग वल्लभ हितकारी, गुरुवर, सारया आतम काज ॥
जिन्हों की सम्प्रदाय भारी ॥ १ ॥
पूज्य शिवलाल मुनि भारी, प्रीत शिव रमणी से धारी,
जगत की ममता को मारी, कर्म दल काट्या दुखकारी,
दोहा:—निज प्रतापी पूज्यवर उदय सागर की जान ।
जैन धर्म की ज्योति जगाई, कियो आत्म कल्याण ॥
हुए शिवपुर के अधिकारी ॥ २ ॥

गुरु दीपक, गुरु चांदणो, गुरु बिन घोर अंधार।
पलक न बिसरूं ताहि को, गुरू मम प्राणाधार॥

पाटवी चोथे कहलाए, चोथमल जी पूज्य मन आए,
संयम तप जप में चित लाए, अन्त सद्गति को सिधारे,
दोहाः—पंचम पाट श्री लाल जी, ज्ञानी गुण भंडार।
धर्म दिवाकर दया के सागर, कर दिया खेवा पार॥
दिया भव भ्रमण दुःख टारी ॥ ३ ॥
धन्य जिन जननी ने जाया, पूज्य सब ही के मन भाया,
धर्म को खूब ही दिपाया चहुँ दिश जग सुयश गाया,
दोहाः—पूज्य जवाहर लाल जी, छट्टे पूज्य पुन्यवान।
पाखंडियों की पोल निकाली, महा गुणों की खान॥
करी जा मोक्ष महल त्यारी ॥ ४ ॥
सातवां पाट आज जारी, गणेशीलाल पूज्य भारी,
सूरत मन मोहनी छवि न्यारी, दर्शकर पातक दे टारी,
दोहाः-जग जाहिर पूज्य राज हैं, जैन जगत आधार।
'जीतमल' चरणां रो चाकर, अर्ज करे हरबार॥
दिखादे शिवपुर सुखकारी ॥ ५ ॥

"बतलाओ तुम कहां गए"

"भारत के ओ अवतार जैन जाति के आधार
धर्म के दिपावन हार, पूज्य पद को पागए,
शुद्ध संयम धार, क्रिया के थे पालन हार,

यह तन विष की वेलड़ी, गुरु अमृत की खान।
शीश दिए से गुरु मिले, तो भी सस्ता जान॥

ज्ञान के गहरे भंडार, सदुंपदेश सुना गए,
आज हो रहा कष्ट अपार, मच रहा है हाहाकार,
भारत पर फैला अंधकार, दुःख के बादल छा गये,
जरूरत तेरी अपार, "जीतमल" करता पुकार,
पूछता हूँ पूज्य जवाहर, बतलाओ तुम कहाँ गए,"

जवाहिर-गुण महिमा

[तर्ज—कव्वाली]

हिन्द के उज्ज्वल सितारे, धर्म के अवतार थे,
जैन जाति के जवाहिर, तुम्ही एक आधार थे ॥टेर॥

शेर—जग को झूंठा जान कर, काया को वश में कर लिया,
छोड़ कर सुख साज को, सुवेश साधु का किया,
धर्म की ज्योति जगा कर, ज्ञान का परिचय दिया,
धन्य हो ए वीर तुमने, पूज्य पद को पा लिया,
चलत—शुद्ध संयम और क्रिया के तुम पालन हार थे ॥हिन्द॥

शेर—अपने बुद्धि बल तेज से जग में कमाया नाम जी,
दुनिया सभी ए जानती, क्या क्या किए थे काम जी,
इन्द्रियों को वश में किया, और छोड़े सुख तमाम जी,
प्रभु भक्ति में लवलीन हो, फिर पहुँचे मुक्ति धाम जी,

गुरु गोविन्द दोनो मिले, किसके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु देव की, गोवीन्द दिया मिलाय॥

चलत—अहिंसा के सच्चे पुजारी ज्ञान के भंडार थे ॥हिन्द॥
शेर—शरीर व्याधी होने से, कीना बिकाणे निवास जी,
युवराज शिष्य प्यारा गणेशी लाल रहे नित पास जी,
सेवा कर लाभ लिया, इन्तजाम किना खास जी,
धन्य बिकाणे श्री संघ, दे रहा जग शाबास जी,
चलत—तन, मन, धन से हो न्योछावर, सेवा में तैयार थे ॥हिन्द॥
शेर—विधवा की गति विचित्र है, कोई न पायो पार जी,
प्रातः स्मरणीय पूज्य जवाहर, छोड़ चले मझधार जी,
आज भारत भूमि पर, छाया है कष्ट अपार जी,
आओ जवाहर फिर से तुम, करने जगत उद्धार जी,
चलत—अजमेर निवासी जीतमल के तुम्हीं प्राणाधार थे ॥हिन्द॥

"गणेश-गुण गायन"

[तर्ज—श्री महावीर स्वामी, अंतरयामी, दीनानाथ दयाल]
पूज्यराज हमारा, प्राण प्यारा, मोहन गाए रे ॥टेर॥
पूज्य जवाहर लाल जी रे, हुए जगत पुज्यवन्त,
भव भव भ्रमण निवार, हुए मुनि शिव रमणी के कंथ ॥पूज्य॥
आज उन्हीं के शिष्य गणेशीलाल महागुणवंत,
अज्ञान रो अन्धकार मेटवा, प्रकट्या ज्यों पुनम चंद ॥पूज्य॥

लोभी गुरु तारे नहीं, तारे सो तारन हार।
जो तू तिरो चहिए, निर्लोभी गुरू धार॥

आठ संपदा सहित पूज्यवर, छत्तीस गुण भंडार,
शुद्ध संयम और तप जप मांही, करते आत्म उद्धार ॥पूज्य॥
व्याख्यान की शैली उत्तम बरसे अमृत धार,
सिंह सम गाजे, पाखंडी लाजे, महिमा अपरम्पार ॥पुज्य॥
'साहिबचंद' जी के सुत प्यारे, 'इन्द्रा देवी' के नंद,
"जीत" देवो वर यही स्वामी, मिट जावे भव भव फंद ॥पुज्य॥

बगड़ी नगर में

(रूमझुम बरसे बादलवा)

धन्य आज दिन आयो रे, हृदय में हर्ष सवायो,
दर्शन पायो, पायो, दर्शन पायो ॥ टेर
पुज्य जवाहिर की गोदी के धारी हो धारी हो,
पुज्य गणेशी लाल जगत में, जारी हो, जारी हो,
"साहिब" लाल कहायो रे, "इन्द्रा" देवी को जायो, कुलने दिपायो ॥ पायो
छोड़ा जग जंजाल के, संयम ले लिया, ले लिया,
पुज्य गुरू ने ज्ञान धर्म का दे दिया, दे दिया,
जिन मार्ग दिपायो रे जीवन ने सफल बनायो, पुज्य कहायो ॥ पायो
व्याख्यान की शैली सब मन भा रही, भा रही,
प्यासों को अमृत का प्याला, पा रही, पा रही

गुरू बड़े परमार्थी, मोटो जिनको मन।
भर भर मुट्ठी देत हैं, धर्म लाइयो वन ॥

तप और तेज सवायो रे, पाखंडी भी शरमायो, सन्मुख न आयो ॥ पायो ॥
बगड़ी नगर में आनन्द मंगल छा गए, छा गए
अजमेर से तेरे दर्श को, आ गए, आ गए
"जैतमल" गुण गायो रे चरणा में चित लगायो तू ही मन भायो ॥ पायो ॥

वरदान

(तर्जः—दुख है ज्ञान की खान मनुआ)

ऐसा दो वरदान, गणपति, ऐसा दो वरदान ॥ टेर ॥
जग की ममत्व भावना त्यागूं करू आत्म कल्यान ॥ गण ॥
भव भव जनम मरण के दुख का कैसे करू बयान
देव, नरक तिर्यन्च गती में, पाए, कष्ट महान ॥ गण ॥
मानव भव दुर्लभ ए पाया, पूर्व पुन्य बलवान
उज्ज्वल कुल जैन धर्म भी उत्तम गुरू मिले गुणवान ॥ गण ॥
प्राणी मात्र से प्रेम भाव हो, समझू एकस मान
सत्य, अहिंसा हो रग रग में, चाहे हो बलिदान ॥ गण ॥
जाप जपूं निशदिन एक तेरा करू सदा गुणगान
दर्श करू हर समय तुम्हारा मन मन्दिर दरम्यान ॥ गण ॥
धर्म रूपी अमृत बरसादो मिटे सभी अज्ञान
"जीत" जीतलूं अष्ट कर्म को दो ए शक्ति महान ॥ गण ॥

गुरुवर चन्दन बावना, शीतल जाको अंग।
लहर उतार भुजंग की, देवे ज्ञान को रंग॥

[तर्ज:—जब तुम ही चले परदेश "रतन"]

तुम जैन धर्म प्रतिपाल, गणेशीलाल
पूज्यवर प्यारा, एक शरण लिया तिहारा॥ टेर॥
पूज्य जवाहिर के, उजियारे हो, भारत के वीर सितारे हो,
तेरे पाए दरश हुआ जीवन सफल हमारा॥ एक॥
"साहिब" के लाल कुल चंदा हो "इन्द्रा" देवी के नंदा हो,
तुम्हें पा के गणेश, चमका जैन सितारा॥ एक॥
जैन धर्म की ज्योत जगाई है जग जैन ज्वाला लहराई है,
दया धर्म का जग में खूब ही किया प्रसारा॥ एक॥
सच्चा सुमार्ग बतलाते पाखंडी देखकर शरमाते
खूब ही निकाली पोल पूज्यवर प्यारा॥ एक॥
मन मोहनी सूरत प्यारी है चरणों में "जीत" बलिहारी है
करो नैया पार है तेरा ही एक सहारा॥ एक॥

[तर्ज—प्रभाती छोड़ जग का ए सारा झमेला]

धन्य भाग्य उदय आज आया, पूज्य राज का दर्शन पाया॥टेर॥
पूज्य जवाहिर के उजियारे, प्रकटे जैन के वीर सितारे,
जिन शासन को खूब दिपाया॥ पूज्य॥
त्यागी, धीर, वीर, गुणधारी, समताधारी ने, ममता मारी,
छोड़ी जग की झूंठी मोह माया॥ पूज्य॥

पा पकरे तो पा पकर, पा पकरे गति होय।
जो तू पा पकरे नही नरक मिलेगो तोय ॥

वाणी मिठी ज्यूं अमृत बरसे, नर नारी सब हरषे,
वीर संदेश जग को सुनाया ॥ पूज्य ॥
ज्ञानी, ध्यानी, हो उच्च बखानी, निर्लोभी ने निर अभिमानी,
करने पर हित सर्वस्व लुटाया ॥ पूज्य ॥
सभा बीच सिंह ज्यूं गाजे, सुण सुण पाखंडी मन में लाजे,
कभी सन्मुख कोई न आया ॥ पूज्य ॥
इस युग में हो तुम ही सहारे, जिन शासन के ताज हमारे,
सत्य अहिंसा का बिगुल बजाया ॥ पूज्य ॥
"जीतमल" ली शरण तिहारी, तव चरणन में बलिहारी,
तेरी महिमा का पार न पाया ॥ पूज्य ॥

[तर्ज—घटा, घन घोर घोर "तानसेन"]

जगत उजियारा तारा, पूज्य प्राणों से प्यारा,
मेरे मन भाया ॥ भाया ॥ टेर ॥
वीर प्रभू का सुमिरण करियां, विघन सभी टल जाए,
तारण-तिरण सद गुरु शरण, नित चरणन शीश नवाए,
भवोदधि तार-तार नैया है मझधार, तेरी शरण आया ॥भाया॥
पूज्य जवाहिर लाल जी के, शिष्य आप मन भाए,
नाम आपका गणेशी लाल जी "इन्द्रा" सती के जाए,
चरण तेरे बार बार, जाऊं मैं बलिहार, तेरे दर्श प

एक वचन भी सत गुरु केरो, जो वेसे दिलमाय।
नीच गती माँ ते नहीं जावे, एम कथो जिनराय ॥

छोड़ा सुख संसार आपने, मोह माया को त्यागी,
तन मन से लगी लगन धर्म में, ज्योत ज्ञान की जागी,
ममता मुनि मार, २ पंच महाव्रत धार, जग यश पाया ॥भाया।
व्याख्यान की शैली उत्तम, सब ही के मन भाए,
इस कलयुग में तुम ही सच्चे, वीर. दूत बन आए,
खुशी हर द्वार द्वार, महिमा तेरी अपार, जीत गुण गाया ॥भाया॥

[तर्ज—महावीर भगवान समता के धारी "नाटक"]

श्री पूज्यराज ए अर्जी हमारी,
करो महर स्वामी, हो मर्जी तुम्हारी ॥टेर॥
पूज्य जवाहर की गादी को धारे, हो 'इंद्रा' की गोदी के प्यारे सितारे
तजा तुमने जग सुख, ममता को मारी, ॥करो॥
बताया अहिंसा का मार्ग जिन्होंने, उन्हीं के सुपथ को दिपाया तुम्हींने
दिया ज्ञान जग को सदा हितकारी ॥करो॥
है नैया भंवर में ए जैन धर्म की, जो देखो तो पाओगे बातें मर्म की
ए सम्प्रदाय वाद ने हालत बिगारी ॥करो॥
आ फूट ने अपना अड्डा जमाया, आपस में जिससे कि मतभेद छाया
हुई फिर्के बन्दियां फिर न्यारी न्यारी ॥करो॥
है विनय यही सबमें प्रेम करादो, जैन के शासन की ज्योति जगादो
ए होता दर्द 'जीत' देख के ख्वारी ॥करो॥

बलिहारी गुरु आपने, घड़ि घड़ि सौ सौ बार ।
मानुष ते देवत किया, करत न लागी वार ॥

-अजर, अमर, अजमेर नगरमें

[तर्ज—फिरता आया, हरी मन भाया, नारद कला तणां भंडार]

फिरता आया सब मन भाया, पूज्य वर ज्ञान तणां भंडार ॥टेर॥
वीर प्रभू का ध्यान धरूं नित, सत गुरु लागूं पाय,
पूज्य राज श्री गणेशी लाल जी, वदूं शीश नवाय ॥फिरता॥
माता "इन्द्रा" के उजियारे, पिता श्री साहिब चन्द,
शिष्य है पूज्य जवाहर का, ज्यांरों नाम लिया आनन्द ॥फिरता॥
आठ सम्पदा सहित पूज्यवर, छत्तीस गुण विद्यमान,
इस कलयुग के मांहीं रख रहे, जैन धर्म की शान ॥फिरता॥
शुद्ध क्रिया के पालन हारे, विरले ही मुनि आज,
तप, जप और संयम में रह कर, सारे आतम काज ॥फिरता॥
शान्त स्वभावी वीर हैं पूज्य, ज्ञानी गुण आगर,
महाव्रतधारी हो ब्रह्मचारी; महिमा को नहीं पार ॥फिरता॥
धन्य भाग्य अजमेर पधारया, घर घर हर्ष अपार,
"जीतमल" चरणां रो चाकर, वन्दन बारम्बार ॥फिरता॥

[तर्ज—होली के दिन होली आई रे]

आज दिवस सुखदाई रे जय बोलो पूज्य की ॥ टेर ॥
धन्य भाग्य पुज्य दरशण पाए, हुई आज मन चाई रे ॥ जय ॥
जना शिरोमणी पुज्यवर प्यारे, जाहिर है जग माई रे ॥ जय ॥

कबिरा ते नर अन्ध हैं, गुरु को कहते और।
हरि रूठे ठौर है, गुरु रूठे नहीं ठौर ॥

गणेशीलाल जी नाम आपका, जवाहिर की ज्योत जगाई रे ॥जय॥
'साहिब चन्द्र जी' के सुत प्यारे, इन्द्रा की कुंख सराई रे ॥जय॥
छोड़ जगत की ममत्व भावना, धर्म साधना भाई रे ॥ जय ॥
ज्ञान ध्यान लेकर गुरुवर से, खूब ही लगन लगाई रे ॥ जय ॥
जैन धर्म के प्रबल प्रचारी, अहिंसा के अनुयाई रे ॥ जय ॥
धर्म दिवाकर शान्ती के सागर, जग में महिमा छाई रे ॥ जग ॥
मन मोहनी तब सांवली सुरत, हृदय मांही समाई रे ॥ जय ॥
संसारी सुख वैभव छोड़ा, शीव रमणी मन भाई रे ॥ जय ॥
"जीतमल" चरणां रो चाकर, मुझे न भूलना सांई रे ॥ जय ॥

विहार के समय

[तर्ज—जब तुम्हीं चले परदेश, "रतन"]

जब तुम ही चले परदेश, लगा कर ठेस
पूज्यवर प्यारा तुम बिन अब कौन हमारा ॥टेर॥
जब याद तुम्हारी आयेगी, आखों में आंसू लाएगी
तब तुम्ही बताओ देगा कौन सहारा ॥ तुम ॥
कई वर्ष बाद में आए थे सब ही के दिल हरषाए थे
अब के ही हमारा चमका भाग्य सितारा ॥ तुम ॥
की जाने की तैयारी है दिल में ना चैन करारी है
है और कौन जब तुम्हीं ने किया किनारा ॥ तुम ॥
यद्यपि ए आज विदाई है फिर भी एक आस लगाई है
पुज्य देना दर्शन शिघ्र ही हमें तुम्हारा ॥ तुम ॥
अरजी पर मरजी कर दीजो हुई भूल चूक माफी कीजो.
लिया दास "जीत" ने तेरा ही एक सहारा ॥ तुम ॥

सन्तन की सेवा किए, प्रभू रिझत हैं आप।
जाके बाल खिलाइए, ताके रिझत बाप॥

पुज्य श्री की आज्ञानुवर्ती जगत शिरोमणी जग वल्लभ महासतिया जी श्री आनन्द कंवर जी महाराज की सम्प्रदाय की शुभ पाटावलि

[तर्ज नलराय सोभागी, रानी दमयन्ती सर्व शिरोमणी]

धन्य धर्म दिपायो सतियां पद पायो सर्व शिरोमणी ॥ टेर ॥
वीर प्रभू का ध्यान धरू नित सतगुरू लागूं पाय
प्रथम सती रंगूजी आपने वंदू शिश नवाय
जैन जगत के मांही जाहीर ज्यांरी सम्प्रदाय ॥ धन्य ॥
रतन कंवर जी रतन ही प्रकटे किया धर्म उपकार
ग्राम, नगर, पूर मांही विचरता, किनो खूब प्रचार
कर्म शत्रु दल दूर करिने, कियो आतम उद्धार ॥ धन्य ॥
तीजे पाटवी राज कंवर जी धर्म का राज्य चलाया
प्राणी मात्र से प्रेम भाव हो, सत्य का पाठ पढ़ाया
सिरे कंवर जी को दे गादी खुद शीव महल सिधाया ॥ धन्य ॥
पंचम पाट पे सती विराजे. आनन्द कंवर जी आज
जग वल्लभ जसधारी ज्याने जाणे सकल समाज
किया मांही चले हमेशा सारे आतम काज ॥ धन्य ॥
संवत दो हजार तीन में सतीजी हुक्म सुनाया
ठाणां आठ से चतरा जी को अजय शहर भिजवाया
नगीना जी के व्याख्यान सुण "जीतमल" हरषाया। धन्य ॥

गांठी दाम न बांधइ नहिं नारी सों नेह।
कह कबीर ता साध के हम चरनन की खेह ॥

भक्ति और माया

[तर्ज लावड़ी लंगड़ी]

भक्ति और माया की तुलना ज्ञानी जन कुछ करो विचार
भक्ति पार करे भव सिन्धु माया डुबो देवे मझधार ॥ टेर ॥
एक समय शिव जी और गोरां, बैठे दोनों करे विचार,
शिवजी बोले जग के मांही भक्ति रस छाया है अपार,
गोरां कहे हे नाथ गलत ये, भक्ति से न करे कोई प्यार,
मोह-माया में जाके देखो फंसा हुआ है सब संसार
(शेर) छोड़े न अपनी हठ कोई आखिर किया विचार जी।
लेवें परिक्षा जाके मृत्यु लोक के मंझार जी ॥
गोरां को समझाके शिवजी चल दिए उस बार जी।
आए नगर एक बीच योगी रूप लिनो धार जी ॥
चोपाई— घर घर आ शीव अलख जगाया
नगर सेठ का घर फिर आया
योगी का तप तेज सवाया
देख सेठ अति आनन्द पाया ॥

(महाराज की चलत)

फिर किया खूब सत्कार सेठ साधु का
महाराज जाणे को कियो तकाजो जी
तब कहे सेठ कर जोड़ चन्द दिन यहीं विराजो जी

साधू भूखा भाव का धन का भूखा नाहि ।
धन का भूखा जो फिरै सो तो साधू नाहि ।।

पर योगी कहे हम वास जंगल में करते
महाराज छोड़ी मोह माया सारी जी
वहां रहे भजन में लेन स्वतन्त्रता हमको प्यारी जी
फिर कहें सेठ कर जोड़ सुणो मम अर्जी
महाराज, बाग एक मैंने लगवायो जी
है नगर बाहर वो बाग, जहां मोती महल सवायो जी
कर कृपा दास पर नाथ वहीं जा ठहरो
महाराज बाग फिर देख्यो जाई जी
पर कहे वचन एक देवो, तो ठहरां यहां पर भाई जी
झेला— सुणो योगी मैं हुक्म आपका शिरही पालन करस्यूं
सुण प्यारे मेरी होगी इच्छा वहां तक यहीं ठहरस्यूं
सुणो योगी चाहे जितने दिन ठहरो मैं कुछ नहीं कहस्यूं
सुण प्यारे मैं किसी के कहने से खाली नहीं करस्यूं
दोहा— योगी लेकर वचन ए, ठहरे बाग के माय
तन मन से सेवा करे सेठ वहां नित आय
लावणी— इस तरह बहुत दिन विते वहां पर भाई
फिर योगिन बन कर गोरां वहां पर आई
एक रत्न जड़ित कटोरा हाथ के मांही
फिर उसी नगर के बीच सेठ घर आई
(बणजारा)
यह देख सेठ झट आया गोरां ने जल मंगवाया
झट सेठ जी जल ले आया उस कटोरे में बरगाया

एक घड़ी आधी घड़ी आधी में पुनि आध ।
तुलसी संगत साधु की हरे कोटि अपराध ॥

(चलत)

पीकर जल गोरां ने कटोरा दिया जमीं पे तुरत ही डार ॥भक्ति॥

सेठ कहे हे योगिन बताओ, कटोरे को क्यूं दीना डार
योगिन कहे हम काम में लेते, एक वस्तु को एक ही वार
जब भी जरूरत होवे हमको, योग शक्ति से करें तैयार
खाने पीने के लिए ऐसे ही, आते कटोरे बारम्बार
शेर—देख कर ए लीला सोचे, सेठ जी मन मांय जी
योगिन जो गर ठहरे यहां, निश दिन कटोरे आय जी
सेठ कहे कर जोड़ के, योगिन सुनो चित लाय जी
है धन्य मेरे भाग्य जो, दरशण दिए तुम आय जी
चोपाई—मानो अरज एक योगिन मारी
महर नजर करो दास पे भारी
ठहरो कुछ दिन इच्छा हो थारी
दरशण पाय नगर नर नारी
महाराज—तब कहे योगिन तुम सुनो भक्त चित लाई
महाराज, नगर में हम नहीं ठहरे जी
हम जाकर वन के मांय करें एकान्त में डेरे जी
आखिर योगिन को सेठ बाग में लाया
महाराज, दूर से महल दिखाया जी
किया योगिन ने मंजूर सेठ कहे ठहरो मैं आया जी
गया सेठ साधु के पास खाली करवाने
महाराज, अनादर खूब ही कीनो जी

दिया योगी को निकाल, योगिन ने बुलवा लीनो जी
वहां जलती धूनी देख योगिन यों बोली
महाराज, जलाई ए क्यों तैंने जी
कहे संत एक योगी को निकाला यहां से मैंने जी
मेल—सुण प्यारे, उस योगी को तुम वापिस जल्दि लाओ
सुणे योगिन, जाने दो उसको, क्यों वापिस बुलवाओ
सुण प्यारे, दे दूंगी तुझको आप जो गर नहीं लाओ
सुणो योगिन, अच्छा मैं जाऊं तुम यहां डेरे लगाओ
दोहा—योगी मिला न योगिन मिली, देखी जगह तमाम
दुविधा में ऐसा फंसा, माया मिली न राम
लावणी—फिर शीवजी और गोरां के लाश में आए
गोरा कहे देखो माया में सब भरमाए
एक रत्न जड़ित कटोरे पर ललचाए
गए भक्ति साधु की भूल माया मन भाए
बणजारा—माया नहीं संग में जावे, सब यहां की यहां रह जावे
भक्ति तो बड़ी कहावे, भगवत भी वश हो जावे
च०तन, मन से करो भक्ति पूज्य की 'जीत' होय निश्चय उद्धार ॥भक्ति

सब धरती कागद करूं, लेखनी सब बनराय
सात समुंद की मसि करूं, पुज्य गुण लिखा न जाय

—* समाप्त *—

अवश्य पढ़िये

जीत जाग्रति

श्री जैन जग वल्लभ, सर्व शिरोमणी श्री मज्जैनाचार्य पूज्य श्री १००८ श्री श्री हस्तीमल जी म० के गुण गायनों की आज कल की सिनेमा व मारवाड़ी तर्जों पर अपूर्व रचना की गई है। मूल्य ≡)

खुश खबर

प्रिय बन्धुओं।

हमारे पास बाहर के स्वधर्मी बन्धुओं के कई कार्ड व पत्र आए हुए हैं जिसमें उन्होंने जीत ज्योति के सैट की मांग की है, परन्तु स्टाक में पुस्तकों की कमी के कारण हम न भेज सके। अब चूंकि कुछ पुस्तकों का संग्रह कर लिया गया है, अतएव अब जीत ज्योति के भाग पांच व जीत संगीत माला के पांच पुष्प, इन दसों पुस्तकों के कुछ सैट तैयार हो जायंगे। अतएव विदित हो कि जिन बन्धुओं को इसके सैट की आवश्यकता होवे २) दो रुपया सजिल्द के, मनिआर्डर अथवा रेवन्यु स्टाम्प (खाते के टिकट) पहले भेजने की कृपा करें। ताकि पुस्तक बुक पोस्ट द्वारा भेज दी जायगी तथा व्यर्थ की लिखा पढ़ी एवं समय की बरबादी से बच सकेंगे।

कृपया शीघ्रता करें वरना फिर निराश होना पड़ेगा।

पुस्तक मिलने का पता
सहसकरण जीतमल चोपड़ा
लाखन कोटड़ी अजमेर